सी एम एफ आर आइ
CMFRI

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

ºÉ. 142   जुलाई - सितंबर 2014   ISSN 0972-2386

Eòb±ÉÉ¨ÉÒxÉ

ºÉÒ एम एफ आर आइ ºÉ¨ÉÉचार

http://www.cmfri.org.in

bÉ. B. MÉÉ{ÉÉ±ÉEò¹hÉxÉ, ÊxÉnä¶ÉEò, ºÉÒ B¨É B¡ò +ÉÆ® +É< ¦ÉÉ®iÉ Eò
¨ÉÉ½É¨ÉÉÊ½¨É ®É¹]Å{ÉÊiÉ ºÉ <Ênù®É MÉÉvÉÒ ®ÉVÉ¦ÉÉ¹ÉÉ {É®ºEòÉ® ºÉÒEòÉ® Eò®iÉ ½B

Eò{ÉªÉÉ {É¹`ö 20 nJÉ

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Agresearch with a human touch

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Eòxpiò°ªÉ ºÉ¨ÉpiÒ ¨ÉÉÎiºªÉEòÒ +xÉÖºÉvÉÉxÉ ºÉƺlÉÉxÉ
पोस्ट बॉक्स सं. 1603, एरणाकुलम नार्थ पी.ओ., कोच्चि - 682 018, केरल, भारत

कडलमीन

É´ÉªÉªÉ ºÉÚSÉÒ

ºÉÆÉÊxÉ{ÉÉÊkÉEÒ 58 ºÉ¨ÉÖpÒ ¨ÉUÉ±ÉÒ VÉÉÊiÉªÉÉå EÒ ÉÊ±ÉB xÉªÉÉÒ ÉÊ´ÉEÒ¨ÉÒ =ÉEÒ®Ò ÉÊ´ÉEÉÉºÉ	3
¦ÉÉ®iÉ ºÉ®EÉ® ÉÊSÉiÉÉ ºÉ VÉ±ÉÒªÉ ºÉ¨ÉÖpÒ ¨ÉUÉ±ÉÒ EÒ ÉÊ´É¦ÉÉxÉ - BEÒ EÒiÉ¨ÉÉ +ÉMÉÉ	5
ÉÊSÉiÉ ¨ÉUÉ±ÉÒ {ÉÉ±ÉxÉ: ºÉ¨ÉÖpÒ ºÉ ÉÊSÉiÉÉ EÒÒ EÒ¹ÉÉÒ	6
xÉªÉÉ +ÉxÉÖºÉÆvÉÉxÉ {ÉÉäiÉ +ÉÉ®.´ÉÒ.EÒb±É¨ÉÉxÉ I. EÉ EÒ¨ÉÒÉÊ´ÉiÉ	7
ºÉÒ +ÉÉ<ÇÉ]ÒÉ <Ç ºÉ EÒÒ +ÉxÉÖºÉÆvÉÒ II ¨É =ÉEÖEÉ ÉÊ´É¹ÉªÉ EÒÒ {ÉÉÊ®SÉSÉÉÇ ºÉÆMÉÉÒ 14 xÉ´ÉÆ¤É®, 2014 ºÉ ¶ÉÉÖ±ÉÒ	8
+ÉxÉÖºÉÆvÉÉxÉ ¨ÉÖJªÉ +ÉÆ¶É	10
EÉªÉÇ¶ÉÉ±ÉÉBÆ / |ÉÊ¶ÉIÉhÉ EÉªÉÇGò¨É	14
PÉ]xÉÉBÆ	18
ºÉÆ´ÉÉnnÉ EÉªÉÇGò¨É	20
+ÉMÉiÉÒ	21
BÉ nÉ EÒxpÉ (BÉhÉÉÇEÖ±É¨É) EÒ ºÉ¨ÉÉSÉÉ®	23
EÉªÉÇGò¨É ¨É ºÉ½¦ÉÉÉÊMÉiÉÉ	24
EÉÉÊ¨ÉÇEÒ ºÉ¨ÉÉSÉÉ®	27

|EÉÉ¶ÉEÒ

डॉ. ए. MÉÉ{ÉÉ±ÉEÞò¹hÉxÉ
ÉÊxÉnä¶ÉEÒ
EÒxpÒªÉ ºÉ¨ÉÖpÒ ¨ÉÉÊiºªÉEÒ +ÉxÉÖºÉÆvÉÉxÉ ºÉÆºlÉÉxÉ
पोस्ट बोक्स सं.1603, एरणाकुलम नोर्त पी.ओ
कोचीन - 682 018, केरल, भारत
nÚ®¦ÉÉ¹É : 0484-2394867
फैक्स: 91-484-2394909
ई-मैल: director@cmfri.org.in
वेबसाइट: www.cmfri.org.in

ºÉ¨{ÉÉnEÒ
डॉ.वी. MÉÒiÉÉ

ºÉ¨{ÉÉnEÒªÉ ¨ÉÆb±É
डॉ. रेखा जे नायर
डॉ. +ÉÉ®. VÉªÉ¦ÉÉºEÒ®xÉ
डॉ. EÒÉVÉ±É SÉGò´ÉiÉÔ
श्री. डी. ÉÊ±ÉÆMÉÉ |ÉÉ¦ÉÖ
श्री¨ÉiÉÒ. वी. MÉÒiÉÉ
श्री. वी.EÒ. ºÉुरेश
श्री +Éरुण ºÉÖरेन्द्रxÉ
श्री. वी. +ÉÉर. +ÉÊ¨É±ÉÉ¹É
हिन्दी +xÉÖवाद
श्री¨ÉiÉी. ई. के. उ¨ÉÉ

ÊxÉnä¶ÉEÒ EÒ½iÉÉ ½

जैसा कि हम वर्ष 2014 की अंतिम तिमाही में प्रवेश करते हैं, यह, अब तक की हमारी उपलब्धियों का जायजा करना और बचे शेष कार्यों की पूर्ति करने की कार्यवाही भी EÒ®xÉ EÉ ºÉ¨ÉªÉ ½* ½¨É ÉÊxÉººÉÆnä½ EÒ½ ºÉEÒiÉ हैं कि इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार 2012-13 जीतना हमारी विशेष उपलब्धि है। नीति निर्माताओं के अनुरोध पर संस्थान के वैज्ञानिकों xÉ +`] É¨ÉxÉ ´ÉÉÉhÉÎVªÉEÒ |É¨ÉÖJÉ ºÉ¨ÉÖpÒ ¨ÉUÉ±ÉÒ VÉÉÉÊiÉªÉÉå EÒ xªÉÚxÉiÉ¨É ÉÊxÉªÉÉ¨ÉEÒ +ÉEÉ® (B¨É B±É एस) तय करने का कार्य पूरा किया है। यह केरल सरकार द्वारा स्वीकार किया गया है और समुद्री प्रग्रहण मात्स्यिकी सेक्टर में टिकाऊपन सुनिश्चित करने में उपयोग किया जाएगा। पशुपालन एवं डेरी विभाग, कृषि मंत्रालय, भारत सरकार के अनुरोध पर तकनीकी समिति द्वारा तैयार की गयी मत्स्यन रोध की अवधि के पुनरीक्षण की रिपोर्ट प्रस्तुत की गयी। समुद्री यात्रा और महासागरीय +xÉÖºÉÆvÉÉxÉ EÒ®xÉ EÒ ÉÊ±ÉB +ÉSUÒ iÉ®½ ºÉ ºÉÖºÉÎVVÉiÉ xÉB {ÉÉäiÉ +É®.´ÉÒ.EÒb±É¨ÉÉxÉ I EÒ EÒ¨ÉÒ¶ÉÉÊxÉÆMÉ ºÉ संस्थान के समुद्री अनुसंधान कार्य में और भी प्रगति होगी और इस से मात्स्यिकी प्रबंधन के लिए आवश्यक कई मूल्यवान सूचनाएं उपलब्ध करायी जा सकेगी।

समुद्री संवर्धन के क्षेत्र में यह उल्लेखनीय है कि संस्थान द्वारा विकसित पिंजरा मछली पालन प्रौद्योगिकी मछुआरों और उद्यमियों द्वारा बडे उत्साह से स्वीकार की गयी और इस के बारे में भारत के कई भागों से विजय की कहानियाँ प्राप्त हो रही हैं। यह प्रौद्योगिकी समाज के कई वर्गों को सशक्त करने की उपाधि बन गयी है। गुजरात का ÉÊºÉnÒ आदिवासी समूह, जो लगातार तीसरे वर्ष ¦ÉÒ ÉÊ{ÉÆVÉ® ¨É ¨ÉUÉ±ÉÒ {ÉÉ±ÉxÉ EÒ®xÉ EÒÒ iÉèªÉÉ®Ò ¨É ½, <ºÉ EÉ +ÉSUÉ ÉÊ³]ÉÆiÉ ½*

हाल ही में सी आइ टी ई एस, जो अंतर्राष्ट्रीय विपणन नियमित करने का भौगोलिक उपकरण ½, xÉ ={ÉÉÎºlÉÉÊ¨ÉÉÊEÒxÉÉ EÒÒ UÚ: VÉÉÉÊiÉªÉÉÆ EÉ +xÉÖºÉÚSÉÒ II ¨É VÉÉäb ÉÊnªÉÉ ½ +ÉÉè® ªÉ½ É¨ÉÉÉÊ¦ÉxÉ ºÉ]EÒÉ½ÉÊ±b®É के बीच बडी चिंता और चर्चा का विषय बन गया है और इस के बारे में चर्चाएं की जा रही हैं। इस संदर्भ में, संग्रहण के टिकाऊ स्तर पर सूचना प्रदान करने का नामित प्राधिकारी होते हुए सी एम एफ आर आइ को भविष्य में बडा उत्तरदायित्व निभाना है।

वर्ष का अंत होते ही सब को एक अच्छी तिमाही की और लक्ष्य प्राप्त करने के लिए अपने प्रयासों में सफल होने की शुभकामनाएं अदा करता हूँ

अ. गोपाल

डॉ. ए. MÉÉ{ÉÉ±ÉEÞò¹hÉxÉ
ÉÊxÉदेशEÒ

ºÉÒ ए¨É एफ +ÉÉर +ÉÉइ EÒ बारे ¨É

¦ÉÉ®iÉÒªÉ EÞòÉÊ¹É +xÉÖºÉÆvÉÉxÉ {ÉÉÊ®¹Én EÒ +vÉÒxÉ ºlÉÉÉÊ{ÉiÉ EÒxpÒªÉ ºÉ¨ÉÖpÒ ¨ÉÉÊiºªÉEÒ +xÉÖºÉÆvÉÉxÉ ºÉÆºlÉÉxÉ, EÒSSÉÒxÉ ºÉ¨ÉÖpÒ ¨ÉÉÊiºªÉEÒ +ÉÉè® ºÉ¨ÉÖp EÞòÉÊ¹É ¨É +xÉÖºÉÆvÉÉxÉ +ÉÉè® |ÉÉÊ¶ÉIÉhÉ EÒ ÉÊ±ÉB समर्पित सर्वप्रमुख अनुसंधान ºÉÆºlÉÉxÉ ½*

ºÉÒ B¨É BÉ¡Ò +ÉÉ® +ÉÉ< EÒ iÉÒxÉ IÉäjÉÒªÉ EÒÉäp ªÉÉxÉÉ ÉÊEÒ ¨Ébä{É¨É EÒ{É, É¨É¶ÉÉÉÊJÉ{É]]hÉ¨É +ÉÉè® ´É®É´É±É iÉlÉÉ ºÉÉäiÉ +xÉÖसंधान केंद्र भारत की तट रेखा में कार्यरत हैं जो देश के समुद्रवर्ती ®ÉVªÉÉå EÒ ºÉ¨ÉÖpÒ ¨ÉÉÊiºªÉEÒ xÉÉÒiÉ EÉ +xÉÖ{ÉÉ±ÉxÉ EÒ®xÉ ¨É ºÉ½ÉªÉiÉÉ |ÉnÉxÉ EÒ®iÉ ½*

´ÉÉÊhÉÎVªÉEò ¨É½i´É Eäò 58 ¨ÉUôÉÒ VÉÉÊiÉªÉÉå Eäò ÊãÉB xªÉÚxÉiÉ¨É EòÉxÉÚxÉÒ +ÉEòÉ® EòÒ ÊºÉ¡òÉÊ®ú¶É

ÊEòºÉÒ ¨ÉUôÉÒ EòÉ +ÉEòÉ® EòxÉÉä ¶ÉÊGò Eäò {ÉÊ®úhÉÉ¨É º´É°ü{É ºÉ¨ÉÖp Eäò dीर्घकालीन टिकाऊपन में गंभीर रूप से क्षति होने के साथ साथ आर्थिक नष्ट भी होता ½è* xªÉÚxÉiÉ¨É EòÉxÉÚxÉÒ +ÉEòÉ® (B¨É B±É BºÉ) ÊxÉªÉ¨É ¨ÉUôÉÒ EòÉ ºÉ¨ÉÖÊSÉiÉ Eò®úxÉä, +ÉÊ¦ÉªÉÉäVÉxÉ EòÉ ºÉ]õÒEò ÊxÉªÉ¨É ®úJÉxÉä +Éè® {ÉEòbä÷ VÉÉxÉä ´ÉÉãÉÒ ¨ÉUôÉÊãÉªÉÉå EòÉ +ÉEòÉ® ÊxÉvÉÉÇÊ®úiÉ ®úJÉxÉä Eäò ÊãÉB ºÉ´ÉÉækÉ¨É ÊxÉªÉÆjÉhÉ ªÉÉ ¨ÉÉiºªÉÊ¶ÉEòÉ®ú प्रबंधन उपाय है। समुद्री मात्स्यिकी सेक्टर में आर्थिक क्षमता और टिकाऊपन बढ़ाए जाने के =q¶ªÉ ºÉ ½è±É ½è ¨É ´ÉÉÊhÉÎVªÉEò ¨ÉÉÊ¡òªÉÉå, Eò®Æú ºÉ®ÉEòÉ® (bä +É B¡ò-VÉä +É Eò) xÉ =ºÉEòÉ प्रकार की नीति के रूपायन के लिए मार्गदर्शन nxÉ Eò ÊãÉB ºÉ¨ÉÊlÉiÉ ºÉ +xÉ®úÉävÉ ÊEòªÉÉ* ¨ÉÉ¨É¦ÉÉ समुद्री मात्स्यिकी संपदाओं के परिपक्वन और जीवविज्ञान पर इकट्ठा किए गए आंकडों का अनुवीक्षण करने के बाद वैज्ञानिकों ने वाणिज्यिक प्रमुख 58 मछली जातियों के ÊãÉB xªÉÚxÉiÉ¨É EòÉxÉÚxÉÒ +ÉEòÉ® ºÉÖZÉÉªÉÉ, ÊVÉxÉ में तारली, भारतीय बांगडा सहित 40 पख ¨ÉUôÊãÉªÉÉå,]õÖxÉÉ Eäò +É`ö VÉÉÊiÉªÉÉå, ¡òÒiÉÉ¨ÉÒxÉ, सुरमई, सूत्रपख ब्रीम और पाम्फ्रेट, केकड़ा, महाचिंगट और चिंगट सहित 13 क्रस्टेशियन और सीपी, अष्टभुज (ऑक्टोपस), स्क्विड और कटिलफिश सहित 5 मोलस्क जातियाँ ºÉÎ¨¨ÉÊ±ÉiÉ ½é* +ÉxÉÉªÉ +Éè® ºÉ{ÉÉ¶ÉÉ VÉÉÉä ¨É बडी संख्या में किशोर मछलियों को पकड़कर मछली खाद्य बनाने के प्लान्टों में ले जाने और <ºÉ ´ÉÉÊhÉÎVªÉEò ¨ÉÉiºªÉÊEòÒ ºÉ¨{ÉnÉ Eäò टिकाऊपन पर होने वाले हानिकारक प्रभाव Eòä {É¼±ÉÖ ¨É ªÉ ºÉZÉÉ´É ÊnB MÉB* bä +É एफ-जी ओ के द्वारा मराइन एनफोर्समेन्ट विंग के माध्यम से मार्गदर्शनों का कार्यान्वयन शुरू ÊEòªÉÉ VÉÉ SÉÖEòÉ ½è* +xªÉ ®úÉVªÉÉå Eò ÊãÉB ¦ÉÒ <ºÉ iÉ®½Eò EòÉ {ÉÉ±ÉxÉ ÊEòªÉÉ VÉÉ ºÉEòiÉÉ ½è*

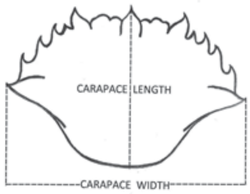

केकड़े का आकारमितीय मापन

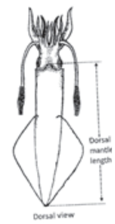

स्क्विड का आकारमितीय मापन

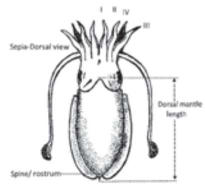

Eò]±É ¡ò¶É EòÉ +ÉEòÉ®¨ÉÊiÉÒªÉ ¨ÉÉ{ÉxÉ

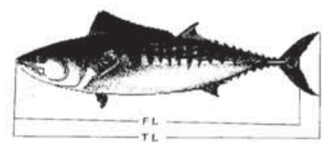

]ÖxÉÉ EòÉ +ÉEòÉ®¨ÉÊiÉÒªÉ ¨ÉÉ{ÉxÉ

¨ÉUôÉÒ VÉÉÊiÉ EòÉ xÉÉ¨É	ºÉÉ¨ÉÉxªÉ xÉÉ¨É	ºÉÖZÉÉªÉÉ MÉªÉÉ ¡ªÉ ¡±É ¡ºÉ(ºÉ.¨ÉÒ.) (ãÉÆ.)
´É±ÉÉ{É¨ÉÒªÉ ¨ÉUôÉÒ ºÉ]ÉÒ		
ºÉÉ®úÊbxÉ±±ÉÉ ±ÉÉäÆMÉÒºÉ{ºÉ	तारली	10 टी एल
®úºjÉ±ÉÒMÉ® EòÉxÉÉMÉÖ]É	भारतीय बांगडा	14 टी एल
ªÉÉlÉÖzÉºÉ BÊ¡òxÉºÉ	लिटिल ट्यूना	31 एफ एल
+ÉÎCºÉºÉ lÉÉºÉÉb	फ्रिगेट ट्यूना	25 एफ एल
Eò]ºÉ+ÉxÉºÉ {É±ÉÉÊ¨ÉºÉ	स्किपजैक ट्यूना	35 एफ एल
lÉzÉºÉ +±¤ÉÉEäò®ºÉ	येलोफिन ट्यूना	50 एफ एल
+ÉÎCºÉºÉ ®ÉSÉÉ<	बुल्लेट ट्यूना	18 एफ एल
ºÉÉ®bÉ +ÉÉä®Bx]ÉÊ±ÉºÉ	बोनिटो	35 एफ एल
lÉzÉºÉ]ÉåMÉÉä±É	लोंगटेल ट्यूना	44 एफ एल
ÊVÉ¨xÉÉäºÉÉ®bÉ ªÉÚÊxÉEòÉä±É®	डोगटूथ ट्यूना	50 एफ एल
ºEòÉä¨¤ÉäÉ®ºÉ Eò¨ÉºÉxÉ	किंगसीर	50 एफ एल
ºEòÉä¨¤ÉäÉ®ºÉ MÉ]Ò]ºÉ	स्पोटड सीर	37 एफ एल
®ÉSÉºÉx]ÉxÉ EòxÉÉb¨É	किंगफिश	61 एफ एल
EòÉä®¡òÉxÉ É½{ÉªÉ®ºÉ	डोलफिन फिश	38 एफ एल
]É<Cªé®ºÉ ±É{]¬Ö®ºÉ	फीतामीन	46 टी एल
¨ÉäMÉÉ±ÉÉ{ºÉ EòbÒ<±ÉÉ	होर्स माकरल	19 टी एल
ºÉ±ÉÉ® Gò¨ÉÉxÉÉ}±ÉÉ±É¨ÉºÉ	बिग आइ स्कड	16 टी एल
bEòÉ{]¬Ö®ºÉ ®ºÉ±±ÉÒ	इंडियन स्कड	11 टी एल

iÉ±É¨ÉVVÉÒ ¨ÉUô±ÉÒ ºÉ¨ÉÚ½

ºÉÉ<xÉÉä±ÉÉäºÉºÉ ¨ÉÉÊGòºÉ]É¨ÉºÉ	मलबार सोल	9 टी एल
xÉÉ¨É{É]äÒ®ºÉ VÉÉ{ÉÉäÊxÉEòºÉ	सूत्रपख ब्रीम (पीला)	12 टी एल
xÉÉ¨É{É]äÒ®ºÉ ®ÉxbÉ±±ÉÒ	सूत्रपख ब्रीम (लाल)	10 टी एल
±ÉÉC]äÉ®ªÉºÉ ±ÉÉC]äÉ®ªÉºÉ	श्वेत मछली	10 टी एल
ºÉÉ®bÉ iÉÎ¨¤É±É	ग्रेटर तुम्बिल	17 टी एल
ºÉÉ®bÉ +bÉºÉ¨ÉÉ¨ÉºÉ	तुम्बिल	10 टी एल
{É¨{ÉºÉ +VÉÎx]Ö+ºÉ	सिल्वर पाम्फ्रेट	13 टी एल
{ÉÉ®ÉºÉ]¨ÉÉ]Ö+ºÉ xÉÉ<MÉ®	काला पाम्फ्रेट	17 टी एल
Ê|ªÉÉEòÉäxlÉºÉ ½¨É®®	बुल्स आइ	14 टी एल
+É]ÉÉ±ÉlÉºÉ °ü¤É®	टाइगर टूथ्ड क्रॉकर	17 टी एल
+É]ÉÉ±ÉlÉºÉ Cªé¨É®Éä	लेसर टाइगर टूथ्ड क्रॉकर	16 टी एल
VÉÉÉxÉªÉºÉ ÊºÉxÉÉ	सिन क्रॉकर	11 टी एल
VÉÉÉxÉªÉºÉ EòÉäºÉÖ]É	कारुत क्रॉकर	15 टी एल
VÉÉÉxÉªÉºÉ ¤É±ÉÉxÉMÉ®ä	बेलान्गेर्स क्रॉकर	14 टी एल
VÉÉÉxÉªÉºÉ M±ÉÉEòÉä¬	पेल स्पोटफिन क्रॉकर	15 टी एल
ÊxÉÉ¤ÉªÉÉ ¨ÉÉEÒ±É]É	ब्लोच्ड क्रॉकर	14 टी एल

{ÉzÉÉÉ½ªÉÉ +ÉxÉªÉÉ	बिग आइ क्रॉकर	13 टी एल
BÉ{ÉÉxÉ¡ò±É{É bªÉÉEòÉ¡É{É	स्पाइनी चीक ग्रूपर	18 टी एल
É½¨ÉÉ¡É®É <Î¨ÉÉEò]É	स्केली विपरे	14 डी डब्लियू
É½¨ÉÉ¡É®É VÉÎxEòx{ÉEò	पोइन्टड नोस स्टिंगरे	61 डी डब्लियू
ÉVÉ¨ÉxÉ®É {ÉÉÉ{É±É®É	लोंग टेल्ड बटरफ्लाइ रे	29 डी डब्लियू
®É<WÉÉÉ|ÉªÉÉxÉÉbÉxÉ +ÉÉ±ÉMÉÉÉ±ÉC{É	ग्रे शार्प नोस शार्क	53 टी एल

क्रोªटेÉर्शयÉxÉ ªटÉEò

SÉÉÉ®É¤ÉÉb{É ¡òÉ®ªÉÉ]{É	क्रूसिफिक्स केकड़ा	5 सी डब्लियू
{ÉÉ]xÉ{É {ÉÉÎxM¨ÉxÉÉ±ÉxÉ]{É	स्पोटड केकड़ा	7 सी डब्लियू
{ÉÉ]xÉ{É {É±ÉÉÉVÉEò{É	नीला केकड़ा	9 सी डब्लियू
¨É]É{ÉÉxÉ+{É bÉ¤É{ÉÉxÉEò	फ्लवरटेल केकड़ा	6 टी एल
{ÉÉ®É{ÉÉxÉ+ÉÎ{É{É ª]É<É±É¡ò®É	किड्डी झींगा	7 टी एल
¨É]É{ÉÉxÉ+{É ¨ÉÉxÉÉÉ{É®{É	स्पेकिल्ड झींगा	11 टी एल
¨É]É{ÉÉxÉ+{É BÉ¡òÉxÉ{É	जिंगा झींगा	9 टी एल

{±ÉÉ{ÉªÉÉÉxÉEòÉ C¨ÉÉÉ{ÉEòÉÎxb{É	ओरिएन्टल xÉÉ®¨ÉÉ±É ÉSÉMÉÉ]	8 टी एल
+É®Îº]+{É +±ÉEòÉEò	अरेबियन रेड चिंगट	13 टी एल
{ÉÉxÉÉ±É®{É ½É¨ÉÉ®{É	स्कालोप्ड शूली महाचिंगट	200 ग्रा.
{ÉÉxÉÉ±É®{É {ÉÉ±ÉÉ¡òÉMÉ{É	पंक शूली महाचिंगट	300 ग्रा.
{ÉÉxÉÉ±É®{É +ÉxÉÉ]{É	ओर्नेट शूली महाचिंगट	500 ग्रा.
IÉÒxÉ{É ªÉÉxÉ¨ÉÉCª±ÉÉ]{É (]ò.+ÉÉ®Bx]ÉÉ±É{É)	रेती महाचिंगट	150 ग्रा.

¨ÉÉ±ÉºEòxÉ ªटÉEò

यूरोट्यूथिस (¡ò]É±ÉÉÉ±ÉMÉÉ) b+É{É±ÉÉ	भारतीय स्क्विड	8 डी एम एल
सेपिया फारोनिस	फाराह कटिलफिश	11 डी एम एल
आम्फीओक्टोपस	ओसेल्लेट नेग्लेक्टस ओक्टोपस	5 डी एम एल
पाफिया मलबारिका	छोटी गला सीपी	2 ए पी एम
विल्लोरिटा {ÉÉ<É|ÉxÉÉ<b{É	काली सीपी	2 ए पी एम

टी एल - कुल लंबाई (टोटल लेंत्त), एफ एल - फोर्क लंबाई, एस एल - मानक लंबाई, सी डब्लियू - कारापेस चौडाई, डी एम एल - डोर्सल मान्टिल लंबाई, ए पी एम - अग्र-पश्च मार्जिन, ग्रा.- ग्राम, सी एम- सेन्टी मीटर

+iÉर्राष्ट्रीय iÉटीय ºवच्छiÉÉ ÉदवºÉ - 2014 EòÉ ¨ÉxÉÉxÉÉ

हर वर्ष सितंबर महीने के तीसरे शनिवार को पूरे विश्व के स्वयंसेवकों द्वारा विश्व के बडे बडे तटीय क्षेत्रों में स्वच्छता कार्य किया जाता है, इस दिवस को अंतर्राष्ट्रीय स्वच्छता दिवस Eò½É VÉÉiÉÉ ½* ºÉò B¨É Bó +É® +É< ¨Éb{É¨É क्षेत्रीय केन्द्र द्वारा दिनांक 20 सितंबर 2014 EòÉ ¨É®EòªÉÉ®{ÉÉ]|]hÉ¨É Eò {ÉÉ±ÉxÉ ¨É ºÉSUiÉÉ कार्य करते हुए यह दिवस मनाया गया। +É¦ÉªÉÉxÉ ¨É ¦ÉÉMÉ É±ÉªÉÉ +É® ¨É®EòªÉÉ®{ÉÉ]]hÉ¨É {ÉÉ±ÉxÉ Eò BEò ÉEò±ÉÉ¨ÉÉ]® IÉjÉ {É {±ÉÉº]Eò की थैलियाँ, प्लास्टिक के कचरे, नाइलोन रस्सियाँ आदि को मिलाकर करीब आधा टन कचरा सामग्रियाँ निकाली गयीं। इस अवसर पर डॉ.जी.गोपकुमार, प्रभारी वैज्ञानिक ने एक पोस्टर और ब्रोशर निकाले और सम्मिलित लोगों EòÉ <{É Én´É{É Eò |ÉVÉÉxÉiÉÉ {É® |ÉEòÉ¶É bÉ±ÉÉ* जैवविविधता और मछली उत्पादन पर बुरी iÉ®½ |É¦ÉÉ´É bÉ±ÉxÉÉ ´ÉÉ±É ¨ÉÉxÉ´ÉÉÒªÉ |Én¹ÉhÉ EòÉ ºÉÉ¡ò EòÉ®xÉ EòÉ +´ÉºÉ® É¨É±ÉiÉÉ ½* ¨ÉzÉÉ® Eò खाड़ी में समृद्ध प्रवाल भित्ति विविधता होने Eò ´ÉVÉ½ {É <{É +É¦ÉªÉÉxÉ EòÉ É´É¶ÉÉ ¨É½i´É होता है। श्री आर.शरवणन, वैज्ञानिक द्वारा इस +É¦ÉªÉÉxÉ EòÉ ºÉ¨Éx´ÉªÉ ÉEòªÉÉ MÉªÉÉ*

+iÉ®É¹]ÅòÒªÉ iÉ]òÒªÉ ºÉSUiÉÉ Én´É{É {É® {ÉÉäº]® EòÉ É´É¨ÉÉäSÉxÉ

iÉ]òÒªÉ ºÉSUiÉÉ MÉÉiÉÉ´ÉÉÉv¨ÉªÉ ¨É ±ÉMÉ ½B º´ÉªÉ{É´ÉEòÉ EòÉ nªÉ

EòxpÒªÉ ÉÉtÉ±ÉªÉ, ¨Éb{É¨É Eò +vªÉÉ{ÉEòÉ +É® छात्रों, सी एम एफ आर आइ कार्मिकों और ¨É®EòªÉÉ®{ÉÉ]|]hÉ¨É {ÉSÉÉªÉiÉ Eò ÉxÉ´ÉÉÉºÉªÉÉ xÉ <{É समुद्री मलबा और कूड़े, विशेषतः नॉन-डीग्रेडबिल कचरे पर्यावरण के लिए बुरा असर डालने वाले हैं। <{É Én´É{É É¨É-É Eò xÉÉMÉÉ®EòÉ EòÉ {É¨Ép iÉ]É EòÒ (VÉÒ.MÉÉä{ÉEÖò¨ÉÉ®, +É®.¶É®´ÉhÉxÉ, VÉÉxÉ{ÉxÉ ¤ÉÉ., BxÉ.®É¨É¨ÉÉÎiÉ, +É<.ºÉªÉnÂ ºÉÉ½nEò +É® EòÒ.¹ÉhÉ¨ÉÉxÉÉIÉxÉ EòÒ É®{ÉÉ]Â)

®É±ÉÉ ºÉÉMÉ®ú Ê{ÉÆVÉ®úÉå ºÉä VÉÒ´ÉiÉ BÊ¶ÉªÉxÉ ºÉ¨ÉÖpùÒ ¤ÉÉºÉ ¨ÉUôÊ±ÉªÉÉå EòÉ Ê´ÉÌ{ÉhÉxÉ - BEò Eònù¨É +ÉMÉä

पिंजरे से संग्रहित जीवित समुद्री बास मछली का दृश्य

iÉÊ¨É±É xÉÉb÷ Eò EòÉSÉÒ{É®ú¨É ÊVÉ±ÉÉ Eò कोवलम गाँव के कावलम प्रगतिशील ¨ÉUÖ+É®úÉ ºÉPÉ (B Eò {ÉÒ B¡ò) +É® ºÉÒ B¨É B¡ò आर आइ मद्रास अनुसंधान केन्द्र द्वारा कोवलम में समुद्री बास मछली पालन, जिसके द्वारा +SUÉ ±ÉÉ¦ÉÉ¶É Ê¨É±É MÉªÉÉ ½è, Eò®xÉ Eò Ê±ÉB VÉÒ +É< Ê{ÉVÉ® Eò {ÉÉ®SÉÉ±ÉxÉ Eò Ê±ÉB ºÉ¨ÉZÉÉiÉÉ ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया। ए के पी एफ Eò nºÉ ªÉ´ÉÉ ¨ÉUÖ+É®É, ÊVÉx½ÉxÉ EòÉ´É±É¨É IÉjÉ प्रयोगशाला द्वारा सहभागिता आधार पर चलाए गए खुला सागर पिंजरा मछली पालन निदर्शन कार्यक्रम में भाग लिया था, को नर्सरी पालन +É® ºÉ¨Épù Ê{ÉVÉ® ¨É ¨ÉUÖ±ÉÒ {ÉÉ±ÉxÉ ¨É Ê´É¶ÉÉ±É iÉ®½ EòÉ |ÉÊ¶ÉIÉhÉ ÊnùªÉÉ MÉªÉÉ*

कोवलम तट से करीब 1 कि. मी. की दूरी में समुद्र में 8 मी. की गहराई में एक जी आइ पिंजरा (5 मी. का बाहरी व्यास, 4 मी. का आंतरिक व्यास और 3 मी. की गहराई) सजाया गया है। पिंजरों में दिनांक 3 जून, 2014 को लगभग 60 ग्राम भार वाले एशियन समुद्री बास मछली ±ÉÉ]ºÉ Eò±ÉÉEòÉÉ®¡ò® के 1500 =ÆMÉÉ±ÉÉÒxÉÉ EòÉ ºÉ¦ÉÉ®hÉ ÊEòªÉÉ MÉªÉÉ* +É½É® Eò रूप में मुत्तुकाड के पश्चजलों से पकडी गयी कम लागत की तिलापिया मछली देकर 100 ÊnxÉÉ iÉEò {ÉÉ±ÉxÉ ÊEòªÉÉ MÉªÉÉ*

पिंजरे से दिनांक 16 सितंबर 2014 को फसल संग्रहण किया गया। लगभग 80% Eòò अतिजीवितता दर पर 600 कि.ग्रा. के जैवभार EòÒ ¨ÉUô±ÉÒ {ÉEòb÷Ò MÉ<Ç* ºÉÆOÉÉÊ½iÉ ¨ÉUôÊ±ÉªÉÉå EòÉ आकार परास 0.44 से 1.1 कि.ग्रा. था और औसत आकार 0.5 कि.ग्रा. था। विपणन में यह xÉªÉÉÒ{ÉxÉ nJÉÉ MÉªÉÉ ÊEò ºÉÆOÉÉÊ½iÉ {ÉÚ®Ò ¨ÉUôÊ±ÉªÉÉ को जीवित अवस्था में चेन्नई में स्थित मनोरंजक स्पोर्ट फिशिंग एजेन्सी को प्रति किलोग्राम के लिए 400/- रुपए की दर पर बेच दिया गया। इस तरह प्राप्त मूल्य 2,40,000/- रुपए था। मछलियों को बिना मर्त्यता के रोड मार्ग एक PÉ]ä iÉEò {ÉÉ®´ÉÉ½xÉ ÊEòªÉÉ MÉªÉÉ +É® ¨ÉÒ`É {ÉÉxÉÒ के स्पोर्ट फिशिंग सुविधा में स्थानांतरित किया MÉªÉÉ* Eò¨É {ÉÉ±ÉxÉ +´ÉÊvÉ +É® =SSÉ ¨É±ªÉ {É® बेचने की नयी विपणन साध्यता की वजह से भारत में खुले समुद्र में पिंजरे में समुद्री संवर्धन EòÒ MÉÊVÉÉ<¶É ¦ÉÒ VÉÉbò MÉªÉÒ ½è*

संग्रहण मेले में मंचासीन विशिष्ट व्यक्तियों का दृश्य

B Eò {ÉÒ B¡ò Eò ºÉnºªÉÉ EòÉ SÉEò |ÉnÉxÉ Eò®xÉ EòÉ o¶ªÉ

डॉ.बीला राजेश, आइ ए एस, मात्स्यिकी आयुक्त, तमिल नाडु, डॉ.एम.शक्तिवेल, भूतपूर्व अध्यक्ष, एम पी ई डी ए, डॉ.जी.गोपकुमार, अध्यक्ष, समुद्री संवर्धन प्रभाग एवं प्रभारी वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र, डॉ.के.विजयकुमारन, प्रभारी वैज्ञानिक, ºÉÒ B¨É B¡ò +É® +É< ¨ÉpùÉºÉ +xÉÖºÉÆvÉÉxÉ केन्द्र, डॉ.ए.आर.टी.अरशु, भूतपूर्व अध्यक्ष, मछली पालन प्रभाग, सी आइ बी ए, तिरु BºÉ.VÉÉxÉEòÒ®É¨ÉxÉ, EòÉ´É±É¨É {ÉSÉÉªÉiÉ +vªÉIÉ, iÉÊ¨É±É xÉÉb÷ ¨ÉÉÎiºªÉEòÒ Ê´É¦ÉÉMÉ Eò +ÊvÉEòÉ®Ò गण, सी आइ बी ए और सी एम एफ आर आइ मद्रास अनुसंधान केन्द्र, चेन्नई के वैज्ञानिकों और कर्मचारी प्रतिनिधियों, ए के पी एफ सदस्यों +É® EòÉ´É±É¨É Eò ¨ÉUÖ+É®É EòÒ ={ÉÎºlÉÊiÉ ¨É मछली संग्रहण, पैकिंग और विपणन कार्य +ÉªÉÉÉÊVÉiÉ ÊEòB MÉB*

डॉ.बीला राजेश, आइ ए एस, मात्स्यिकी आयुक्त, तमिल नाडु ºÉÆOÉÉÊ½iÉ ¨ÉUô±ÉÒ Eò ºÉÉlÉ

(VÉÉ ÊEòÒ¹ÉEòbxÉ, ¨ÉpùÉºÉ +xÉÖºÉÆvÉÉxÉ Eòxp Eò Ê®{ÉÉ]Ç)

÷ÉÆVÉ®É ¨Éºi±ÉÒ {ÉÉ±ÉxÉ: ®ÉVÉ֭±É±ÉÆEòÉ ºÉä ÊÉÆVÉ®É EòÒ EòÂ]ÉÉ<Ò

ºÉÒB¨ÉB¡ò+É®+É< Ê´É¶ÉÉJÉÉ{ÉÊ]hÉ¨É क्षेत्रीय केन्द्र के तकनीकी मार्गदर्शन में जनवरी, 2014 को आंध्रा प्रदेश के पश्चिम गोदावरी जिले के नर्सापुर के राजुललंका की गोदावरी नदी में 6 मी. के व्यास और 4 मी. की गहराई वाले छः गाल्वनाइस्ड अयेर्न (VÉÒ +É<) Ê{ÉVÉ® {ÉÉ±É ±ÉMÉ® EòÒ ºÉÆ½ÉªÉiÉÉ ºÉä ºlÉÉÊ{ÉiÉ ÊEòB MÉB* Ê{ÉVÉ®É ¨ÉÂ ¡ò®´É®Ò ¨É½ÒxÉä में समुद्री बास मछली के 15 से 30 ग्रा. तक के आकार के लगभग 7200 उंगलिमीनों और मल्लट के प्राकृतिक रूप से संग्रहित 2 से 3 ग्रा. तक के आकार के 4000 पोना मछलियों को संभरित किया गया। मई महीने के तीसरे ºÉ{iÉÉ½ ¨É ºÉ¡ò]xÉ¶ÉÉ±ÉÉ ¨É {ÉÉÊ±ÉiÉ Ê±É]Ê{ÉäxÉ+ºÉ ´ÉzÉÉ¨ÉÉ के 2.4 लाख पी एल/11का संभरण ÊEòªÉÉ MÉªÉÉ*

समुद्री बास मछली को खाद्य के रूप में शरीर भार के 6 - 8% (Ê¡±ÉÉÊ{ÉªÉÉ) nÒ MÉªÉÒ* +É½É® EòÒ |ÉhÉÉ±ÉÒ <ºÉ |ÉEòÉ® lÉÒ: {É½±É nÉ महीनों के दौरान शरीर भार का 8% ÊnxÉ ¨É दो बार, तीसरे और चौथे महीनों के दौरान शरीर भार का 7% दिन में तीन में तीन बार +É® +ÊiÉ¨É ¨É½ÒxÉ EòÒ nÉ®ÉxÉ ¶ÉÉ®Ò® ¦ÉÉ® EòÉ 6% दिन में चार बार। संभरित समुद्री बास मछलियों की बहुत अच्छी बढ़ती देखी गयी और पांच महीनों के बाद, जब संग्रहण किया गया था, ये 649 ± 272/ग्रा. और 354.55 ± 45.16/मि.मी. के आकार तक बढ़ गयीं। मछली के आकार का परास 199 से 499 ग्रा. और 270 से 485 मि.मी. की लंबाई lÉÉ* {ÉÉSÉ ¨É½ÒxÉÉ EòÒ {ÉÉ±ÉxÉ +´ÉÊvÉ EòÒ ºÉ¨ÉÉÎ{iÉ पर 86% EòÒ +ÊiÉVÉÒÊ´ÉiÉiÉÉ nVÉÒ MÉªÉÒ +É® लगभग 4 टन की मछली का संग्रहण किया MÉªÉÉ* ºÉÆOÉ½iÉ ¨ÉUÊ±ÉªÉÉ EòÉ |ÉÊiÉ ÊEò±ÉÉäOÉÉ¨É Eò लिए 330 रुपए की दर पर बेच दिया गया।

|ÉÉ®¦É ¨É ¨É±±É]] ¨ÉUÊ±ÉªÉÉ EòÉ ÊnxÉ ¨É BEò बार पेल्लेट खाद्य दिया गया और बाद में दिन में दो बार याने कि एक बार पेल्लेट खाद्य और एक बार चावल की भूसी चूर्ण दिया गया। पालन के 5 महीनों बाद मल्लेट मछली 250/ ग्रा. के आकार तक बढ़ गयीं। मल्लेट मछली EòÉ {ÉÉ±ÉxÉ |ÉMÉÉÊiÉ {É® ½*

Ê±É]Ê{ÉäxÉ+ºÉ ´ÉzÉÉ¨ÉÉ Eò {É¶SÉ Êb¦ÉÉEòÉ EòÉ +É½É® Eò °ü{É ¨É {É±±É]] JÉÉt ÊnªÉÉ MÉªÉÉ और पालन के 68 दिनों के बाद ये 12.6 ग्रा. (80 काउन्ट) के औसत भार तक बढ़ गयीं। BEò PÉ]] Eò +iÉ®É±É ¨É +É½É®]] EòÉ ÊxÉ®ÉIÉhÉ Eò®Eò ¨ÉÉMÉ Eò +ÊvÉÉ® {É® +É½É® ÊnªÉÉ MÉªÉÉ* पालन के अंत में 66% EòÒ +ÊiÉVÉÒÊ´ÉiÉiÉÉ nVÉÒ MÉªÉÒ* Eò±É nÉ]xÉ EòÒ ¨ÉUÊ±ÉªÉÉ EòÉ ºÉÆOÉ½hÉ ÊEòªÉÉ MÉªÉÉ* ºÉÆOÉ½iÉ ÊSÉÆMÉ]É EòÉ +ÊvÉ ¦ÉÉMÉ प्रति किलोग्राम के लिए 243 रुपए की दर पर पालन खेत में ही बेच दिया गया और बाकी चिंगटों को आगे के पालन के लिए तालाब में ½Ò ´ÉÉ{ÉºÉ UÉb ÊnªÉÉ MÉªÉÉ*

उbºÉÒ EòÒ EòÉउºÉ EòÒ iÉ]ट {É® ÊiÉÊ¨É EòÉ ¶É´É

=डुपी जिला के काइपुन्जे के काउप तट पर 1 सितंबर, 2014 को बलीन तिमि का शव धंस गया। यह अत्यंत सड़ गयी और विघटित अवस्था में था इसलिए आकारमितीय ¨ÉÉ{ÉxÉ Eò®xÉÉ ¨ÉÖ¶ÉÉEòÒ±É lÉÉ*

=b{ÉÒ EòÒ EòÉ={É iÉ] {É® vÉºÉ MÉªÉÒ ÊiÉÊ¨É EòÉ ¶É´É

xÉए +xÉºÉvÉÉxÉ पोÉiÉ

+É®.´ÉÒ.EÒb±É¨ÉÒxÉ I EòÉ EòÉ¨ÉÒशÉfxÉMÉ

डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, सी एम एफ आर आइ द्वारा नए अनुसंधान पोत का कमीशनिंग

ºÉ¨ÉpÒ ¨ÉÉÎiºªÉEòÒ B´É ¨É½ºÉ¨ÉpÒªÉ अनुसंधान कार्यों में अच्छी तरह ºÉºÉÎVVÉiÉ xÉªÉÉ {ÉÉiÉ +É®.´ÉÒ.EÒb±É¨ÉÒxÉ I ºÉºlÉÉxÉ EòÉ |ÉÉ{iÉ ½+É, ÊVÉºÉEòÉ {ÉÉ®SÉÉ±ÉxÉ É´É¶ÉÉJÉ{É]ÂhÉ¨É |ÉjÉÒªÉ EòxpÒ ºÉ ÊEòªÉÉ VÉÉBMÉÉ* पोत में 1800 आर पी एम पर काम करने की क्षमता युक्त 248 बी एच पी का फोर स्ट्रोक ¨É®Ò<xÉ |ÉÉ{É±¶ÉxÉ <VÉxÉ (ºÉÒ´ºÉ EòÉ¨]xÉ ¨ÉÉb±É टी बी डी3वी6) लगाया गया है। वील हाउस में आधुनिक नेविगेशनल उपकरण, अलार्म, गेजस और इन्डिकेटेर्स मौजूद हैं। हाइड्रॉलिक ट्राल विंच, जिसकी क्षमता दोनों भागों में 500 मी. की लंबाई और 8 मि.मी. व्यास के वायर EòÒ ®ººÉÒ ½, ¦ÉÒ |ÉnÉxÉ EòÒ MÉªÉÒ ½* {ÉÉiÉ ¨É 750 कि.ग्रा. की क्षमता युक्त डेरिक और सी टी डी परिचालन की सुविधाएं भी उपलब्ध है।

पोत में इको साउन्डर-फिशिंग (फ्यूमो, एफ सी वी 587) ग्लोबल पोसिशनिंग सिस्टम (फ्यूमो, जी पी 150), रेडियो इन्स्टलेशन युक्त वी एच एफ (रे मराइन ए आइ एस 49 ई) और अन्य आवश्यक नेविगेशन सुविधाएं ¨ÉÉVÉn ½* <ºÉEò +ÉiÉÉ®HÒ ºÉ|ÉÊV´ÉÉ±ÉiÉ ÊnªÉÉ और लाइफ लाइन सहित स्टेट ऑफ दि आर्ट लाइफ बॉय, पाराच्यूट विपत्ति संकेत और +{ÉiÉ]ÒªÉ |ÉÉ¦É¨ÉEò ÊSÉÉEòiºÉÉ ÊEò]¦ ¦ÉÒ {ÉÉiÉ पर उपलब्ध है। फायर हाइड्रन्ट्स, फायर ½ÉºÉ, +ÎMxÉ¶É¨ÉEò ={ÉEò®hÉ +É® +xªÉ ºÉ½ªÉEò ={ÉEò®hÉ ¦ÉÒ {ÉÉiÉ {É® |ÉnÉxÉ ÊEòB गए हैं। पोत नान्सेन रिवेर्सिंग बोतल, वान वीन ग्राब एवं प्लवक संग्रहण जाल उपयुक्त EòÒ®Eò {ÉÉxÉÒ, +´ÉºÉÉn iÉlÉÉ {±É´ÉEòÉ EòÉ xÉ¨ÉÚxÉ ºÉÆOÉ½hÉ Eò Ê±ÉB ºÉºÉÎVVÉiÉ ÊEòªÉÉ MÉªÉÉ ½* {ÉÉiÉ {É® ÊxÉiÉ±ÉÒºlÉ +ÉxÉÉÊªÉxÉ EòÒ ºÉÉ¨ÉOÉÒB ½ +É® जीवविज्ञानीय नमूनों का विश्लेषण करने हेतु UÉ]Ò |ÉªÉÉMÉ¶ÉÉ±ÉÉ ¦ÉÒ ºÉºÉÎVVÉiÉ EòÒ MÉªÉÒ ½*

+É®.´ÉÒ.EÒb±É¨ÉÒxÉ I EòÉ Ê´É´É®hÉ

लंबाई ओ ए एल	:	13.56 मी.
चौडाई	:	4.66 मी.
गहराई	:	2.56 मी.
ड्राफ्ट	:	1.56 मी.
सकल टनेज	:	34 टन
निवल टनेज	:	10 टन
गति	:	8 समुद्री मील
समुद्र में रहने EòÒ IÉ¨ÉiÉÉ	:	8 दिन
xÉÉÉ´ÉEò MÉhÉ	:	5
वर्गीकरण	:	आइ आर एस º´ÉÎºiÉEòÉ BºÉ ªÉ B±É ¨ÉiºªÉxÉ {ÉÉiÉ +É< ´ÉÉ< +ÉxÉÉªÉxÉ
¨ÉiºªÉxÉ EòÉ |ÉEòÉ® :		

देश के Ê´ÉÊ¦ÉzÉ ºÉ¨ÉÖpÒ ¦ÉÉMÉÉ ¨É ¨ÉUÓÉ ¨ÉUÓÉxÉ ¨ÉÉSÉ±ÉÒ Eò +MÉÉ±É¨ÉÒxÉÉ EòÉ ÊÉ´ÉiÉ®hÉ

VÉÖलाई-सितंबर, 2014 ÊiÉ¨ÉÉ½Ò EòÉ nÉ®ÉxÉ ÊºÉ±´É® {ÉÉ¨{ÉÉxÉÉ ¨ÉUÓ±ÉÒ Eò Eò±É 1,07,395 अंगुलिमीनों की आपूर्ति आंध्रा प्रदेश, कर्नाटक और तमिल नाडु के ¨ÉUÓ+É®É EòÉ EòÒ MÉªÉÒ* <ºÉEò +ÊiÉÊ®HÒ ÊºÉ±´É® {ÉÉ¨{ÉÉxÉÉ ¨ÉUÓ±ÉÒ Eò 15,685 +MÉÉ±É¨ÉÒxÉÉ EòÉ ºÉÒ B¨É B¡Ò +É® +É< EòÉ®´ÉÉ® +xÉºÉÆvÉÉxÉ EòxpÒ EòÉ ¦ÉÒ |ÉnÉxÉ ÊEòªÉÉ MÉªÉÉ*

bÉ. VÉÒ. MÉÉ{ÉÉ¨ÉÉ® ÊºÉ±´É® {ÉÉ¨{ÉÉxÉÉ ºÉÒiÉÉ¡ÉÉªÉ EòÉ |ÉnÉxÉ Eò®xÉ EòÉ o¶ªÉ

ºÉÒ +É<]Ò < BºÉ Eò {ÉÊ®ÊlÉÊ]¶É]i -II Eò ={ÉÉÊ¶É¹]ÉÒxÉÉ EòÒ {ÉÊ®¶ÉÉÊ¹ÉiÉ ºÉÚSÉÒ 14 ÊºÉiÉà¤É®, 2014 ºÉä |ÉʦÉÉ´ÉÒ

कोचीन मात्स्यिकी पोताश्रय में अवतरण किया गया स्फिरना लेवीनी

´ÉxªÉ VÉÒ´ÉVÉiÉ +É® ´ÉxÉº{ÉÊiÉ VÉÉiÉÉ {É® बैंकोक में दिनांक 3 से 14 मार्च 2014 EòÉ +ÉªÉÉÉVÉiÉ EòÒ´ÉxÉ¶ÉÉ +ÉxÉ <x]®xÉ¶ÉxÉ±É ट्रेड इन एन्डेजेर्ड स्पीशीस के सम्मेलन में ºÉ®É+É EòÒ {ÉÉSÉ VÉÉÊiÉªÉÉ +É® ® ¨ÉUÊ±ÉÒ EòÒ दो जातियों को 14 सितंबर, 2014 से लेकर ºÉÒ +É<]Ò BºÉ Eò {ÉÊ®ÊÉ¹]i ** ¨É VÉÉbÉ MÉªÉÉ है। इस नई सूची में ओशियानिक वाइटटिप ºÉ®É (EòÉ®EòÉÊ®xÉºÉ ±ÉÉÊMÉ¨ÉÉxÉºÉ), ºEòÉ±É{b ½Ê¨É®½b ºÉ®É (ÎºÉ¡òÒ®xÉÉ ±ÉÉ´ÉxÉÒ), OÉ]i ½Ê¨É®½b ºÉ®É (ÎºÉ¡òÒ®xÉÉ ¨ÉEòÉ®xÉ), ºÉ¨ÉiÉ ½Ê¨É®½b ºÉ®É (ÎºÉ¡òÒ®xÉÉ WÉÉ<MÉÉxÉÉ), पोरबेगिल सुरा (±ÉÉ¨xÉÉ xÉÉºÉºÉ) और मान्टा वंश की दो रे मछलियाँ ºÉÎ¨¨ÉÊ±ÉiÉ ½*

={ÉÉÎºlÉ¨ÉÉxÉÉ EòÉ xÉB {ÉÊ®ÊÉ¹]i ** ¨É जोडने से, पहले ही सूचीकृत बास्किंग सुरा (ºÉÒ]Ê®É<xÉºÉ ¨ÉÉÎCºÉ¨ÉºÉ), OÉ]i ´ÉÉ<]i ºÉ®É (EòÉ®EòÉ®bÉxÉ EòÉ®EòÉÊ®ªÉºÉ), ºEòÉ±ÉÉ{b ½Ê¨É®½b ºÉ®É (ÎºÉ¡òÒ®xÉÉ ±ÉÉ´ÉxÉÒ), ÊiÉÉ¨É सुरा (रिंकोडोन टाइपस) भी सी आइ टी ई BºÉ Eò +xÉSUÉn IV Eò +n® +ªÉMÉ* <xÉ ºÉSÉÒEòiÉ VÉÉÊiÉªÉÉ ¨É ºÉ ºÉ®É EòÒ iÉÒxÉ VÉÉÊiÉªÉÉ (ºÉÒ]Ê®É<xÉºÉ ¨ÉÉÎCºÉ¨ÉºÉ, EòÉ®EòÉ®bÉxÉ EòÉ®EòÉÊ®ªÉºÉ +É® ±ÉÉ¨xÉÉ xÉÉºÉºÉ) EòÉ ¦ÉÉ®iÉÒªÉ समुद्रों से वितरण नहीं पाया गया है या रिकार्ड नहीं किया गया है।

<ºÉ +´ÉºÉ® {É® ªÉ½ ¦ÉÒ ºÉÉSÉiÉ ÊEòªÉÉ VÉÉxÉÉ ½ ÊEò ´ÉxªÉ VÉÒ´É (ºÉ®IÉhÉ) अधिनियम, 1972 की अनुसूची I के भाग ** B ¨É {É½±É ½Ò ºÉÎ¨¨ÉÊ±ÉiÉ ={ÉÉÎºlÉ¨ÉÉxÉ VÉÉÊiÉªÉÉ EòÉ |ÉOÉ½hÉ, Ê¶ÉEòÉ®, ¡òÒnÉ, ¡òÒºÉxÉÉ और विपणन करना निषिद्ध किया गया है। इन VÉÉÊiÉªÉÉ ¨É ÊiÉÉ¨É ºÉ®É (Ê®EòÉbÉxÉ]É<{ÉºÉ), +xÉÉÎCºÉÉ|ÉÎº]ºÉ EòÎºÉ{Éb]É, EòÉ®EòÉÊ®xÉºÉ ½É¨ÉªÉÉbÉxÉ, ÎM±ÉÉ¡òÒºÉ VÉÉxVÉÉ]EòºÉ, ÎM±ÉÉ¡òÒºÉ ÎM±ÉÉ¡òÒºÉ, Ê½¨ÉÉxÉiÉ®É }±ÉÉªÉÉÉ]Ê±ÉºÉ, Ê|ÉÎº]ºÉ ¨ÉÉ<GòÉbÉxÉ, Ê|ÉÎº]ºÉ ÊWÉVÉÉ®xÉ, Ê®xÉEòÉ¤ÉÉ]ºÉ ÊVÉbÎxºÉºÉ +É® ªÉÉ®ÉÊ¨É<¨ÉºÉ +ÉºÉ{ÉÉ¨ÉºÉ ºÉÎ¨¨ÉÊ±ÉiÉ ½*

{ÉÊ®SUn ** ¨É ºÉÎ¨¨ÉÊ±ÉiÉ ÊEòºÉÒ ¦ÉÒ VÉÉÊiÉ के नमूने का निर्यात करने के लिए पूर्व मंजूरी और निर्यात परमिट प्रस्तुत किया जाना चाहिए और यह निर्यात परमिट तब मंजूर किया जाएगा, जब 1) वैज्ञानिक प्राधिकरण यह सलाह देते हैं कि निर्यात करने से इस जाति की अतिजीवितता पर हानि नहीं पहुँचेगी 2) राज्य के प्रबंधन प्राधिकरण इस बात पर संतुष्ट

मान्टा बाइरोस्ट्रिस (जयन्ट मान्टा रे)

i ½ ÊEò ªÉ xÉ¨ÉxÉ VÉÒ´ÉVÉiÉ +É® ´ÉxÉº{ÉÊiÉ VÉÉiÉ Eò ºÉ®IÉhÉ {É® ®ÉVªÉ Eò EòÉxÉÚxÉ Eò =±±ÉPÉxÉ के अधीन नहीं आते हैं और 3) जीवित नमूने के नौवहन से इसके स्वास्थ्य पर हानि नहीं पहुँचेगी या क्रूर व्यवहार के अधीन है।

ºÉ®É+É +É® ® ¨ÉUÊ±ÉªÉÉ, ÊVÉxÉ½ Ênx«ÉÉEò 14 सितंबर, 2014 से लेकर सी आइ टी ई BºÉ Eò {ÉÊ®SUn ** ¨É ºÉSÉÒEòiÉ ÊEòªÉÉ MÉªÉÉ ½, को वन्य जीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 में नहीं जोडा गया है, और इसलिए तटीय क्षेत्रों ¨É ®½xÉ ´ÉÉ±É ¨ÉUÖ+É ±ÉÉMÉ +{ÉxÉÒ +ÉVÉÒÊ´ÉEòÉ के लिए इन्हें पकड़ेंगे।

कारकारिनस लॉंगिमानस (ओशियानिक वाइट टिप सुरा)

स्फिरना लेवीनी (स्कालप्ड हैमर हेड सुरा)

पर्यावरण एवं वन मंत्रालय (वन्य जीव |É¦ÉÉMÉ), ¦ÉÉ®iÉ ºÉ®EÉ® Eò +Én¶É ºÉ. 4-45/2014/डब्लियू एल दिनांक 12 सितंबर द्वारा पशुपालन, डेरी एवं मात्स्यिकी विभाग को इन जीव जातियों के टिकाऊ संग्रहण का स्तर ºÉ¨ÉZÉxÉ Eò =q¶ªÉ ºÉ <xÉEòÒ MÉ® ½ÉÉxÉEòÉ®Eò o¶ªÉ¨ÉÉxÉiÉÉ {É® VÉÉxÉxÉ Eò Ê±ÉB ¦ÉÉ®iÉ Eò सी आइ टी ई एस प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा नामांकित वैज्ञानिक प्राधिकारियों (निदेशक, ºÉÒ B¨É B¡ò +É® +É<) ºÉ +xÉ®ÉvÉ ÊEòªÉÉ ½* सी एम एफ आर आइ द्वारा इस पर पहले ही कार्रवाई शुरू की गयी है।

{ÉÊ®Ê¶É¹] I में विलुप्त होने की धमकी पर पड़ गयी जातियाँ सम्मिलित हैं, जिनका विपणन सख्त विनियमन के अधीन होना चाहिए और केवल +{É´ÉÉnÉi¨ÉEò {ÉÊ®ÎºlÉÊiÉªÉÉÆ ¨É ¨ÉÉ± ºÉÚSÉ ºÉ ´ÉxªÉ xÉ¨ÉÚxÉ Eò ÊãÉB |ÉÉÊvÉEòÊiÉ ÊEòªÉÉ VÉÉ ºÉEòiÉÉ ½* ºÉÉ¨ÉÉxªÉiÉ: {ÉÊ®Ê¶É¹] * ¨É ºÉÎ¨¨ÉÊãÉiÉ VÉÉÊiÉªÉÉÆ Eò जंगली नमूनों के विपणन के लिए अनुमति नहीं है।

{ÉÊ®Ê¶É¹] II में अब विलुप्त होने की धमकी पर नहीं पड़ गयी, लेकिन पड़ जाएगी, अतः इनका विपणन कड़ा रूप से विनियमित है। परिशिष्ट II में और भी सूचियाँ - “समान दिखने वाली जातीयाँ” (ल्युक एलाइक स्पीशीस) (सी आइ टी ई एस का अनुच्छेद II, खंड 2(बी) देखें) हैं, ये ¦ÉÒ ´ÉÉÊhÉVªÉ VÉÉÊiÉªÉÉ Eò ºÉÉlÉ ºÉ¨ÉÉxÉiÉÉ ½ÉxÉ Eò Eò´É½ ºÉ ÊxÉªÉÆÊjÉiÉ ½, +É® <ºÉ ÊãÉB +É® |É¦ÉÉ´ÉEòÉ®Ò ÊxÉªÉÆjÉhÉ ÊEòªÉÉ VÉÉ ºÉEòiÉÉ*

{ÉÊ®Ê¶É¹] III में सी आइ टी ई एस पार्टी के अधिकार क्षेत्र के अंदर विनियमन के अधीन जातियाँ सम्मिलित हैं और इस के लिए इनका विदोहन प्रतिबंधित किए जाने के लिए अन्य सी आइ टी ई एस पार्टियों की सहकारिता आवश्यक है।

ºÉÒ +É<]Ò < BºÉ Eò {ÉÊ®Ê¶É¹] I +ÉÊ® II ¨É ºÉÚSÉÒEÞòiÉ ¶ÉÉÊEÇò

क्रम	Eò]ÖÆ¤É	ºÉÉ¨ÉÉxªÉ xÉÉ¨É	VÉÉÊiÉ
कारकारिनिफोर्म्स	कारकारिनिडे	ओशियानिक वाइटटिप शार्क	EòÉ®EòÉÊ®xÉºÉ ±ÉÉìMÉÒ¨ÉÉxÉºÉ
	स्फिरिनिडे	स्कालप्ड हैमरहेड शार्क	ÎºÉ¡ò®xÉÉ ±ÉÉ´ÉÒxÉÒ
		ग्रेट हैमरहेड शार्क	ÎºÉ¡ò®xÉÉ ¨ÉÉEò®xÉÉ
		स्मूत हैमरहेड शार्क	ÎºÉ¡ò®xÉÉ WÉÉ<MÉÒxÉÉ
लाम्निफोर्म्स	सीटोरिनिड	बास्किंग शार्क	ºÉÒ]Éä®É<xÉºÉ ¨ÉÉÎCºÉ¨ÉºÉ
	लाम्निडे	माकरल शार्क	EòÉ®EòÉ®ÉbÉxÉ EòÉ®EòÉÊ®ªÉºÉ
		पोर्बीगिल शार्क	±ÉÉ¨xÉÉ xÉÉºÉºÉ
ओरेक्टोलोबिफोर्म्स	रिन्कोडोन्टिडे	व्हेल शार्क	Ê®xEòÉbÉxÉ]É<{ÉºÉ
प्रिस्टिफोर्म्स	प्रिस्टिडे	सॉफिशस	+xÉÉÎCºÉ|ÉÎº]ºÉ EòÖÎº{Éb]É
			Ê|ÉÎº]ºÉ ÊWÉVÉ»ÉÉxÉ
			Ê|ÉÎº]ºÉ Ê|ÉÎº]ºÉ
			Ê|ÉÎº]ºÉ ¨ÉÉ<GòÉbÉxÉ
मिलियोबाटिफोर्म्स	मोबूलिडे	जयन्ट मान्टा रे	¨ÉÉx]É ¤ÉÉ<®ÉÎº]ºÉ
		®Ò¡ò ¨ÉÉx]É ®	¨ÉÉx]É +±£òÒbÒ

¦ÉÉ®iÉ Eò ´ÉxªÉ VÉÒ´É (ºÉÆ®IÉhÉ) +ÊvÉÊxÉªÉ¨É, 1972 EòÒ +xÉÖºÉÚSÉÒ I Eò ¦ÉÉMÉ II ¨É ºÉÎ¨¨ÉÊ±ÉiÉ VÉÉÊiÉªÉÉÆ

क्रम	Eò]ÖÆ¤É	ºÉÉ¨ÉÉxªÉ xÉÉ¨É	VÉÉÊiÉ
ओरेक्टोलोबिफोर्म्स	रिन्कोडोन्टिडे	व्हेल शार्क	Ê®xEòÉbÉxÉ]É<{ÉºÉ
कारकारिनिफोर्म्स	कारकारिनिडे	पोन्डिचेरी शार्क	EòÉ®EòÉÊ®ÉxÉºÉ ½ÉÊ¨ÉbÉxÉ
		गान्गेस शार्क	ÎM±ÉÉ¡òºÉ MÉÉxÉMÉÉ]EòºÉ
		स्पियरटूथ शार्क	ÎM±ÉÉ¡òºÉ ÎM±ÉÉ¡òºÉ
मिलियोबाटिफोर्म्स	डासियाटिडे	गान्गेस स्टिंग र	É½¨ÉÉxÉiÉÊ® }±ÉÉ¨ÉÉÉ]±ÉÉºÉ
राजिफोर्म्स	रिन्कोबाटिडे	पोर्क्युपाइन रे	ªÉ®ÉÉVÉ¨ÉxÉºÉ +ÉºÉÉÊ®¨ÉºÉ
प्रिस्टिफोर्म्स	प्रिस्टिडे	जयन्ट गिटार फिश	Ê®xEòÉ¤ÉÉ]ºÉ ÊVÉbÎxºÉºÉ
		xÉÉ<¡ò]ÚlÉ ºÉÉ¡ò¶É	+xÉÉÎCºÉ|ÉÎº]ºÉ EòÖÎº{Éb]É
		लार्ज टूथ सॉफिश	Ê|ÉÎº]ºÉ ¨ÉÉ<GòÉbÉxÉ
		xÉÉ®É ºÉxÉÉ=]Ò ºÉÉ¡ò¶É	Ê|ÉÎº]ºÉ ÊWÉVÉ»ÉÉxÉ

(iÉ±ÉÉ¨ÉVÉVÉÒ ¨ÉÉÎiºªÉEòÒ |É¦ÉÉMÉ, ºÉÒ B¨É B¡ò +É< +É® BxÉ ¤ÉÒ B¡ò VÉÒ +É® EòÉSÉÒxÉ BEòEò EòÒ Ê®{ÉÉä])

¨ÉÉ±{Éä ¨ÉiºªÉxÉ {ÉÉäiÉÉ¸ÉªÉ ¨É ºÉÖ®¨É<Ç ¤ÉbÒ ºÉÖ®¨É< EòÉ +´ÉiÉ®hÉ

¨ÉÉल्पे मत्स्यन पोताश्रय में दिनांक 9 सितंबर, 2014 को सबसे बडी सुरमई स्कोम्बेरोमोरस कमेर्सन का अवतरण किया गया। इस मछली का भार 24.7 कि.ग्रा. और लंबाई 5 मी. थे। लगभग 60 फातम की गहराई में परिचालित ट्रोल लाइन द्वारा इसे पकड़ा गया। मछली को 10,500/- रुपए याने कि रु.425/कि.ग्रा. की दर पर xÉÒ±ÉÉ¨É EòÒ ÉnªÉÉ MÉªÉÉ* ¨ÉÉ±{Éä ¨ÉiºªÉxÉ {ÉÉäiÉÉ¸ÉªÉ ¨É {É½±ÉÒ बार इतनी बडी सुरमई मछली का अवतरण किया जाता है।

¤Éb +EÉÉ® ´ÉÉ±ÉÒ ºÉ®ÉÉ<

B]Ò +É< ºÉÒ द्वारा राजस्व

EòÞÊ¹É |ÉÉètÉÉäÊMÉEòÒ B´ÉÆ ºÉÚSÉxÉÉ EåòpÉ (ए टी आइ सी) द्वारा जुलाई - सितंबर, 2014 की अवधि के दौरान बिक्री एवं सेवाओं से 26,870/- रुपए (केवल छब्बीस हजार आठ सौ सत्तर रुपए) का ®ÉVÉº´É VÉÉÊ®ªÉÉ MÉªÉÉ*

+xÉÖºÉÆvÉÉxÉ ¨ÉÖJªÉ +ÆzÉ

¦ÉÉ®iÉÒªÉ ¶ÉÆJÉÖ ºÉÉÒ]õÉ EòÉ ÉÊb¨ÉEò {ÉÉ±ÉxÉ ¨Éå ºÉ¡ò±ÉiÉÉ{ÉÚ´ÉÇEò =i{ÉÉnxÉ

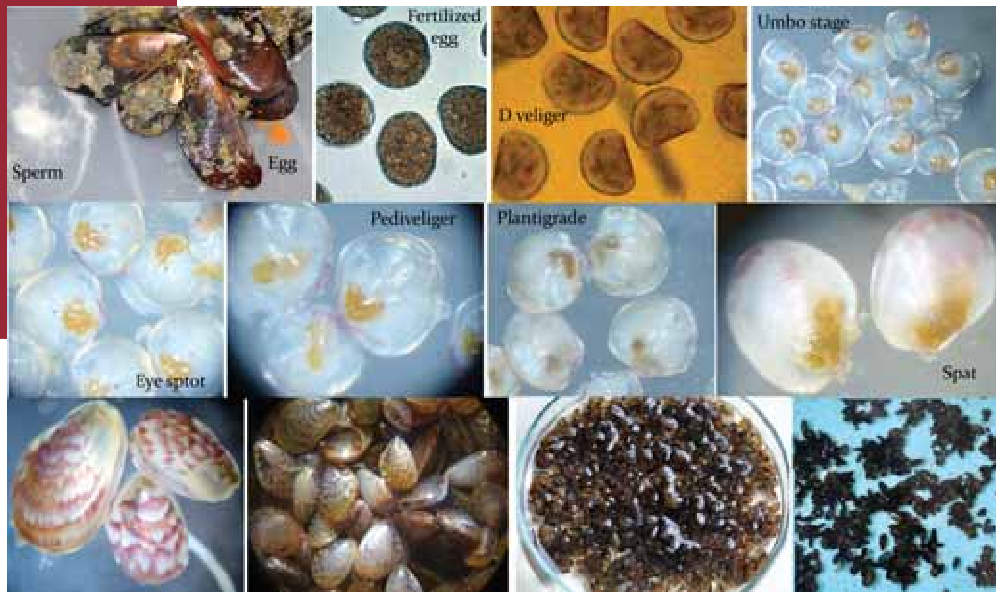

पेर्ना इन्डिका के संतती उत्पादन चक्र के विकास के विभिन्न स्तर

उन्नीस सौ अस्सी के वर्षों में भारतीय भुरा शंबु पेर्ना इन्डिका के डिंभक पालन में पहली बार सफलता प्राप्त करने के बाद <ºÉ VÉÉÊiÉ Eò ºÉÆiÉÊiÉ =i{ÉÉnxÉ Eòä +É® vªÉÉxÉ आकर्षित होने लगा। विषिंजम अनुसंधान केन्द्र द्वारा हाल ही में इस जाति के संतति उत्पादन में सफलतापूर्वक परीक्षण चलाए गए और बडे {ÉèàÉÉxÉ Eò ºÉ{É]õ =i{ÉÉnxÉ Eò ÊãÉB +¶ÉÉxÉ EòÉ xÉäªÉÉSÉÉ® ¦ÉÒ ¨ÉÉxÉEòÒEòiÉ ÊEòªÉÉ MÉªÉÉ* ºÉ{É]õ के जमाव के लिए विविध सामग्रियाँ उपयुक्त की गयीं और इनमें से, नाइलोन की रस्सी, एक्रिलिक शीट और अन्य सामग्रियों की तुलना ¨ÉÉ SÉ]õ]õÉxÉ +É®]õÉÒ EòÉ ÉÊSÉ±ÉÉ ¦ÉÉMÉ ºÉ{É]õ जमाव के लिए उत्तम देखा गया।

MÉÖVÉ®ÉiÉ Eò ‘ÊºÉqÒ’ VÉxÉVÉÉÊiÉªÉÉå Eò ÊãÉB JÉÖ±ÉÉ ºÉÉMÉ® ÉÊ{ÉÆVÉ®É ¨ÉUô±ÉÒ {ÉÉ±ÉxÉ EòÉªÉÇGò¨É EòÒ ÉÊºÉiÉÉ®

VÉxÉVÉÉÊiÉ ±ÉÉMÉ ÊºÉÊVÉ® EòÉ VÉ±ÉÉªÉxÉ Eò®iÉ ½B

MÉÖVÉ®ÉiÉ Eò ºÉÉä¨ÉxÉÉlÉ iÉ]õ {É® ºÉÊVÉB MÉB फार्म में ‘ÊºÉnÒ’ VÉxÉVÉÉÊiÉªÉÉå xÉ ±ÉMÉÉiÉÉ® तीन वर्षों से लेकर खुला सागर पिंजरों का जलायन किया। यह फार्म समुद्र तट से आधा ÊEò±ÉÉä¨ÉÒ]õ® Eòä nÚ®Ò +É® BEò ÊEò±ÉÉä¨ÉÒ]õ® के क्षेत्र पर लगभग 5 मी. के व्यास के 22 वृत्ताकार पिंजरों से युक्त भारत में ही सब से बडा वाणिज्यिक समुद्री पिंजरा फार्म है।

¨ÉÉ½ÉÉSÉÉMÉÉ]õ {ÉÉ±ÉxÉ Eò ÊãÉB VÉÉ±É ºÉVÉÉiÉ ½B

पिछले वर्ष के दौरान रूपाइत एवं विनियोजित नवोन्मेषी लंगर मानसून मौसम के दौरान प्रक्षुब्ध समुद्री स्थितियों का मुकाबला करने लायक लंगर की 100% +´ÉÊvÉ®hÉ ºÉ ªÉÉHò lÉ +É® हर एक मौसम चक्र के बाद जल्दी ही पुनरारंभ Eò®xÉ ±ÉÉªÉEò ½* ´ÉÉÊ´É±É Eòä ºÉ¨Épò {ÉÉ±ÉxÉ गतिविधियों से आकर्षित और उत्प्रेरित होकर अब अनेक लोग आगे आते हैं। जनजाति लोगों को आजीविका होने के अतिरिक्त यह फार्म इस <±ÉÉEò Eò ¨ÉUô+É®É, ¨ÉÉÎiºªÉEòÒ +ÉÊvÉEòÉÉ®ªÉÉå, गैर सरकारी संगठनों के कार्मिकों, छात्रों और निजी उद्यमियों के लिए निदर्शन और प्रशिक्षण स्थान का कार्य भी निभाता है। चालू वर्ष में विनियोजन किए गए बाईस पिंजरों में ¨ÉÉ½ÉÉSÉÉMÉÉ]õ, {ÉÉ¨{ÉÉxÉÉ +É® {ÉÉ¨{ÉÉxÉÉ ¨ÉUô±ÉªÉÉå EòÉ ºÉ¨ÉpÒ ¶ÉÉÊ´É±É EòÉ{{ÉÉ¡òÉ<EòºÉ +±´ÉÉ®ºÉÒ Eò साथ संभरण किया गया है। यह परियोजना 22 जनजाति परिवारों के करीब 110 जनजाति लोगों के लिए हितकारी बन जाएगी।

Ê{ÉÆVÉ® ¨É ¨ÉÉ½ÉÉSÉÉMÉÉ]õ Eò ÊEò¶ÉÉ®Éå EòÉ ºÉÆ¦ÉÉ®hÉ Eò®xÉ EòÉ o¶ªÉ

(ÊnªÉÉ, bÒ, Eò. ¨ÉÉ½¨¨Énõ EòÉ¶ÉÉ, YÉÉxÉ ®ÉVÉxÉ nÉºÉ, ¸ÉÒxÉÉ/É Eò.+É®., ÉÊxÉªÉ EòÉ¨ÉÉ® ´ÉÉºÉ, ºÉÉ®¶É Eò¨ÉÉ® +É® ¨É½xpõ ¡òÉ¡òxbÒ EòÒ Ê®{ÉÉ]õ])

पिल्लैमडम लैगून के मिल्कफिश पेन फार्म का दृश्य

ºÉहभ्ÉÉÊMÉiÉÉ ºÉ ¨ÉxÉ फ्ÉÉ¨ÉMÉ ¨É Ê¨É±EÒ Êफ्श (SÉÉxÉÉºÉ SÉÉxÉÉºÉ) EÒ बढ़iÉÒ

´Éेदाले गाँव के पिल्लैमडम लैगून में प्रारंभ ÊEÒªÉÉ MÉªÉÉ {ÉxÉ ¡ÉÉÍ¨ÉMÉ {É®ÒIÉhÉ |ÉMÉÉÊiÉ¶ÉÒ±É बन गया है। लैगून से संग्रहित औसत 6.3 से.मी. की लंबाई और 4.6 ग्रा. भार वाले

मछली की बढ़ती का मॉनीटरिंग करते हुए

मिल्क फिश के संततियों को दिनांक 10 मई, 2014 को पेन में संभरित किया गया। सितंबर ¨É½ÒxÉ ¨É xÉ¨ÉÚxÉ SÉªÉxÉ EÒ®xÉ {É® <xÉEÒ +ÉºÉiÉ लंबाई 24 से. मी. और भार 150 ग्राम थे, जो आशावह बढ़ती का संकेत देता है।

(VÉÒ.MÉÉ{ÉEÖ¨ÉÉ®, B.EÒ.+बन±É xÉÉWÉ®, +É®. VÉªÉEÖ¨ÉÉ®, VÉÒ.iÉÉ¨É±É¨ÉhÉÒ, B¨É.¶ÉÉHÒ´É±É, {ÉÒ.®¨É¶ÉEÖ¨ÉÉ®, बÒ.VÉÉxÉºÉxÉ +É® +¨ÉÒ® EÖ¨ÉÉ® ¶ÉÉ¨É±É, ¨Éb{É¨É IÉjÉÒªÉ EÒxp EÒ Ê®{ÉÉ]ç)

¤ÉÒ]MÉ रे *हिमान्तूरा इम्ब्रिकेटा* EÒÉ VÉ¨ÉÉ´É

कर्नाटक के उडुपी जिले के प्रमुख पर्यटन स्थान माल्पे पुलिन पर सितंबर, 2014 महीने के दूसरे सप्ताह के दौरान पर्यटकों पर स्टिंग रे के आक्रमण पर रिपोर्ट की MÉªÉÒ* Ê´ÉºiÉiÉ VÉÉSÉ EÒ®xÉ {É® ¨ÉÉ±É¨É {ÉbÉ ÊEÒ ªÉ½ ºÉEÒ±ÉÒ Ê´É{É®, Ê½¨ÉÉxiÉ®É <Î¨¥ÉEÒ]É ºÉ|ÉÉÊiÉªÉ ºÉÜ{É ºÉ <ºÉ बÉ±Éb ªÉÉ iÉÉ®EÒ EÒ½É VÉÉiÉÉ ½É* पकड़ी गयी रे मछलियाँ किशोर थी, जिनका आकार 17-20 से.मी. (डिस्क लंबाई) और 183-276 ग्रा. भार था। पकड़ में प्रौढ़ रे मछलियाँ भी उपस्थित थी जिसका यह संकेत ½ ÊEÒ ªÉ |ÉVÉxÉxÉ EÒ Ê±ÉB ®iÉÒ {ÉÉ±ÉxÉ {É® +ÉªÉÒ होंगी। साधारणतया स्टिंग रे मछलियाँ विनम्र º´É¦ÉÉ´É EÒ ½ +É® ºÉ¨Ép EÒ iÉ]Òªá ¦ÉÉMÉÉ ¨É हमेशा रेत में डूब होकर रहती हैं। ये स्वयं रक्षा के लिए आक्रमण करती हैं। मानव चलते वक्त अचानक रेत में डूबी हुई स्टिंग रे मछली {É® {É® ®JÉiÉÉ ½ iÉÉ iÉ®iÉ ½Ò {ÉÚU ºÉ ¨ÉÉ®iÉÒ है। मानव पर स्टिंग रे का आक्रमण करने पर ¨ÉJªÉiÉ:]JÉxÉ +É® {É® {É® SÉÉ]i ±ÉMÉiÉÒ ½*

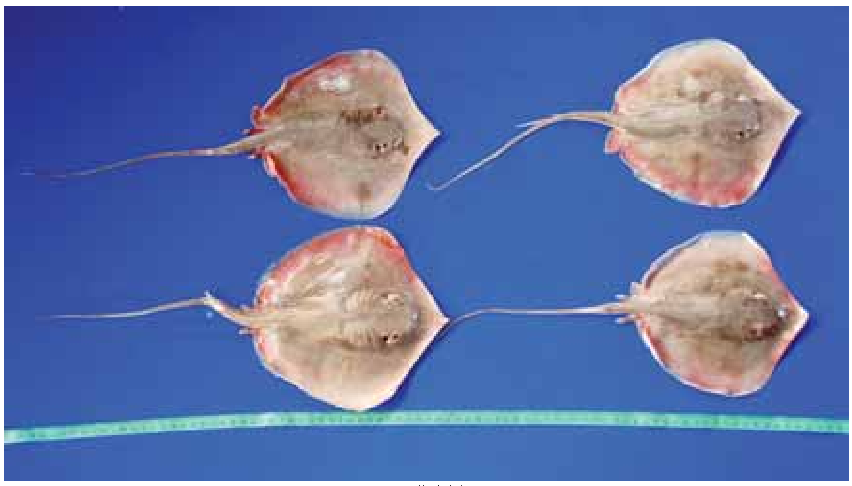

ºÉEÒ±ÉÒ Ê´É{É®

गत वर्षों में माल्पे पुलिन में मानसूनोत्तर महीनों EÒ nÉ®ÉxÉ ¤ÉÒ]MÉ ® ¨ÉÉU±ÉÒ EÒ ={ÉÎºlÉÊiÉ {ÉÉªÉÒ जाती थी, लेकिन इस वर्ष किशोर मछलियों EÒ ºÉJªÉÉ +ÊvÉEÒ ½* <xÉ ¨ÉUÊ±ÉªÉÉ EÒ |ÉVÉxÉxÉ ºÉ¨ÉªÉ ÊVÉºÉ +´ÉÊvÉ EÒ nÉ®ÉxÉ <xÉEÒ ºÉ®ÉIÉiÉ करने के बारे में स्थानीय लोगों तथा पर्यटकों EÒÉ +´ÉMÉiÉ EÒ®ÉxÉÉ +É´É¶ªÉEÒ ½* nÉ ºÉ{iÉÉ½É के बाद ये किशोर मछलियाँ तटीय समुद्र के नर्सरी स्थानों से वापस गहरे समुद्र में जाती ½ +É® ® ¨ÉUÊ±ÉªÉÉ EÒ ¨ÉÉÎiºªÉEÒ ¨É +{ÉxÉÉ ªÉÉMÉnÉxÉ EÒ®iÉÒ ½*

(¨ÉÉMÉ±É® +xÉºÉvÉÉxÉ EÒxp EÒ Ê®{ÉÉ]ç)

ºÉ¨Épी घÉÉbÉ {ÉÉ±ÉxÉ ¨É बेहत्तर खाद्य EÒ रूप ¨É VÉÒÊ´ÉiÉ EÒ{ÉÒ{ÉÉb

ÊSÉÊEÒVÉ¨É +xÉºÉvÉÉxÉ EÒxp ¨É ºÉ¨Épी PÉÉbÉ EÒ Êb¦ÉEÒ {ÉÉ±ÉxÉ EÒ Jãt EÒ °ü{É ¨É EÒ{ÉÒ{ÉÉb (ÊJ]¨ÉÉ®]ÉÊxÉ]ÉÒ +É® ºªÉbÉbªÉÉ{]ÉÒºÉ) ºÉÊ{EÉ (ÊCÉ{ÉÉ) =ªÉÉMÉ ÊEÒªÉÉ MÉªÉÉ EÒ{ÉÒ{ÉÉb EÒ ºÉ¨ÉÉ{EÉ ºÉ ªÉ½ Ê®{ÉÉ]Ç =ºÉEÒ ºÉ¨ÉÉ{EÉ ºÉ ªÉ½ EÒ ªÉ½

रोटिफर/ आर्टीमिया मिश्रण से खिलाए हुए समुद्री घोडों की बढ़ती (बाएं ओर) और कोपीपोड से ÊJÉ±ÉÉB ½B ºÉ¨Ép PÉÉb (nÉB +É®)

ºÉÉ®EÉÒ{ÉÉb]ºÉ) ={ÉªÉÉHÒ EÒ®EÒ {É®ÒIÉhÉ EÒ®xÉ पर रोटिफर और आर्टीमिया जैसे परंपरागत जीवित खाद्यों की अपेक्षा बेहत्तर अतिजीविवतता, बढ़ती (23 मि.मी. की कुल लंबाई (टी एल) और 10 दिनों में 16 मि.मी. की कुल लंबाई) और बेहत्तर रंग पाए गए।

¨Éxäé ¶ÉÖÊkÉ ºÉÆºÉÉ®úÉ EòÉ ºÉÆEòiÉ

´ÉªÉÉ{ÉÉ®]õ¨É ÊxÉEò]õ ÊºlÉiÉ ÊnÉÉ VÉÉ (xÉxb´É±É) EòÉ {ÉÉ®SÉÉ±ÉxÉ Eò®xÉ ´ÉÉ±É मछुआरों को लगभग 47 से 61 मि.मी. के आकार और 22 से 31ग्रा. भार वाली करीब 2500-3000 मुक्ता शुक्तियाँ प्राप्त हुई। मछुआरों द्वारा 15 सितंबर, 2014 को किए गए परिचालन में केकड़े और अन्य प्राणिजातों Eò ºÉÉlÉ <xÉEòÉ ¦ÉÒ É´ÉÉ±É ÉMÉªÉÉ +É® <xÉ ¶ÉÉÊHòªÉÉ EòÉ iÉ]õ {É® ±ÉÉªÉÉ MÉªÉÉ, ±ÉÉEòxÉ ¶ÉÉÊHòªÉÉ EòÉ स्रोत स्थान बताने में मछुआरे विमुख थे। <ºÉ ºÉ ªÉ½ ºÉEòiÉ Ê¨É±ÉiÉÉ ½ ÊEò <ºÉ IÉjÉ Eò चारों ओर मुक्ता शुक्ति का समृद्ध स्रोत है और

शुक्तियों को पिंजरों में संभरित किया जाता है

¦ÉÉ´ÉÒªÉ ¨É ¶ÉÉÊHò ºÉºÉiÉ®úÉ Eò ´ÉÉºiÉÉ´ÉEò ºlÉÉxÉ Eò पर्यवेक्षण और आकलन के लिए स्थान अंकन

शुक्तियों का ढेर

की सुविधा बनायी जानी चाहिए। शुक्तियों को तुरंत ही फार्म में लाकर पिंजरों में डाला दिया ±ÉÉEòxÉ VªÉÉnÉ n® iÉEò iÉ]õ {É® JÉ±ÉÉ ®½xÉ की वजह से मर गयीं।

(+É<. VÉMÉnÒ¶É, BxÉ. VÉºÉÉ®ÉVÉ, VÉ.{ÉnÂ¨ÉxÉÉ¦ÉxÉ +É®]Õ. ¨ÉÉ½xÉ®ÉVÉ,]É]EòÉÉ®xÉ +xÉºÉvÉÉxÉ EòxpÉ EòÒ Ê®{ÉÉ]Â)

Eò¹ÉÉ ºÉ{ÉÉ¶ÉÉ ºÉ ¤Éb÷É {ÉEòc÷

¨ÉÉ±ÉÉ® +É® =b{ÉÒ ºÉ¨ÉÖp iÉ]õ {É® +MÉºiÉ महीने के अंतिम सप्ताह से लेकर बडी जालाक्षि युक्त कोष संपाशों (कोटिबाले) का ÊxÉªÉÉ¨ÉiÉ °ü{É ºÉ {ÉÉ®SÉÉ±ÉxÉ nJÉÉ VÉÉiÉÉ ½* {ÉÉ®SÉÉ±ÉxÉ Eò |ÉÉ®¦É ¨É iÉÉ®É±ÉªÉÉ EòÒ +SUÒ पकड़ प्राप्त हुई और बाद में बांगडों की भी। <xÉ VÉÉ±ÉÉ ºÉ É´ÉÉ¶ÉÉ®hÉÒªÉ ¨ÉÉjÉÉ ¨É]Õ¬xÉÉ +É® EòÉ®ÉVÉb ¨ÉUÉ±ÉªÉÉ EòÉ ¦ÉÒ +´ÉiÉ®hÉ ÊEòªÉÉ VÉÉiÉÉ ½* BEò ®ÉSÉEò +ÉEò±ÉxÉ ªÉ½ ½ ÊEò BEò±É परिचालन से 1.5 टन के भार तक बडे आकार ´ÉÉ±ÉÒ Ê¶ÉMÉÉ]õÒ ¨ÉUÉ±ÉªÉÉ (+É®ªÉºÉ VÉÉiÉ) EòÉ +´ÉiÉ®hÉ ¦ÉÒ <ºÉ VÉÉ±É ºÉ ÊEòªÉÉ MÉªÉÉ ½* ªÉ½ भी महत्वपूर्ण है कि कोष संपाशों द्वारा पिछले डेढ़ दशकों से लेकर शिंगटियों के अंडशावकों +É® +bÉ EòÉ É´ÉxÉÉ¶ÉEò ÉnÉ½xÉ ÊEòB VÉÉxÉ से इनकी जीवसंख्या में घटती हुई है कि इस VÉÉÊiÉ EòÒ ºÉÆ®IÉiÉ ½É*

मांगलूर में कोष संपाश द्वारा अवतरण की गयी Ê¶ÉMÉÉ]Õ ¨ÉUÉ±ÉªÉÉ EòÒ {ÉEòc

¤ÉÖ±É +ÉxÉÉªÉxÉ {ÉÊ®SÉÉ±ÉxÉ ºÉ ÊEòÉ¶ÉÉ® ¨ÉUÉ±ÉªÉÉ EòÉ +´ÉiÉ®hÉ

कर्नाटक के समुद्र तट पर मानसून के मत्स्यन रोध के तुरंत बाद अगस्त-सितंबर महीनों के दौरान बुल ट्रोलिंग या द्वय आनायन प्रारंभित किया जाता है। पहले 10-15 फातम की गहराई के तटीय समुद्र में आनायन किया जाता था, बाद में गहरे समुद्री IÉjÉÉ iÉEò É´ÉºiÉÉiÉ ÊEòB VÉÉxÉ ±ÉMÉÉ* ÊxÉªÉÉ¨ÉiÉ इंजन (144 एच पी) और स्पीड इंजन (350 एच पी से ऊपर) युक्त यानों द्वारा बुल आनायन ÊEòªÉÉ VÉÉiÉÉ ½* <ºÉ iÉ®½ Eò +ÉxÉÉªÉxÉ ºÉ ºÉÆVÉÉ®hÉÒªÉ ÎºÉ´ÉbÉ EòÉ ±ÉÎIÉiÉ Eò®iÉ ½* É¡ò® भी इस वर्ष तटीय परिचालनों में छोटे वेलापवर्ती मछलियाँ जैसे ÉmÉººÉÉ VÉÉÊiÉ, +xÉbÉx]ÉÆº]É¨ÉÉ SÉÉEòxbÉ, श्वेतबेट, मुल्लन और रोक कोड्स के किशोर, पाम्फ्रेट्स, सुरमई और बांगडा बडी मात्रा में उपस्थित थीं। बाद में स्क्विड भी अधिक मात्रा में पायी गयीं।

बुल आनायकों द्वारा अवतरण की गयी क्वीनफिश के किशोर

बुल आनायन द्वारा अवतरण की गयी स्क्विड और कटिलफिश के किशोर

¨ÉÉ±ÉÇ ¨É ªÉÆjÉÒEÞòiÉ ¤É½ÖÉÊnù´ÉºÉÒªÉ Ê¤ÉxnÖù] ÊMÉ±ÉVÉÉ±É (B¨É b÷Ò VÉÒ BxÉ) uÉ ¨ÉcÉºÉÉMÉ®úÒªÉ ÊxÉ±ÉÊ¨ÉiÉ+ÉÆ EòÒ +SUôÒ {ÉEòc÷

ºÉÉ धारणतया बहुदिवसीय गिलजाल {ÉÊ®SÉÉ±ÉxÉ nÊIÉhÉ iÉÉ¨É±É xÉÉb÷ +É® केरल के कर्मीदल द्वारा किया जाता है और यह परिचालन कर्नाटक के समुद्र गिरी क्षेत्रों में मत्स्यन करने के लिए प्रसिद्ध है। पकड़ में मुख्यतः बडे आकार वाले येलोफिन ट्यूना, सुरा, डोलफिनफिश, सेइलफिश, बिलफिश और अन्य गहरे सागर की मछलियाँ मौजूद ½* MÉ½®ú ºÉ¨Ép ¨É ¨ÉiºªÉxÉ Eò®úxÉ EòÒ IÉ¨ÉiÉÉ नहीं होने वाले स्थानीय मछुआरों के साथ संघर्ष ½ÉxÉ EòÒ ´ÉVÉ½ ºÉ ¨ÉÆMÉ±ÉÚ®ú EòÉ ¨ÉÉÊ±ÉE ÷ +É® ¨ÉÉ±{É ¨É {ÉEòb÷ EòÉ +´ÉiÉ®úhÉ Eò®úxÉ EòÒ +xÉ¨ÉÊiÉ नहीं दी गयी। लेकिन इस वर्ष माल्पे में इन नावों को अपनी पकड़ का अवतरण करने की अनुमति दी गयी और सितंबर, 2014 से लेकर बडे आकार वाली मछलियों की बडी मात्रा ¨É +´ÉiÉ®úhÉ ÊEòªÉÉ MÉªÉÉ* ´ÉÉÊnÉ½xÉ EòÉ ¨ÉJªÉ साधन बडी जालाक्षि वाले गिलजाल होने पर भी बडी वेलापवर्ती मछलियों को बडी मात्रा में {ÉÉB VÉÉxÉ ´ÉÉ±É]ÉÆ±É ±ÉÉ<xÉ EòÉ {ÉÊ®SÉÉ±ÉxÉ ¦ÉÒ ÊEòªÉÉ VÉÉiÉÉ ½*

(´ÉÉMÉ±É®ú +xÉºÉÆvÉÉxÉ Eäxp Eò ÊÆ®{ÉÉ]Ç)

]Ú]ÒEòÉÊ®úxÉ Eò iÉ]õ ºÉ ±ÉÉB MÉB EòÉÊ¤ÉªÉÉ ¨ÉUô±ÉÒ ®úÉÊSÉºÉxÉ]ÅxÉ EòxÉÉb÷¨É Eò EòÉEòÉ±É ¨É Ê´ÉEÞòÊiÉ

]ू टिकोरिन तट की ड्रिफ्ट गिलजाल ¨ÉÉÎiºªÉEòÒ Eò ÊxÉªÉÉ¨ÉiÉ +´ÉiÉ®úhÉ EòÉ आकलन करने पर, दिनांक 10 जून, 2014 के अवतरण में एक विरूप कोबिया राचिसेन्ट्रन EòxÉÉb÷¨É, ÊVÉºÉ EòÉ ºlÉÉxÉÒªÉ °ü{É ºÉ "Eòb±É´É®úÉ±É" EòÉ½É VÉÉiÉÉ ½, EòÉ {ÉÉªÉÉ MÉªÉÉ* <ºÉ xÉ¨ÉxÉ EòÒ कुल लंबाई 92 से.मी. और भार 4.0 कि. OÉÉ. lÉÉ* <ºÉ xÉ¨ÉxÉ ¨É +lÉÉ¨É Ê´ÉºÉÆMÉiÉÉ +É® +ºÉÉvÉÉ®úhÉ {ÉÚUô {ÉÆJÉ ¦ÉÒ Ê´ÉEÞòºÉÊiÉ ½+É lÉÉ* ºÉ¨ÉÉxªÉiÉ: |ÉÉEÞòÊiÉEò ¨ÉUôÊ±ÉªÉÉ EòÒ +{ÉiÉÉ ´ÉÉÊhÉÎVªÉEò iÉÉ®ú {É® {ÉÉ±ÉÒ EòÒ MÉªÉÒ ¨ÉUôÊ±ÉªÉÉ ¨É <ºÉ iÉ®ú½ EòÒ Ê´ÉEÞòÊiÉªÉÉB nJÉÒ VÉÉiÉÒ ½* अक्सर ये डिंभकीय अवस्था में प्रकट होने वाली MÉ® PÉÉiÉEò Eò°üÊiÉªÉÉB ½, Ê¡ò® ¦ÉÒ ªÉ ¨ÉUô±ÉÒ EòÒ बढ़ती दर पर प्रभावित होती हैं और इन की ´ÉVÉ½ ºÉ =i{ÉÉn ¨É±ªÉ ¨É PÉ]iÉÒ ¦ÉÒ ½ÉiÉÒ ½*

(B±É.®ÊVÉiÉ, Eò.{ÉÒ.EòÉxiÉxÉ +É® Eò.¨É¶ÉÒMÉxÉ,]Ú]ÒEòÉ®úxÉ +xÉºÉÆvÉÉxÉ Eäxp Eò ÊÆ®{ÉÉ]Ç)

टूटिकोरिन तट से प्राप्त विरूप कोबिया मछली

Ê´É¶ÉÉJÉÉ{É]Ødù]hÉ¨É Eò ¨ÉÉiºªÉ{ÉÉ±ÉxÉ¨É ¨É +É±ÉÒ´É राइडली कच्छप ±ÉÊ{ÉbÉSÉÉ±ÉºÉ +ÉÊ±É´ÉÉºÉªÉÉ (BºÉÉ±ÉÉ]ºÉ, 1829) EòÉ ¶É´ÉxÉ

Ê´É ¶ÉÉJÉÉ{É]Ødù]hÉ¨É Eò ¨ÉÉiºªÉ{ÉÉ±ÉxÉ¨É Eò ®iÉÒ तट पर दिनांक 3 जुलाई, 2014 को nÉ ¨ÉÞiÉ +É±ÉÒ´É ®É<b±ÉÒ EòSUô{É EòÉ nJÉÉ गया। इनके वक्र कारापेस की लंबाई क्रमशः 60 से.मी. और 85 से.मी. और भार 50 कि. ग्रा. और 70 कि.ग्रा. थे। शायद ये बोट के |ÉÉ{É±É®ú Eò +PÉÉiÉ ºÉ ¨É®ú MÉB ½ÉMÉ* +É< यू सी एन लाल सूची द्वारा ओलीव राइडली EòSUô{É EòÉ "JÉiÉ®ú ¨É {Éb MÉB" Eò °ü{É ¨É वर्गीकृत किया जाता है और भारत के वन्य जीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के परिशिष्ट I ¨É ´ÉMÉÒEÞòiÉ ÊEòªÉÉ MÉªÉÉ ½* <xÉ½ ºÉÒ +É<]Ò ई एस (कन्वेन्शन ऑन इन्टरनेशनल ट्रेड इन एन्डेन्जेर्ड स्पीशीस ऑफ वाइल्ड फ्लोरा एन्ड ¡òÉèxÉÉ) Eò {ÉÊ®ú¶ÉÉ¹]õ I ¨É +É® EòxÉ´É¶ÉxÉ +ÉxÉ ¨ÉÉ<OÉä]®ú¸ ºÉÒ¶ÉÒºÉ Eò {ÉÊ®ú¶ÉÉ¹]õ I +É® II ¨É ºÉÆSÉÒEÞòiÉ ÊEòªÉÉ MÉªÉÉ ½*

(´ÉÒ.उ¨ÉÉ ¨ÉÉ½¶É, |ÉÊiÉ¦ÉÉ ®VÉxÉ ¤É½®É, ¶ÉÉ¦ÉxÉ{ÉÉ PÉÉ¹É +É® ±ÉÊ´ÉªÉxÉ B±É.Bb´Éb, Ê´É¶ÉÉJÉÉ{É]Ødù]hÉ¨É IÉjÉÒªÉ Eäxp Eò ÊÆ®{ÉÉ]Ç)

Ê´É¶ÉÉJÉÉ{É]Ødù]hÉ¨É Eò ¨ÉÉiºªÉ{ÉÉ±ÉxÉ¨É Eò ®iÉÒ iÉ] {É® देखा गया मृत ओलीव राइडली कच्छप

ºÉÒ B¨É BºÉ +ÉÒ +É<, EÞÉSSÉÒ ¨É +¹]¨ÉÖbÒ ZÉÒ±É EÉÒ ¶ÉÉì]-xÉEÒ ºÉÒ{ÉÒ ¨ÉÉÎiºªÉEÒ EÒ B¨É BºÉ ºÉÒ |É¨ÉÉhÉÒEÒ®hÉ EÒ ±ÉÉ¦É {É® EÞÉªÉ¶ÉÉ±ÉÉ

डॉ.ए.गोपालकृष्णन, निदेशक, सी एम एफ आर आइ कार्यशाला के प्रतिनिधियों का संबोधन करते हुए

सी एम एफ आर आइ, कोच्ची ने दिनांक 4 सितंबर, 2014 को अष्ट मुडी झील की शोर्ट-नेक सीपी मात्स्यिकी के एम एस सी (मराइन स्टुवार्डशिप काउन्सिल) प्रामाणीकरण के लाभ पर परामर्श कार्यशाला आयोजित की गयी। कार्यशाला का लक्ष्य B¨É BºÉ ºÉÒ |ÉÉ¨ÉÉhÉÒEÞ®hÉ {É® +´ÉMÉÉÊ½ जगाना और सरकारी / निजी सेक्टरों (º¨É¡Ò JÉÉt =tÉMÉ) ¨É +xÉºÉÆvÉÉxÉ ºÉºlÉÉxÉ +É® ´ªÉ´ÉºÉÉªÉEÞÉ®É EÉ BEÒ ºÉÉlÉ ±ÉÉxÉÉ, प्रामाणीकरण के कार्यों में हुई प्रगतियों और <ºÉEÒ +É´É¶ªÉEÞiÉÉ +É® ¦ÉÉ´ÉÒ¹ªÉ EÒ Ê´ÉEÞÉºÉ EÒ लिए नीति के रूपायन पर चर्चा करना था।

मात्स्यिकी एवं समुद्री संवर्धन के क्षेत्रों के आमंत्रित वैज्ञानिकों/ अनुसंधेताओं/ कार्मिकों/ =tÉMÉ xÉ ¦ÉÉMÉ ÊãÉªÉÉ +É® <xÉ ¨É |É¨ÉJÉ bÉ.B.MÉÉ{ÉÉ±ÉEÞ¹hÉxÉ, ÊxÉn¶ÉEÒ, ºÉÒ B¨É Bº¡Ò +É® +É<, bÉ.EÒ.EÒ.+{{ÉEÒ]Ö]xÉ, ¸ÉÒ Ê´ÉÊxÉn मलयिलेत, डब्लियु डब्लियु एफ-कोच्ची, ¦ÉÉ®iÉ, bÉ.EÒ.BºÉ.¨ÉÉ½¨ÉÚn, +vªÉIÉ, B¨É Bº¡Ò डी, सुश्री षासी, एम पी ई डी ए, कोच्ची, श्री B¨É.iÉÉVÉnÒxÉ, ®ÉVªÉ ¨ÉÉÎiºªÉEÒ Ê´É¦ÉÉMÉ, ¸ÉÒ टी.एन.वेणुगोपालन, महा प्रबंधक, आर एफ एक्स्पोर्ट्स, एरमल्लूर, श्री डी.डी.डोमिनिक, महा प्रबंधक, एस्मारियो सीफुड्स, कोल्लम, ºÉ¸ÉÒ B¨É.BºÉ.¸ÉÒVÉÒ, {ÉÉ®ÉMÉiÉ ºÉÒ¡öb¸É प्रा.लिमिटड, आलप्पुषा, डॉ.जे.बिन्दु और डॉ.फेमीना हसन, वरिष्ठ वैज्ञानिक गण, सी +É< Bº¡Ò]Ò, EÞÉSSÉÒ +É® ºÉÒ B¨É Bº¡Ò +É® आइ के वैज्ञानिक गण थे।

चर्चा के उपरांत उभरे गए सिफारिश और कार्रवाई के मुद्दे नीचे दिए जाते हैं:

1. सहभागिता शासी परिषद (अष्टमुडी सीपी शासी परिषद) द्वारा प्रबंधित मात्स्यिकी देश में ही पहली बार है। भारत की उच्च मूल्य ´ÉÉ±ÉÒ ±ÉPÉ {É¨ÉÉxÉ EÒ +xªÉ ¨ÉÉÎiºªÉEÒªÉÉ EÒ Ê±ÉB ªÉ½ BEÒ |ÉÊiÉ¨ÉÉxÉ ½*
2. सभी खरीदी एजेन्टों और निर्यातकों को 1400 से अधिक संख्या के सीपियों के निर्यात के प्रतिबंध का पालन करना चाहिए। मछुआरों को केवल 35 मि.मी. +ÉEÉ® EÒ VÉÉ±ÉÉÊIÉ ´ÉÉ±É VÉÉ±ÉÉ EÉ ={ÉªÉÉMÉ EÞ®xÉÉ SÉÉÊ½B +É® VÉÉ±É EÉ ¶ÉÉHÒ ºÉ É½±ÉÉxÉÉ SÉÉÊ½B iÉÉÊEÒ UÉ]Ò +ÉEÉ® वाले सीपी बाहर जा सके।
3. सीपियों का न्यूनतम नियामक आकार (एम एल एस) 20 मि.मी. (अग्र से पश्च तक EÒ ºÉÒ¨ÉÉ-B {É® B¨É EÉ ¨ÉÉ{ÉxÉ) iÉªÉ ÊEªÉÉ गया है। एम पी ई डी ए को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि 1400 से अधिक संख्या की सीपियों का निर्यात नहीं किया जाता ½। मेसेर्स एस्पारियो, कोल्लम इस सीपी के मुख्य निर्यातक है और वे यह सुनिश्चित EÞ® ÊEÒ ºÉÆÊ{ÉªÉÉ EÒ ºÉÆJªÉÉ +É® +ÉEÞÉ® पर परिषद के निर्णयों का कड़ा पालन ÊEªÉÉ VÉÉiÉÉ ½*
4. यह सुझाया गया कि पडन्ना, कासरगोड में पालित शंबुओं के लिए की गयी कार्रवाई के अनुरूप यूरोप में सीपी का निर्यात सुगम बनाने हेतु अष्टमुडी झील में कवचमछली (सीपी) बढ़ने वाले जलक्षेत्र का ई यू के ¨ÉÉxÉnb EÒ +xÉºÉÉ® ±ÉMÉÉiÉÉ® ¨ÉÉxÉÒ]®xÉ करने के लिए एम पी ई डी ए द्वारा +É´É¶ªÉEÞ EÞn¨É =`ÉªÉ VÉÉxÉ SÉÉÊ½B*
5. एम एस सी प्रामाणीकरण से छोटे गर्दन ´ÉÉ±É ºÉÒ{ÉÒ EÉ |ÉÒ¨ÉªÉ¨É ¨É±ªÉ |ÉÉ{iÉ EÞ®xÉ की वजह से एम पी ई डी ए को सभी विपणन / निर्यात मेलाओं में भारत के इस उत्पाद की उपलब्धता सुनिश्चित करना चाहिए। निर्यातकों को सीपी से नए समुद्री JÉÉt ¨ÉÚ±ªÉ ´ÉÉÊvÉiÉ =i{ÉÉn +É® ºÉÒ{ÉÒ ºÉ +vÉÉ EÞ´ÉSÉ =i{ÉÉn ÊÊEÉºÉiÉ EÞ®xÉ EÒ ±ÉB B¨É पी ई डी ए / सी आइ एफ टी से मदद ±ÉxÉÉ SÉÉÊ½B*
6. भारत से मान्यता प्राप्त तीसरे पक्ष के प्रमाणकर्ता सहित प्रशिक्षित प्रमाणकर्ता उपलब्ध है तो एम एस सी प्रामाणीकरण EÒ ±ÉÉMÉiÉ EÞ¨É EÒ VÉÉ ºÉEÞiÉÒ ½* +iÉ: ¨ÉÉÎiºªÉEÒ +xÉºÉÆvÉÉxÉ B´É Ê¶ÉIÉÉ ºÉºlÉÉxÉÉ EÉ <ºÉ ºÉÉvªÉiÉÉ {É® JÉÉVÉ EÞ®xÉÉ +É´É¶ªÉEÞ ½*

iÉÉ®±ÉÒ {É® Ê´ÉSÉÉ® Ê´É¨É¶ÉÇ ºÉjÉ

सी एम एफ आर आइ के वेलापवर्ती मात्स्यिकी प्रभाग द्वारा वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र में 9 से 11 सितंबर, 2014 के दौरान भारतीय तारली पर विचार विमर्श ºÉjÉ +ÉªÉÉÉÊVÉiÉ ÊEªÉÉ MÉªÉÉ* =Hò |É¦ÉÉMÉ EÉ वैज्ञानिकों ने सत्र में भाग लिया। देश की पमुख मात्स्यिकियों में एक है वेलापवर्ती मात्स्यिकी और इस मात्स्यिकी पर अब तक किए गए अनुसंधान कार्यों पर पुनरीक्षण करने, और इस मात्स्यिकी पर उभरकर आने वाले कई +xÉºÉÆvÉÉxÉ {É®EÒ |É¶xÉÉ EÒ ºÉ¨ÉÉvÉÉxÉ EÒ °üÉ ¨É अल्पकालीन समयबद्ध कार्यक्रम शुरू करने के उद्देश्य से विचार विमर्श सत्र आयोजित किया गया। चर्चा के दौरान भागीदारों की सक्रिय आपसी विनियम, ज्ञान के अंतराल की पहचान +É® |ÉÉlÉÊ¨ÉEÞiÉÉ +vÉÉ® {É® +É® ÊxÉÊ¶SÉiÉ ºÉ¨ªÉ के अंदर की जाने वाली कार्यविधियों का ºÉÆSÉÉEÞ®hÉ ÊEªÉÉ MÉªÉÉ*

¦ÉÉ®iÉÒªÉ iÉÉ®±ÉÒ {É® Ê´ÉSÉÉ® Ê´É¨É¶ÉÇ ºÉjÉ EÉ oÉªÉ

ºÉ¨ÉÖद्रÒ पंखमछ±ÉÒ +ÉÉèर Eò´Éचî¨ÉछÉ±ÉÒ Eò ºÉiÉÉÊiÉ उiपÉÉदxÉ पर ग्रÉÒष्¨ÉEòÉ±ÉÒxÉ पÉÉठ्यक्रò¨É

Eòxpìà ºÉ¨Épò ¨ÉÉÎiºªÉEòò +xÉºÉvÉÉxÉ Eòxpi (ºÉÒ B¨É B¡ò +É® +É<) Eò ¨Éb{É¨É क्षेत्रीय केन्द्र में 20 अगस्त से 9 सितंबर 2014 तक की अवधि के दौरान “समुद्री पखमछली +É® Eò´ÉSÉ ¨ÉUi±ÉÒ Eò ºÉiÉ±ÉÒ =i{ÉÉnxÉ ¨É

¦ÉÉMÉÒnÉ® +b¶ÉÉ¨ÉEò {ÉÉ±ÉxÉ Ê{ÉVÉ® EòÉ ÉxÉ®ÒIÉhÉ Eò®iÉ ½B

भागीदार पोम्पानो ब्रूडर का टैगन करते हुए

ग्रीष्मकालीन पाठ्यक्रम के सहभागियों का दृश्य

|ÉÉPÉÉÊMÉEòÒ Ê´ÉEòÉºÉ" Ê´É¹ÉªÉ {É® ¦ÉÉ®iÉÒªÉ EÞòÊ¹É अनुसंधान परिषद द्वारा प्रायोजित ग्रीष्मकालीन पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। त्रिपुरा, केरल, कर्नाटक, आंध्रा प्रदेश, महाराष्ट्र और तमिल नाडु से कुल 22 व्यक्तियों ने पाठ्यक्रम ¨É ¦ÉÉMÉ Ê±ÉªÉÉ*

डॉ.पी.एस.बी.आर.जेम्स, भूतपूर्व निदेशक, सी एम एफ आर आइ ने पाठ्यक्रम EòÉ =nPÉÉ]xÉ ÊEòªÉÉ* bÉ.VÉÒ.MÉÉ{ÉÉEò¨ÉÉ®, +vªÉIÉ, समुद्री संवर्धन प्रभाग एवं प्रभारी वैज्ञानिक,

डॉ.पी.एस.बी.आर.जेम्स, भूतपूर्व निदेशक, सी एम एफ आर आइ द्वारा पाठ्यक्रम मैनुअल का विमोचन

मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र कार्यक्रम में अध्यक्ष रहे। डॉ.एम.कार्तिकेयन, मात्स्यिकी उप निदेशक, मात्स्यिकी विभाग, तमिल नाडु ने बधाई भाषण ÊnªÉÉ* +{ÉxÉ =nPÉÉ]xÉ ¦ÉÉ¹ÉhÉ ¨É bÉ.VÉ¨ºÉ xÉ यह व्यक्त किया कि अब समुद्री खाद्य का |É¨ÉJÉ ªÉÉMÉnÉxÉ |ÉEòÉ¿hÉ ¨ÉÉÎiºªÉEòò ½ÉxÉ {É® भी समुद्री संवर्धन से उत्पादन बढ़ाए जाने से ही देश में समुद्री खाद्य की बढ़ती हुई मांग की पूर्ति की जा सकेगी। इस संदर्भ में उन्होंने ज़ोर दिया कि तकनीकी मानव शक्ति बढ़ाए जाने के लिए ग्रीष्मकालीन पाठ्यक्रम सहायक निकलेगा। डॉ.ए.के.अब्दुल नाज़र, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं पाठ्यक्रम निदेशक ने स्वागत भाषण और डॉ.आर.जयकुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं पाठ्यक्रम समायोजक ने कृतज्ञता अदा ÊEòªÉÉ*

ग्रीष्मकालीन पाठ्यक्रम के दौरान समुद्री पखमछली ब्रूडस्टॉक (अंडशावक) विकास, पुनरुत्पादन शरीरक्रिया एवं होर्मोनल प्रेरणा, सूक्ष्मशैवाल, रोटिफर, कोपीपोड, क्लाडोसिरन और आर्टीमिया के जीवित आहार संवर्धन, जीवित खाद्य संवर्धन, डिंभक पालन नयाचार, पखमछली और कवचमछली के नर्सरी पालन तकनीक और पालन प्रणालियाँ पर वैज्ञानिकों और आमंत्रित विख्यात विशेषज्ञों द्वारा कुल 37 भाषण प्रस्तुत किए गए। कैनुलेशन और गोनाडल बयोप्सी के परीक्षण, पी आइ टी टैगिंग तकनीक, सूक्ष्मशैवाल, रोटिफर, क्लाडोसिरन और आर्टीमिया संवर्धन पर सहभागियों को ´ªÉÉ´É½ÉÉ®Eò |ÉÊ¶ÉIÉhÉ |ÉnÉxÉ ÊEòB MÉB* <ºÉ Eò +±ÉÉ´ÉÉ ¦ÉÉ®iÉÒªÉ Eò ÊÉB Eò´ÉSÉ Eò±ÉÉ =tÉ¨ÉÉ, Ê{ÉVÉ®É ¨ÉUi±ÉÒ {ÉÉ±ÉxÉ ºlÉ±ÉÉ, ºÉ¨Épò ¶ÉèÉ±É {ÉÉ±ÉxÉ ºlÉ±ÉÉ B´É |ÉºÉºEò®hÉ BEòÉ, पाक उपसागर और क्रूसदी द्वीप के प्रवाल रीफ आवासों में खोज पर्यटन भी आयोजित ÊEòªÉÉ MÉªÉÉ*

+ÉxÉÉªÉ रोध पÉxÉरीक्षण ÊरपÉ]Ç EòÉ प्रºiÉiÉÒEòरण

{É¶ÉÉ{ÉÉ±ÉxÉ, bä®Ò B´É ¨ÉÉÎiºªÉEòò Ê´É¦ÉÉMÉ (bÒ B BSÉ bÒ B¡ò), EÞòÊ¹É ¨ÉjÉÉ±ÉªÉ, ¦ÉÉ®iÉ ºÉ®EòÉ® xÉ +Énä¶É ºÉ. 30035/15/97मा. (टी-1) दिनांक 7 मई 2013 के द्वारा आनाय रोध की अवधि का पुनरीक्षण करने और और परिरक्षण एवं प्रबंधन पहलुओं के प्रबलीकरण के Ê±ÉB +ÉMÉ Eò ={ÉÉªÉ ºÉZÉÉxÉ Eò +ÊvÉnä¶É Eò ºÉÉlÉ BEò iÉEòxÉÒEòÒ ºÉÊ¨ÉÊiÉ (]Ò ºÉÒ) EòÉ MÉ`xÉ ÊEòªÉÉ* ºÉÊ¨ÉÊiÉ EòÒ +vªÉIÉ ÊxÉnä¶ÉEò, ºÉÒ B¨É B¡ò +É® +É< +É® ºÉnºªÉ श्री बी.विष्णु भट्ट, मात्स्यिकी विकास आयुक्त, नई दिल्ली, तमिल नाडु और कर्नाटक राज्य मात्स्यिकी विभागों के निदेशक, वाइ.एस.यादवा, निदेशक, बी ओ बी पी-आइ जी ओ, चेन्नई, डॉ.ई.विवेकानन्दन, सेवामुक्त वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ, डॉ.लीला एड्विन, प्रधान वैज्ञानिक, सी आइ एफ टी, श्री रामभाइ पाटील, अध्यक्ष, राष्ट्रीय मछली कार्यकर्ता फोरम, मुम्बई और महा निदेशक, भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण सदस्य सचिव थे। डॉ.पी.यु.ज़क्करिया और डॉ.विजयकुमारन, प्रधान वैज्ञानिक गण, सी एम एफ आर आइ को भी समिति के सदस्यों के रूप में नामित किया गया। स्टेकहोल्डरों के साथ कई बैठकों के आयोजन के बाद तकनीकी समिति ने सितंबर, 2014 को रिपोर्ट प्रस्तुत की।

ºÉ¨ÉÖpÉÒ ¶Éè´ÉÉ±É {É® ºÉ]EòvÉÉ®EòÉå EòÒ ¤ÉèsEò

ºÉÒB¨ÉBxÉ+É®+É< ¨Éhb{É¨É IÉäjÉÒªÉ केन्द्र में 24 जुलाई 2014 को ºÉ¨ÉÖpÒ ¶Éè´ÉÉ±É EòÒ JÉäiÉÒ Eò®xÉä ´ÉÉ±ÉÉå, ºÉÆºÉÉvÉEò Eò®xÉä ´ÉÉ±ÉÉå, |ÉºÉÆºEò®hÉ =tÉÉä, {ÉÉÊ®´ÉÉ®IÉhÉ कार्मिकों और अनुसंधानकारों को मिलाकर पणधारियों की बैठक आयोजित की गयी। चर्चाओं से उभरकर आए सुझावों में से एक प्रमुख सुझाव यह था कि अच्छी बढ़ती के लिए उचित तापमान होने वाले थोड़ा गहरे समुद्र में EòÉ{{ÉÉ¡ÉÊ<EòºÉ +±´ÉÉ®ÉWÉä EòÒ JÉäiÉÒ EòÒ VÉÉxÉä ½* ºÉ¨ÉÖpÒ ¶Éè´ÉÉ±É EòÒ |ÉÊ¶ÉIÉhÉ EòÉ±É VÉÉÒ EòÉ ÉÊ±ÉB रैफ्ट और मोनोलाइन जैसे पुराने तरीकों के ºlÉÉxÉ {É® xÉB iÉEòxÉÒEòÉå EòÉ |ÉªÉÉäMÉ ÉÊEòªÉÉ VÉÉ सकता है। बैठक में उभरकर आया एक और ºÉZÉÉ´É ªÉ½ lÉÉ ÉÊEò ºÉ¨ÉÖpÒ ¶Éè´ÉÉ±É EòÒ JÉäiÉÒ EòÉ कृषि पद्धति के अंदर लाया जाना चाहिए ताकि प्राकृतिक आपदा होने पर बीमा कवरेज मिल सकते है। बैठक के भागीदारों ने इच्छा प्रकट की कि वर्ष में एक बार इस तरह की बैठक EòÉ ÉÊxÉªÉÉÊ¨ÉiÉ °ü{É ºÉ +ÉªÉÉäVÉxÉ ÉÊEòªÉÉ VÉÉxÉÉ SÉÉÉÊ½B iÉÉÉÊEò ´É +{ÉxÉÉ ÉÊ´ÉSÉÉ®Éå EòÉ ÉÊ´ÉÉÊxÉªÉ Eò® ºÉEåò +Éè® ºÉ¨ÉÖpÒ ¶Éè´ÉÉ±É =tÉÉäMÉ ¨Éå ºÉÉ¨ÉxÉÉ Eò®xÉä ´ÉÉ±Éä ºÉ¨ÉºªÉÉ+Éå EòÉ ºÉ¨ÉÉvÉÉxÉ Eò® ºÉEåò*

समुद्री शैवाल पर पणधारियों की बैठक के दौरान चर्चा का दृश्य

ºÉ¨ÉÖpÒ EòEòÉäc÷Ò {É® {É®É¨É¶ÉÇ ¤ÉèsEò

ºÉÒB¨ÉBxÉ+É®+É< ¨ÉhbÉ{É¨É IÉäjÉÒªÉ केन्द्र में 14 अगस्त 2014 को समुद्री ककड़ी पर परामर्श बैठक आयोजित की गयी। बैठक में मात्स्यिकी विभाग, वन विभाग, EòÉºÉ]¨ÉÉ ¨ÉÉÊ®<xÉ {ÉÉÊ±ÉºÉ, ¦ÉÉ®iÉÒªÉ iÉ]®IÉEò, ¨ÉÚ+É®, ºÉ¨ÉÖpÒ JÉÉt ÉÊ´É{ÉhÉxÉEòÉÊ®ÉÉ +É® MÉè® सरकारी संगठनों से कुल 80 स्टेकहोल्डरों ने भाग लिया। डॉ.डी.बी.जेम्स, प्रधान वैज्ञानिक (सेवानिवृत्त) बैठक में अध्यक्ष रहे और तिरु. Eò.´ÉÉEò]¶ÉÉ +É< B¡ò BºÉ, ´ÉxÉ ºÉÆ®IÉEò ¨ÉÖJªÉ अतिथि थे। श्री आर.शरवणन, वैज्ञानिक एवं डॉ.पी.एस.आशा, प्रधान वैज्ञानिक, टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र द्वारा प्रस्तुतीकरण किए गए। चर्चाओं के उपरांत निम्नलिखित मुद्दे उभरकर +ÉB:

समुद्री ककड़ी के विदोहन पर वर्ष 2001 में लगाए गए रोध के परिणामस्वरूप वर्तमान जीवसंख्या का निर्धारण करने हेतु समुद्री ककड़ी की विभिन्न जातियों के विद्यमान जैवभार (किशोर/ प्रौढ़) का स्टॉक निर्धारण किया जाना चाहिए। सिर्फ 75 मि.मी. से बडे के आकार की समुद्री ककड़ियों का संग्रहण Eò®xÉä EòÒ +xÉÖ¨ÉÉÊiÉ nÉÒ +É® EòÉ¨É +ÉEòÉ® वालों का संग्रहण रोकना और सफलतापूर्वक प्रजनन और संपदा वर्धन साध्य करने के लिए +bVÉäxÉÉ Eò ¸ÉÉÒ EòÉ±É Eò nÉè®ÉxÉ ´ÉÉhÉÎVªÉEò प्रमुख समुद्री ककड़ी जातियों का मत्स्यन बंद करना। सी एम एफ आर आइ समुद्री ककड़ियों EòÒ SÉxÉÉå MÉªÉÒ VÉÉÉÊiÉªÉÉå Eò ºÉÆiÉÉÊiÉ =i{ÉÉnxÉ EòÉ मानकीकरण कर सकता है। जलकृषि द्वारा समुद्री ककड़ी उत्पादन की साध्यता पर पता ±ÉMÉÉxÉÉ Eò ÉÊ±ÉB {É®ÒIÉhÉÉi¨ÉEò {ÉÉ±ÉxÉ ÉÊEòªÉÉ VÉÉ सकता है। बैठक में भाग लिए गए मछुआरों ने समुद्री ककड़ियों के मत्स्यन रोध से उनकी आजीविका में हुई अवनति पर विवरण दिया और समुद्री ककड़ियों की तीन जातियों, ½É±ÉÉälÉÖÉÊ®ªÉÉ ºÉEòÉ¥ÉÉ, BSÉ.Î º{ÉxÉÉ¡ò®É +É® BÎC]xÉÉä{ÉÉ<MÉÉ BEòÉ<xÉÉ]ºÉ EòÉ ºÉÆºÉÉvÉhÉ Eò®xÉä ½iÉÖ ®ÉVªÉ ºÉ®EòÉ® ºÉ ÉÊ´ÉÉÊxÉªÉ¨ÉxÉ EòÒ ¨ÉÉÆMÉ EòÒ* <xÉ जातियों के प्रबंधन पर रूपरेखा विकसित करने के लिए मन्नार खाड़ी की समुद्री ककड़ियों के वितरण, उपलब्धता, प्रचुरता और जीवविज्ञानीय प्राचलों पर विस्तृत वैज्ञानिक अन्वेषण करने EòÉ ºÉZÉÉ´É ¦ÉÒ ÉÊnªÉÉ MÉªÉÉ*

डॉ.डी.बी.जेम्स परामर्श बैठक में विचार विनिमय करते हुए

EòÉ®´ÉÉ® +xÉÖºÉÆvÉÉxÉ Eòäxp ¨Éå ºÉ¨ÉÖpÒ VÉè´ÉÉ´ÉÉ´ÉvÉiÉÉ +Éè® VÉ±É´ÉÉªÉÖ {ÉÉÊ®´ÉiÉxÉ {É® ®É¹]ÅÒªÉ EòÉªÉ¶ÉÉ±ÉÉ

Eòäxpò ºÉ¨ÉÖpÒ ¨ÉÉÎiºªÉEòÒ +xÉÖºÉÆvÉÉxÉ ºÉÆºlÉÉxÉ EòÉ EòÉ®´ÉÉ® +xÉÖºÉÆvÉÉxÉ Eòäxp, कारवार में 21 और 22 मई 2014 को समुद्री जैवविविधता और जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की गयी। वैज्ञानिक सत्रों के दौरान भारत के विभिन्न भागों से 100 से अधिक वैज्ञानिकों ने भाग लिया और प्रवाल, ¨ÉÉìÉ +É® xÉnÒ¨ÉÖJÉ ºÉ{ÉÉnÉ+É EòÒ ºÉ¨ÉÖpÒ जैवविविधता, जलवायु परिवर्तन जैसे पहलुओं +É® +ÉÊVÉÉÊ´ÉEòÉ ºÉ¨ÉºªÉÉ+É {É® +{ÉxÉ +xÉÖºÉÆvÉÉxÉ {ÉÉ®hÉÉ¨É |ÉºiÉÖiÉ ÉÊEòB*

EòÉ®´ÉÉ® +xÉÖ. Eòäxp ¨Éå ®É¹]ÅÒªÉ EòÉªÉ¶ÉÉ±ÉÉ EòÉ où¶ªÉ

ºÉÖ®É{ÉÊ®®üIÉhÉ {É® +´ÉMÉÉc

ºÉÒ एम एफ आर आइ मुम्बई अनुसंधान EåÊp ¨Éå ºÉiÉ{ÉiÉÒ ¨ÉUÖ+É®É ºÉ½EÉ®Ò ºÉÆPÉ ÊxÉªÉ¨É]åb +É® ºÉiÉ{ÉiÉÒ ¨ÉUÖ´ÉÉ® ´ªÉ´ÉºÉÉªÉ कार्यकार सहकारी संस्था मर्यादित, सतपती के संयुक्त सहयोग से 8 अगस्त, 2014 को "¦ÉÉ®iÉÒªÉ ºÉ¨ÉÖp EòÒ ºÉÖ®É+Éå EòÉ {ÉÉ®®IÉhÉ" विषय पर अवगाह कार्यक्रम आयोजित किया MÉªÉÉ* ¸ÉÒ ®ÉVÉäp bÒ.MÉÉ´ÉiÉ, ¨ÉÉxÉxÉÒªÉ +ÉÊn´ÉÉºÉÒ Ê´ÉEòÉºÉ, ¸É¨É, EòÉ¨ÉÉxb BÉ®ªÉÉ Ê´ÉEòÉºÉ B´ÉÆ बागवानी का राज्य मंत्री, महाराष्ट्र सरकार xÉ ¨ÉUÖ+É®É xÉiÉÉ+É EòÒ ={ÉÎºlÉÊiÉ ¨ÉÆ +´ÉMÉÉ½ कार्यक्रम का उद्घाटन किया। डॉ.वीरेन्द्र वीर सिंह, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ मुम्बई अनुसंधान केन्द्र, मुम्बई कार्यक्रम में अध्यक्ष रहे। डॉ.जी.बी. पुरुषोत्तमा, वैज्ञानिक कार्यक्रम का संयोजक

सुरा परिरक्षण अवगाह कार्यक्रम का दृश्य

था और डॉ.वी.एस.सोमवंशी, भूतपूर्व, भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण, मुम्बई, श्री एस.जी.राजे, प्रधान वैज्ञानिक (सेवानिवृत्त) और डॉ.शोभा जो किषकूडन, वरिष्ठ वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ मद्रास अनुसंधान केन्द्र, चेन्नई ने भी विशेषज्ञ व्यक्तियों के रूप में भाग लिया। लगभग 150 लोगों ने अवगाह कार्यक्रम में ¦ÉÉMÉ Ê±ÉªÉÉ*

ºÉ¨ÉÖpÒ ¨ÉiºªÉxÉ ÊxÉªÉ¨ÉxÉ +ÊvÉÊxÉªÉ¨É {É® +´ÉMÉÉc EòÉªÉÇGòì¨É

B स ई ई टी टी प्रभाग ने सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ वर्केस एड्यूकेशन (सी बी डब्लियु ई) की सहकारिता से केरला मराइन फिशिंग

के एम एफ आर ए पर अवगाह कार्यक्रम का उद्घाटन

®MÉÖ±ÉÊ¶ÉxÉ +ÊvÉÊxÉªÉ¨É (Eò B¨É B¡ò +É® B) {É® अवगाह कार्यक्रम आयोजित किया। श्रीमती चिन्नम्मा धर्मन, पल्लिपुरम ग्राम पंचायत अध्यक्ष ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। के एम एफ +É® B Ê´ÉÊxÉªÉ¨ÉxÉ B´É nb, ºÉ¨ÉÖpÒ ºÉ®IÉÉ ={ÉÉªÉ, iÉ]ÒªÉ ºÉ®IÉÉ ={ÉÉªÉ +É® ¨ÉUÖ+É®É ºÉ¨ÉÖnÉªÉ तथा तटीय गाँवों की साफ-सफाई के लिए +É´É¶ªÉEò ºÉÉ´ÉvÉÉxÉ ={ÉÉªÉ +ÉÊn Ê´É¹ÉªÉÉå {É® ºÉjÉ का संचालन किया गया। अवगाह कार्यक्रम के nÉ®ÉxÉ =¦ÉÉ®Eò® +ÉB ºÉ´ÉÉ´É +É® ÊºÉ¡òÉ®ÉÊ¶É राज्य मात्स्यिकी विभाग, समुद्री सुरक्षा बल

श्री के.एम.सजीव, समुद्री सुरक्षा बल विंग, वाइपीन क्लास चलाते हुए

´ÉÉMÉ, iÉ]Ò ºÉ®IÉEò +É® iÉ]ÒªÉ {ÉÉÊ±ÉºÉ Ê´É¦ÉÉMÉ EòÉ ¦ÉÒºÉÊiÉ ÊEòB MÉB*

{ÉζSÉ¨É ¤ÉÆMÉÉ±É Eò nÊIÉhÉ 24 {É®MÉxÉÉºÉ Eò ¤Éä±É{ÉÖEò®
¨É {ÉÊVÉ®É ¨ÉU±ÉÒ {ÉÉ±ÉxÉ {É® +´ÉMÉÉc EòÉªÉÇGòì¨É

{É श्चिम बंगाल के दक्षिण 24 परगानास के बेलपुकुर में 8 जुलाई 2014 को पंचायत ¦ÉÉxÉ ¸ÉÒ ¨ÉÉxÉºÉÒ nÉºÉ Eò +¨ÉjÉhÉ ºÉ "{ÉÊVÉ®É मछली पालन पर अवगाह कार्यक्रम" +ÉªÉÉÉVÉiÉ किया गया। डॉ.शुभदीप घोष, प्रभारी वैज्ञानिक, ºÉÒ B¨É B¡ò +É® +É< Ê´É¶ÉÉJÉ{É]]hÉ¨É IÉjÉÒªÉ केन्द्र कार्यक्रम का नेतृत्व किया और डॉ.विश्वजीत nÉºÉ, ´ÉÊ®¹`ö iÉEòxÉÒEòÒ +ÊvÉEòÉ®Ò B´ÉÆ ¨ÉÖJªÉ अन्वेषक, एन एफ बी एस एफ आर ए, हिल्सा परियोजना, श्री बी.के.बर्मन, वरिष्ठ तकनीकी ºÉ½ÉªÉEò, B¡ò +É® B ¦ÉÉMÉ, ºÉÒ B¨É B¡ò +É® आइ कोन्टै क्षेत्र केन्द्र और श्री सम्राट पोल, एस आर एफ, हिल्सा परियोजना ने कार्यक्रम की सहायताएं दी। पंचायत के चार संघों से कुल 35 मछुआरों ने कार्यक्रम में भाग लिया। भागीदारों को पिंजरा मछली पालन तकनीकों और बेलपुकुर Eò ÊxÉEò]] MÉÉÉ xÉnÒ ¨É ¦ÉÉÊEòiÉEò ºÉÊiÉÊiÉ ºÉ{ÉnÉ उपलब्ध होने पर हिल्सा मछली का पिंजरे में पालन के बारे में बताया गया।

|ÉÊ¶ÉIÉhÉ EòÉªÉÇGòì¨É

ªÉ एन डी पी सिन्धुदुर्ग सीटेशियन परियोजना के अंदर मुम्बई अनुसंधान केन्द्र द्वारा 24-27 जुलाई 2014 और 7-8 अगस्त 2014 के दौरान ºlÉÉxÉÒªÉ {ÉÊ®SÉÉ±ÉEòÉåiÉ +É® {ÉÊ¶ÉIÉÉ±ÉªÉ Ê´ÉÊ¦ÉzÉ Eò कार्मिकों के लिए "ºÉÒiÉ½B ºÉ¨ÉÖpÒ ºiÉxÉÉªÉÉ EòÒ जाति पहचान, प्राथमिक चिकित्सा, बचाव एवं निपट ÉxÉ" विषय पर दो प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित ÊEòB MÉB*

ºÉÒ B¨É B¡ò +É® +É< ¨É ¤ÉÊ¶Éå´É® +xÉÖºÉÆvÉÉxÉ |ÉÊ¶ÉIÉhÉ

ºÉÒ आइ बी ए, चेन्नई के श्री सन्दीप के. पी., कुमारी प्रज्ञान दास, डॉ. सतीशा +ÆMÉÉÊb Eò iÉÒxÉ B +É® BºÉ {ÉÉ®´ÉÒIÉEòÉå और सी ए आर आइ, पोर्ट ब्लेअर के श्री VÉ.®ªÉ¨Éxb VÉªÉEò BxÉ´É±É +É® ¸ÉÒ +ÉxÉÆn B. xÉ ºÉÒ B¨É B¡ò +É® +É< ¨Éb{É¨É IÉjÉÒªÉ Eòp में डॉ.जी.गोपकुमार, प्रभारी वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, समुद्री संवर्धन प्रभाग के मार्गदर्शन में iÉÒxÉ ¨É½ÒxÉÉ EòÉ {É¶ÉÉ´É® +xÉÖºÉÆvÉÉxÉ |ÉÊ¶ÉIÉhÉ {É®É ÊEòªÉÉ*

+ÉhÉ¨É
ºÉ¨ÉÉ®úÉä½ 2014

ºÉ ºÉÆºlÉÉxÉ ¨ÉÖJªÉÉ±ÉªÉ +Éè® Éä´ÉäÉÊzÉ +vÉÉÒxÉºlÉ केन्द्रों में रूढ़ि-गत वैभव और प्रफुल्लता ºÉä EÒ®±É EÒ {É®{É®ÉMÉiÉ iªÉÉè½É®, +ÉhÉ¨É मनाया गया। मुख्यालय में आयोजित पूक्कलम (¡ÚÒ±É ºÉVÉÉ´É]) |ÉÉiÉªÉÉäÉMÉiÉÉ ¨É EÒ±É nºÉ]Ò¨ÉÉ xÉä ¦ÉÉMÉ É±ÉªÉÉ* |ÉÉiÉªÉÉäÉMÉiÉÉ ¨É ºÉ¨ÉpÒ VÉ´ÉÉ´ÉÉ´ÉÉ´ÉiÉÉ |É¦ÉÉMÉ xÉä |ÉlÉ¨É ºlÉÉxÉ ½ÉÉºÉ±É किया और मात्स्यिकी पर्यावरण एवं प्रबंधन प्रभाग दूसरे स्थान पर आया। समाज-आर्थिक ¨É±ªÉÉÆEòxÉ B´ÉÆ |ÉÉètÉÉäMÉEòÒ ºlÉÉxÉÉiÉ®hÉ |É¦ÉÉMÉ +Éè® ¨ÉÉ±ºªÉEòÒ ¨ÉÉÎiºªÉEòÒ |É¦ÉÉMÉ EòÉä iÉÒºÉ®É {É®ºEòÉ® |ÉnÉxÉ ÊEòªÉÉ MÉªÉÉ* <ºÉ +´ÉºÉ® {É® कैन्टीन में कर्मचारियों और उनके परिवार के ºÉnºªÉÉå EòÒ ÊÉ±ÉB {É®{É®ÉMÉiÉ nÉ´ÉiÉ "+ÉhÉºÉtªÉ" ¦ÉÒ |ÉnÉxÉ EòÒ MÉ<Ç*

पूक्कलम प्रतियोगिता के विजेताओं की घोषणा

¨ÉJªÉÉ±ÉªÉ ¨É +ÉhÉºÉtªÉ EòÉ ºÉ¶ªÉ

É´ÉÉ¶ÉÉJÉ +xÉºÉÆvÉÉxÉ Eòxp ¨É +ÉhÉ¨É ºÉ¨ÉÉ®ÉÉä½

मांगलूर अनुसंधान केन्द्र में ओणम समारोह

ºÉÒ B¨É Bफ़ +É® +É<]Ò¨É EòÉ Eòxद्र ºÉरEòÉर Eò¨ÉचÉÉरÒ Eò±याण ºÉहEòÉरÒ ºÉÉ¨ÉÉÊiÉ द्वारा +ÉªÉÉäÉÊVÉiÉ पूकEò±É¨É प्रÉiÉªÉÉäÉMÉiÉÉ 2014 ¨É प्रथ¨É पुरºEòÉर

¨ÉÉiºªÉEòÒ ÉÊ´ÉYÉÉxÉ Eò
क्षेत्र ¨É ´ÉÉ 1954 ºÉ
±ÉEòर प्र¨ÉÉख
<ÆÉbªÉxÉ VÉxÉ±É

ISSN 0970-6011

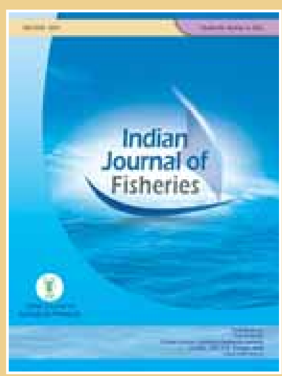

वार्षिक चंदा रु.100 $100
ÉxÉn¶ÉEò, ºÉÒ B¨É Bफ़ +É® +É<
कोच्ची - 682 018 से संपर्क करें
इन्टरनेशनल इंपैक्ट फैक्टर 0.195
एन ए ए एस रेटिंग 6.2

º´ÉiÉ्रiÉÉ Ênद´ÉºÉ
ºÉ¨ÉÉरोह

डॉ.ए.गोपालकृष्णन, निदेशक, सी एम एफ आर आइ राष्ट्रीय झंडा फहराते हुए

¨ÉÖख्यालय में 15 अगस्त, 2014 को 68वां स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। डॉ. (श्रीमती) बी. मीनाकुमारी, डी डी जी (¨ÉÉÎiºªÉEòÒ) xÉä ®É¹]Å̀ÒªÉ ZÉbÉ ¡òc½®ÉªÉÉ +É® संस्थान के कर्मचारियों का संबोधन किया।

¨ÉÖJªÉÉ±ÉªÉ E º´ÉiÉjÉiÉÉ Ênº´ÉºÉ ºÉ¨ÉÉ®Éä½ ¨ÉÉ
डॉ. (श्रीमती) बी. मीनाकुमारी, डी डी जी (मात्स्यिकी)

ºÉÒB¨ÉB¡ò+É®+É<Ç ¨Éb{É¨É IÉäjÉÒªÉ केन्द्र में मनाए गए 68वां स्वतंत्रता Ênº´ÉºÉ Eò nÉè®ÉxÉ bÉ.B.MÉÉä{ÉÉ±ÉEÞò¹hÉxÉ, ÊxÉnä¶ÉEò, ºÉÒB¨ÉB¡ò+É®+É< xÉä ®É¹]ÅÒªÉ ZÉbÉ फहराया और कर्मचारी सदस्यों का संबोधन किया। कर्मचारी मनोरंजन क्लब ने खेलकूद की प्रतियोगिताएं और सांस्कृतिक कार्यक्रम +ÉªÉÉäÊVÉiÉ ÊEòªÉä +É® Ê´ÉVÉäiÉÉ |ÉÊiÉªÉÉäÊMÉªÉÉå+É Eò Ê´ÉVÉäiÉÉå+É EòÉ {ÉÖ®ºEòÉ® |ÉnÉxÉ ÊEòB MÉB*

डॉ.ए.गोपालकृष्णन, निदेशक, सी एम एफ आर आइ º´ÉiÉÆjÉiÉÉ Ênº´ÉºÉ EòÉ ¦ÉÉ¹ÉhÉ nä iÉä ½ÖB

सी एम एफ आर आइ नर्सरी स्कूल के छात्रों द्वारा प्रस्तुत स्वतंत्रता दिवस सांस्कृतिक कार्यक्रम का दृश्य

EòÉ®´ÉÉर +xÉÖºÉÆvÉÉxÉ Eòन्द्र ¨Éå xÉ<Ç ºÉÖÊ´ÉvÉÉ+Éå EòÉ Eò¨ÉÒ¶ÉÊxÉÆMÉ

Eòxp ¨Éå bÉ.B.MÉÉä{ÉÉ±ÉEÞò¹hÉxÉ, ÊxÉnä¶ÉEò, सी एम एफ आर आइ द्वारा कोल्ड स्टोरेज की नई सुविधा और स्टेट ऑफ दि आर्ट º¨ÉÉÊ]õ{ ÉÊºiÉ+É Eòä ºÉÆº´ÉÉ {ÉÞiÉ युक्त नर्सरी पालन सुविधा का कमीशनिंग किया MÉªÉÉ* <ºÉ +´ÉºÉ® {É® EòÉ®´ÉÉ® +xÉÖºÉÆvÉÉxÉ Eòxp पर एक ब्रोशर का भी विमोचन किया गया।

निदेशक कारवार अनुसंधान केन्द्र पर ब्रोशर का विमोचन करते हुए

EòÉä±b ¸]õÉä®ÉVÉ ºÉÖÊ´ÉvÉÉ EòÉ Eò¨ÉÒ¶ÉxÉ

ºÉÒ B¨É BफÉ +É® +É< EòÉä <Ênदरा MÉÉvÉÒ ®ÉVÉ¦ÉÉ¹ÉÉ {ÉÖ®ºEòÉ® |ÉÉ{iÉ ½ÖþB

ºÉÒ एम एफ आर आइ को वर्ष 2012-13 के दौरान 'MÉ' क्षेत्र के स्वायत्त ÊxÉEòÉªÉÉå ¨Éå ®ÉVÉ¦ÉÉ¹ÉÉ xÉÒÊiÉ Eò =iEò¹]õ EòÉªÉÉÇxÉ एवं सराहनीय उपलब्धियों के लिए प्रतिष्ठित <ÆnùÉ MÉÉÆvÉÒ ®ÉVÉ¦ÉÉ¹ÉÉ {ÉÖ®ºEòÉ® |ÉÉ{iÉ ½þ+É* गृह मंत्रालय द्वारा हर वर्ष 14 सितंबर को Ê½þxnùÒ Ên´ÉºÉ Eò +´ÉºÉ® {É® ®ÉVÉ¦ÉÉ¹ÉÉ {ÉÖ®ºEòÉ® प्रदान किए जाते हैं। संस्थान को तीसरी बार ªÉ½þ |ÉÊiÉÎ¹`ö iÉ {ÉÖ®ºEòÉ® |ÉÉ{iÉ ½þÖ+É ½þ*

राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली में दिनांक 14 सितंबर, 2014 को आयोजित गौरवमय कार्यक्रम में महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी से डॉ.ए.गोपालकृष्णन, निदेशक, सी B¨É B¡ò +É® +É< xÉ {ÉÖ®ºEòÉ® OÉ½hÉ ÊEòªÉÉ* <ºÉ +´ÉºÉ® {É® ¨ÉÉxÉxÉÒªÉ MÉÞ½þ ¨ÉÆjÉÒ ¸ÉÒ ®ÉVÉxÉÉlÉ ËºÉ½þ ¦ÉÒ ={ÉÎºlÉiÉ lÉä*

डॉ.ए.गोपालकृष्णन, निदेशक, सी एम एफ आर आइ महामहिम राष्ट्रपति से इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार स्वीकार करते हुए. इनसेट में: इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार

Ê½þxदी चेiÉxÉÉ ¨ÉÉºÉ ºÉ¨ÉÉ®Éä½þ

ºÉÒ B¨É B¡ò +É® +É< ¨ÉÖJªÉÉ±ÉªÉ +É® ÊºÉ¨ÉÉ¡Éä |ÉÉnäÊ¶ÉEò BªÉÆ +xÉÖºÉÆvÉÉxÉ EåòpÉå में दिनाक 1 से 27 सितंबर 2014 के दौरान Ê½þxnùÒ SÉäiÉxÉÉ ¨ÉÉºÉ ¨ÉxÉÉªÉÉ MÉªÉÉ* <ºÉ nùÉè®ÉxÉ Ê½þxnùÒ EòÒ ¤ÉÊ¸ÉEò |ÉÊiÉªÉÉäÊMÉiÉÉBÆ +ÉªÉÉäÊVÉiÉ की गयीं। मुख्यालय में बोलचाल की हिन्दी विषय पर कार्यशाला और सुलेखन, टिप्पण व आलेखन, ई-गवेर्नन्स, कविता पाठ, हिन्दी वार्तालाप आदि प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गयीं, जिनमें संस्थान के कार्मिकों ने ओर बडे =iºÉÉ½þ +Éè® +ÊvÉEòÉÊvÉEò ºÉÆJªÉÉ ¨ÉäÆ ¦ÉÉMÉ ÊãÉªÉÉ*

चेतना मास का समापन कार्यक्रम दिनांक 27 सितंबर 2014 को आयोजित किया गया।bÉ. (¸ÉÒ¨ÉiÉÒ) ºÉÖÊxÉiÉÉ näÉÒ ªÉÉn´É, ={É ÊxÉnä¶ÉEò

मुख्यालय में मुख्य अतिथि डॉ. (श्रीमती) सुनिता देवी यादव सभा का संबोधन करती हुई

¨ÉÖJªÉÉ±ÉªÉ ¨Éå {ÉÖ®ºEòÉ® ÊªÉiÉ®hÉ

¨ÉÖJªÉÉ±ÉªÉ ¨Éå +ÉªÉÉäÊVÉiÉ Ê½þxnùÒ EòÉªÉÇ¶ÉÉ±ÉÉ EòÉ o¶ªÉ

मुम्बई अनुसंधान केन्द्र में हिन्दी चेतना मास समारोह का दृश्य

विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केन्द्र में डॉ.मदन मोहन, ए डी जी (समुद्री मात्स्यिकी) द्वारा हिन्दी कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए. डॉ.जी.सैदा रावु, भूतपूर्व निदेशक, सी एम एफ आर आइ भी उपस्थित थे

´É®É´É±É ¨É Ê½xnÒ {ÉJÉ´ÉÉcÉ EòÒ |ÉÊiÉªÉÉÊMÉiÉÉ+É EòÉ oÉ¶ªÉ

(कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, ®ÉVÉ¦ÉÉ¹ÉÉ Ê´É¦ÉÉMÉ, ¦ÉÉ®iÉ ºÉ®EòÉ®, EòÉSÉÒxÉ ¨ÉJªÉ अतिथि रहीं। डॉ.ए.गोपालकृष्णन, निदेशक, ºÉÒ B¨É B¡ò +É® +É< +vªÉIÉ ®½* <ºÉ +´ÉºÉ® पर, संस्थान को तीसरी बार इंदिरा गांधी ®ÉVÉ¦ÉÉ¹ÉÉ {É®ºEòÉ® |ÉÉ{iÉ ½ÉxÉ Eò ={É±ÉIªÉ ¨É संस्थान की श्रीमती शीला पी.जे., भूतपूर्व उप निदेशक (राजभाषा) और श्रीमती ई.शशिकला, भूतपूर्व वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी और श्रीमती ई.के.उमा, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (Ê½xnÒ) EòÉ ºÉ¨¨ÉÉÊxÉiÉ ÊEòªÉÉ MÉªÉÉ* Ê½xnÒ EòÒ Ê´ÉÊ¦ÉzÉ |ÉÊiÉªÉÉÊMÉiÉÉ+É Eò Ê´ÉVÉiÉÉ+É +É® Ê½xnÒ |ÉÊiÉºÉÉ½xÉ ªÉÉVÉxÉÉ Eò Ê´ÉVÉiÉÉ+É EòÉ ¦ÉÒ {É®ºEòÉ® प्रदान किए गए। संस्थान के कर्मचारियों द्वारा संगीत कार्यक्रम भी आयोजित किया गया।

कारवार में हिन्दी सप्ताह का उद्घाटन

¨Éb{É¨É IÉjÉÒªÉ Eòxp ¨É Ê½xnÒ ºÉ{iÉÉ½ ºÉ¨ÉÉ®É½

Ê´ÉÉË¹ÉVÉ¨É ¨É Ê½xnÒ ºÉ{iÉÉ½ ºÉ¨ÉÉ®É½

चेन्नई में हिन्दी सप्ताह समारोह का समापन कार्यक्रम

मांगलूर अनुसंधान केन्द्र में डॉ.वागेश्वरी शिवराम, मुख्य अतिथि भाषण देते हुए

ºÉÒ B¨É Bफ़े +Éर +É< Eò क्षेत्रÉÒयÉ B´É +xÉºÉvÉÉxÉ Eòxद्रÉ ¨É क्यू +Éर]ÒÒ EòÉ ¨É+É<xÉÉ

{É च वर्षीय पुनरीक्षण टीम (क्यू आर टी), ÊVÉºÉEò +vªÉIÉ, bÉ.BxÉ.+É®.¨ÉxÉÉxÉ +É® सदस्य डॉ.टी.बालसुब्रमण्यन, डॉ.ए.डी.दिवान, bÉ.Eò.BxÉ.|É¦Én´ÉÉ, bÉ.¸ÉÒÊxÉ´ÉÉºÉEò¨ÉÉ® +É® ºÉnºªÉ ºÉÊSÉ´É bÉ.´ÉÒ.Eò{ÉÉ, xÉ ºÉÒ B¨É B¡ò +É® +É< Eò Ê´ÉÊ¦ÉxÉ IÉjÉÒªÉ B´É +xÉºÉvÉÉxÉ Eòxpò का मुआइना करके वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों Eò ºÉÉIÉ +É{ÉºÉÒ Ê´ÉÉxÉªÉ¨É ÊEòªÉÉ*

क्यू आर टीम डॉ.राणी मेरी जोर्ज, प्रभारी वैज्ञानिक, विषिंजम अनुसंधान केन्द्र के साथ

Ê´ÉÉ¹ÉÊVÉ¨É +xÉºÉvÉÉxÉ Eòxpò Eò ºÉ¡ò]xÉ¶ÉÉ±ÉÉ ºÉÆ¨ÉSSÉªÉ
में वैज्ञानिकों के साथ आपसी विनियम

चेन्नई में क्यू आर टी निरीक्षण के दौरान डॉ.विजयकुमारन, प्रभारी वैज्ञानिक द्वारा प्रस्तुतीकरण करते हुए

क्यू आर टीम डॉ.शुभदीप घोष, प्रभारी वैज्ञानिक, विशाखपट्टणम IÉjÉÒªÉ Eòxpò Eò ºÉÉIÉ +É{ÉºÉÒ Ê´ÉÉxÉªÉ¨É Eò®iÉ ½B

´É¹É 2009-14 EòÒ +´ÉÊvÉ Eò दौरानÉ पंच ´É¹ÉÒªÉ पुनरीक्षण]ÒÒ¨É EòÉ ¨É+É<xÉÉ

Eòxpò	¨É+É<xÉÉ EòÒ iÉÉ®ÒJÉ
सी एम एफ आर आइ मुख्यालय, कोच्ची	11.06.2014 से 12.06.2014 तक
ºÉÒ B¨É B¡ò +É® +É< ¨ÉpÉºÉ +xÉºÉvÉÉxÉ Eòxpò	02.09.2014 से 03.09.2014 तक
ºÉÒ B¨É B¡ò +É® +É< Ê´ÉÉ¶ÉÉJÉ{É]]hÉ¨É IÉjÉÒªÉ Eòxp	04.09.2014
ºÉÒ B¨É B¡ò +É® +É< Ê´ÉÉÊ¹ÉVÉ¨É +xÉºÉvÉÉxÉ Eòxpò	22.09.2014

Ê´É¶´É¤ÉéEò ´ÉÉÊ¹ÉÇEò Ê¨É¶ÉxÉ EòÉ ¨É+É<xÉÉ

VÉÒई एफ-एन ए आइ पी-भा कृ अनु प विश्व बैंक पुनरीक्षण मिशन ने 25 से 27 अगस्त, 2014 के दौरान सी एम एफ आर आइ मुम्बई अनुसंधान केन्द्र और BxÉ B +É< {ÉÒ ºÉÉ¨ÉÉÊOÉªÉÉå Eòxpò EòÉ ¨É+É<xÉÉ ÊEòªÉÉ* {ÉxÉ®ÒIÉhÉ Ê¨É¶ÉxÉ]Ò¨É ¨É |ÉÉ¡òºÉ® (डॉ.) रवीन्द्रनाथ, इंडियन इन्स्टिट्यूट ऑफ सयन्स, बंगलूर, डॉ.रंजन सामन्तरे, विश्व बैंक, सुश्री शार्लिन और सुश्री इन्दु मुरली सम्मिलित थे।

विश्व बैंक पुनरीक्षण मिशन टीम डॉ.वी.वी.सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, मुम्बई अनुसंधान केन्द्र के साथ चर्चा करते हुए

bÉ.उषा वाराणासी, भूतपूर्व निदेशक, उत्तर पश्चिम मात्स्यिकी विज्ञान केन्द्र (एन डब्लियु एफ एस सी) और डॉ.नेड ºÉÉ<®, ÊxÉnä¶ÉEò, ®É¹]ÅÒªÉ ºÉ¨ÉpÒ ¨ÉÉÎiºªÉEòÒ ºÉ´ÉÉ एन ओ ए ए यु एस ए ने 8 अगस्त 2014 को ºÉÒ B¨É B¡ò +É® +É<, EòÉSSÉÒ EòÉ ¨É+É<xÉÉ ÊEòªÉÉ*

महिला कार्य दल केलिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

Eò ÉÊ Eò दÉrÉ EòÊ¹É - यंत्रÉÒEòरण EòÉ±ÉB ¨ÉÉहÉ±ÉÉ EòÉयÇदÉ±É EòÉ ÉÊ EÉÒEòºÉ

Eòरल के कृषि सेक्टर के विकास की सबसे बडी बाधा श्रमिकों की कमी है। इसका BEò¨ÉÉjÉ ÉÊ EÉò±É{É +ºÉÉ ¨ÉÉ¶ÉÒxÉ®Ò EòÉ +xÉ®lÉhÉ EòÒxÉ Eò É±ÉB ½® BEò {ÉSÉÉªÉiÉ +É® ÊVÉ±ÉÉ+É ¨É ªÉjÉÒEò®hÉ EòÉ |ÉSÉÉ® Eò®xÉÉ +É® Eò¶É±É ¸ÉÊ¨ÉEò n±É EòÉ ÊÉEòÉºÉ Eò®xÉÉ ½ै* Eò ÉÊ Eò (एरणाकुलम) ने जिला कुटुम्बश्री मिशन की ºÉ½EòÉ®iÉÉ +É® ¨ÉÉ½±ÉÉ ÉÊEòºÉÉxÉ ºÉ¶ÉÊHòEò®hÉ परियोजना की वित्तीय सहायता से कुटुम्बश्री के सदस्यों के बीच अग्रो मेकनाइसेशन के लिए महिला कार्य दल का विकास करने का कार्यक्रम शुरू किया है। एरणाकुलम जिला के हर एक ब्लोक से चुने गए 10 कुटुम्बश्री सदस्यों के लिए दिनांक 19.08.2014 को ¡ò±b |ÉÉ¶ÉIÉhÉ +ÉªÉÉÉVÉiÉ ÉÊEòªÉÉ MÉªÉÉ* ÉÊ´ÉÉÊÉxÉ ¨ÉÉ]®ÒEòiÉ ºÉ|ÉªÉ®, ¨ÉÉ]®ÒEòiÉ bº]® +É® मानव द्वारा परिचालित स्प्रयर के परिचालन +É® +xÉ®IÉhÉ ¨É MÉ½xÉ |ÉÉ¶ÉIÉhÉ ÊnªÉÉ MÉªÉÉ* टिलर, खरपतवार कटर, एर्थ ऑगर,

ºÉहEòÉयÇiÉÉ

Eòषि विज्ञान केन्द्र ने एरणाकुलम जिले ¨É +É¹ÉVÉÒªÉ MÉhÉ ªÉÖHò ¨ÉÉºÉ B´É +b देने वाली मध्य प्रदेश के देशज प्रजनक मुर्गी का प्रचार करने के उद्देश्य से केन्द्रीय मुर्गी ÉÊ´ÉEòÉºÉ ºÉÆMÉ`xÉ (ºÉÒ {ÉÒ bÒ +É), Eò ºÉÉlÉ ºÉ½ªÉÉMÉ ÉÊEòªÉÉ* <ºÉEò +xÉºÉÉ® ºÉÒ {ÉÒ bÒ +É द्वारा पूर्ति किए गए शुद्ध नस्ल के अंडे सेने के +bÉ EòÉ ºÉÉ]±ÉÉ<] BEòEòÉ ¨É º¡ò]xÉ Eò®Eò]ÒEòÉ ±ÉMÉÉxÉ +É® +xªÉ ºÉÉ´ÉÉÉxÉÒ ºÉÉ´ÉÉÉxÉÒ¶ÉSÉiÉ करने के बाद नाममात्र के मूल्य पर किसानों को |ÉnÉxÉ ÉÊEòB VÉÉiÉ ½* <ºÉ ´ªÉ´ÉºlÉÉ ºÉ ÊVÉ±É ¨É शुद्ध नस्ल और गुणता युक्त मुर्गियों की आपूर्ति ºÉÉÊxÉÎ¶SÉiÉ EòÒ VÉÉBMÉÒ

xÉB उत्पाद

Eòषि विज्ञान केन्द्र ने तीन नए उत्पादों याने कि बनाना टोपअप, टुबाको डिकोक्शन किट और मैंगो फ्रूट फ्लाइ के लिए फेरोमोन ट्राप, का लॉंचिंग किया। बनाना]É{É+{É ¦ÉÉ Eò +xÉ {É-<ÉbªÉxÉ <Îxº]]ªÉ¬] ऑफ होर्टिकल्वरल रिसर्च (आइ आइ एच आर), बंगलूरु द्वारा विकसित फोलियर स्प्रे माइक्रोन्यूट्रिएन्ट मिश्रण है। कृ वि के द्वारा आयोजित एफ एल डी के अनुसार बनाना]É{É+{É Eò {ÉÉSÉ ºÉÉ EòÉ |ÉªÉÉÉMÉ Eò®xÉ {É® MÉSUÉ भार 800 से 1500 ग्रा. तक बढ़ाया जा सका। तम्बाकू डिकोक्शन तरकारियों के लिए रूपाइत जैविक कीटनाशक सूत्रीकरण है, जिस के द्वारा किसान आसानी से डिकोक्शन बना सकते है। ¡ò®É¨ÉÉxÉ ¡òÆnÉ ¦ÉÒ EòÉ¨É¨ÉÉò±É ºÉÉ ®ºÉÉªÉÉxÉÉEò ºÉÉ Eò ºÉlÉÉxÉ {É® ={ÉªÉÉMÉ Eò®xÉ ±ÉÉªÉEò +ÉÉºÉ +xÉEò±É ªÉjÉÒEòiÉ ={ÉÉªÉ ½*

¨ÉIªÉÉÊxÉEòÉ Eò ÊÉB क्षेत्र +xÉ¦É´É प्रशिक्षण (Bफ <]Ò)

Rाष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी, हैदराबाद में आधार पाठ्यक्रम प्रशिक्षणाधीन भा कृ अनु प वैज्ञानिकों को 19 अगस्त से 8 सितंबर, 2014 के दौरान डॉ. षिनोज सुब्रमण्यन, कार्यक्रम समायोजक द्वारा क्षेत्र अनुभव प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षणार्थियों को दो सप्ताह के लिए कोच्ची के कुम्बलंगी गाँव ले गए, जहाँ वे किसानों, कार्मिकों और जनता प्रतिनिधियों के साथ उनकी समस्याओं पर चर्चा कर सके। इसके परिणामस्वरूप कुम्बलंगी में दिनांक 28.08.2014 को आयोजित किसान-प्रशिक्षणार्थी आपसी विनियम कार्यक्रम में गाँव Eò ºÉ¨ÉOÉ ÉÊ´ÉEòÉºÉ Eò ÉÊ±ÉB |ÉºiÉÉ´É ®JÉÉ MÉªÉÉ* |ÉÉ¶ÉIÉhÉ Eò nÉ®ÉxÉ ¨ÉÉ±ªÉ ¸ÉÆJÉ±ÉÉ {É® ºÉ¨ÉZÉxÉ के लिए नारियल विकास बोर्ड के अध्यक्ष और कर्मचारियों के साथ आपसी ÉÊ´ÉÉxÉªÉ¨É, ÉÊ{ÉVÉ®É ¨ÉUôÉÒ {ÉÉ±ÉxÉ ºlÉÉxÉ, ¨ÉUôÉÒ +´ÉiÉ®hÉ Eòxp, मछली बाज़ार, प्रसंस्करण प्लान्ट और निर्यात केन्द्रों में मुआइना ÉÊEòªÉÉ* |ÉÉ¶ÉIÉhÉ Eò nÉ®ÉxÉ ºÉÒ B¨É B¡ò +É® +É< +xÉºÉÆvÉÉxÉ {ÉÉÊiÉ सिल्वर पोम्पानो में समुद्री पर्यटन ¦ÉÒ +ÉªÉÉÉVÉiÉ ÉÊEòªÉÉ MÉªÉÉ* =xÉEò +xÉ¦É´ÉÉå EòÉ +ÉnÉxÉ-|ÉnÉxÉ Eò®xÉ के उद्देश्य से दिनांक 08 सितंबर, 2014 को सी एम एफ आर आइ ¨É BEò ºÉ¨ÉÉ{ÉxÉ +ÉªÉÉÉVÉiÉ EòÒ MÉªÉÒ, ÊVÉºÉ ¨É डॉ.आर.नारायणकुमार, अध्यक्ष, एस ई ई टी]Ò bÒ +vªÉIÉ lÉ*

एफ ई टी प्रशिक्षणार्थियों का क्षेत्र मुआइना

- bÉì.B.MÉÉä{ÉÉ±ÉEÞò¹hÉxÉ, ÊxÉn¶ÉEò xÉä निम्नलिखित कार्यक्रमों में भाग लिया

  भा कृ अनु प, नई दिल्ली में 15-18 जुलाई, 2014 को महा निदेशक की अध्यक्षता में आयोजित 16वीं ई एफ सी बैठक।

  भा कृ अनु प, नई दिल्ली में 29 जुलाई, 2014 को 86वीं स्थापना दिवस और पुरस्कार वितरण कार्यक्रम।

  एन ए एस सी, पूसा, नई दिल्ली में ए.पी. शिन्डे सभागृह में 15-18 जुलाई, 2014 EòÉä +ÉªÉÉäÉVÉiÉ ¦ÉÉ Eò +xÉ {É ÊxÉn¶ÉEòÉå +É® EÖò±É{ÉÊiÉ ºÉÉ-¨ÉÉ¨É{É¨ÉtÉ±ÉªÉÉå Eò EÖò±É{ÉÊiÉªÉÉå EòÉ ºÉ¨¨É±ÉxÉ*

  एन ए ए आर एम, हैदराबाद में 19-23 अगस्त, 2014 के दौरान "नेतृत्व प्रबंधन" पर आयोजित कार्यकारी विकास कार्यक्रम।

  नई दिल्ली में 29 अगस्त, 2014 को भारत-श्रीलंका संयुक्त समिति बैठक।

  नई दिल्ली में 8 सितंबर, 2014 को डॉ. VÉÉºÉ ÒEÉÉWÉ¶ÉÉxÉÉ Éb ÉºÉ±É´ÉÉ, ¨ÉcÉ ÊxÉn¶ÉEò, एफ ए ओ के साथ बैठक और कुलपतियों +É® ¦ÉÉ Eò +xÉ {É Eò ºÉºlÉÉxÉÉå Eò ÊxÉn¶ÉEòÉå की बैठक।

  राष्ट्रपति भवन सभागृह, नई दिल्ली में 14 सितंबर, 2014 को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित É½xnÒ Ên´ÉºÉ ºÉ¨ÉÉ®É½ +É® {É®ºEòÉ® वितरण कार्यक्रम।

  नई दिल्ली में 19 सितंबर, 2014 को ¨ÉÉU±ÉÒ +É® ¨ÉÉÊiºªÉEòÒ =i{ÉÉnxÉ EòÒ वैज्ञानिक पैनल की 5वीं बैठक।

- bÉì.VÉÒ.MÉÉä{ÉEÖò¨ÉÉ®, अध्यक्ष, समुद्री संवर्धन प्रभाग एवं प्रभारी वैज्ञानिक, मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र ने नई दिल्ली में 13 से 17 जुलाई, 2014 के दौरान आयोजित सी एम एफ +É® +É< EòÒ XIIवीं योजना बैठक में भाग ÊãÉªÉÉ*

- bÉì.VÉÒ.MÉÉä{ÉEÖò¨ÉÉ® +É® bÉì.BºÉ.VÉªÉEÖò¨ÉÉ®, वैज्ञानिक ने रामेश्वरम में 25 सितंबर, 2014 को पाक उपसागर में इन्डो-जर्मन ºÉÒ ¤ÉÉ {ÉÒ B {ÉÉ®ªÉÉäVÉxÉÉ Eò +nä {ÉÉEò उपसागर का टिकाऊ प्रबंधन के लिए हस्तक्षेप पर आयोजित विचार विमर्श कार्यशाला में भाग लिया।

- bÉì.¶ÉÒ.ºÉ.¤ÉÉäºÉEÖò¨ÉÉ®, +vªÉIÉ, iÉ±ÉÉ¨ÉÉVÉÒ मात्स्यिकी प्रभाग ने चेन्नई में 25 जुलाई, 2014 को आयोजित सुरा परिरक्षण पर दूसरी राष्ट्रीय मिशन बैठक में भाग लिया।

  चेन्नई में 19 सितंबर, 2014 को आयोजित आनाय रोध रिपोर्ट की अंतिम रूप देने और सुरा के एन पी ओ ए की तैयारी की बैठक ¨É ¦ÉÉMÉ ÊãÉªÉÉ*

- bÉì.´ÉÒ.EÞò¹hÉ, प्रधान वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, एफ ई एम डी ने निम्नलिखित बैठकों में ¦ÉÉMÉ ÊãÉªÉÉ

  कोल्लम जिलाधीश कार्यालय, कोल्लम में 12 अगस्त, 2014 को आयोजित सीपी परिषद बैठक

  क्यू आर टी के सदस्य सचिव के रूप में 2-5 सितंबर, 2014 को मद्रास अनुसंधान Eòäxp +É® É´É¶ÉÉJÉ{É]]hÉ¨É IÉäjÉÒªÉ Eòäxp और 22 सितंबर, 2014 को विषिंजम

Ê´Énेश ¨É |ÉÊ¶ÉIÉhÉ

- bÉì.ºÉÉäxÉÉ ¨ÉÉह¨Éद +ÉैÉ bÉì.EÒ.EÒ.VÉÉä¶ÉÒ थÉÉªÉ±Ééb ¨É

  bÉì.ºÉÉäxÉÉ ¨ÉÉह¨Éद, +vªÉIÉ, ¨ÉÉ±ÉºEò ¨ÉÉÊiºªÉEòÒ |É¦ÉÉMÉ +É® bÉì.EÒ.EÒ.VÉÉä¶ÉÒ, +vªÉIÉ, समुद्री जैवविविधता प्रभाग ने दिनांक 08-12 सितंबर, 2014 के दौरान थायलान्ड के फुकेत में बे ऑफ बंगाल लार्ज मराइन इकोसिस्टम (बी ओ बी एल एम ई) द्वारा प्रायोजित "इकोइसम के साथ इकोपाथ का प्रयोग (ई डब्लियु ई)" विषयक प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लिया। बी ओ बी एल एम ई इकोपाथ विथ <EòÉ<ºÉ¨É (ई डब्लियु ई) सोफ्टवेयर (www.ecopath.org) उपयुक्त करके बंगाल ={ºÉÉMÉ® ºÉ¨Ép Eò +´ÉºlÉÉ iÉÆjÉ ¨ÉÉìbÉÊ±ÉÆMÉ Eò Ê±ÉB कोलम्बिया के साथ सहयोग किया जा रहा है। कार्यशाला का =qä¶ªÉ <ºÉ |ÉÉäOÉÉ¨É EòÉ VÉÉÆSÉ, ¨ÉÉìbÉ±É EòÉ ÊxÉ¨ÉÉÇhÉ +É® ºÉ¨ÉÉvÉÉxÉ Eò Ê±ÉB

  लिए आवश्यक सूचनाएं प्रदान करना था। डॉ.विल्ली क्रिस्टेन्सन, जो इकोपाथ का मूल विकासकर्ता थे, ने कार्यशाला का नेतृत्व किया।

- bÉì BºÉ]Ò द्वारा रूस ¤ÉÉÊªÉÉ¨ÉÊVÉiÉ Bक्ºÉÉ{ÉÉäज़र ¨É+É<xÉÉ

  bÉì.Ê¤ÉxÉÉäद Eò., प्रधान वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ कालिकट अनुसंधान केन्द्र ने 13-19 सितंबर, 2014 के दौरान रूस की वैज्ञानिक संस्थाओं और प्रयोगशालाओं का मुआइना कार्यक्रम में भाग लिया। विज्ञान B´É |ÉÉètÉÉÊMÉEòÒ Ê´É¦ÉÉMÉ, ¦ÉÉ®iÉ सरकार द्वारा "सरकारी सेक्टर के वैज्ञानिकों/ प्रौद्योगिकीविदों के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम" Eò +nä कार्यक्रम प्रायोजित किया गया। विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत भारत के वैज्ञानिकों एवं प्रौद्योगिकीविदों के |ÉÊiÉÊxÉÊvÉªÉÉå EòÉ bÒ.<ºnä®VÉÒiÉ ºÉÉ½, ºÉªÉHò ºÉÊSÉ´É (|ÉÊ¶ÉIÉhÉ B´É प्रशिक्षण), विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी ¨ÉjÉÉ±ÉªÉ xÉ xÉiÉi´É ÊEòªÉÉ*

±ÉÉ¨ÉÉxÉÉäºÉÉä´É ¨ÉÉºEòÉ ºÉ]] Ê´É¶´ÉÊ´ÉtÉ±ÉªÉ ¨ÉÉªÉEòÉä ¨É |ÉÉ®ÎiÉªÉ |ÉÊiÉÊxÉÊvÉ ¨ÉÆb±É

- ¶ÉÆMÉÉ<ÇÉ ¨É +É< B´É ¤ÉÒ < +ÉैÉ EòÉªÉÇ¶ÉÉ±ÉÉ

  bÉì.(श्रीमती) रेखा VÉ.xÉªÉ®, bÉì.(श्रीमती) ºÉÉ¨ÉÒ EÖò¨ÉÉ®ÉÒ +ÉैÉ bÉì.Ê¶É±{ÉÉ VÉÉ, ´ÉÉ®Ê` वैज्ञानिक गण ने 4-9 अगस्त के दौरान चीन के शिगाय के ईस्ट चाइना नोर्मल यूनिवेर्सिटी में आयोजित आइ एम बी ई आर क्लिमइको4 सम्मर स्कूल में भाग लिया। आइ एम बी ई आर ने ग्रीष्मकालीन पाठ्यक्रम आयोजित किया और आंशिक रूप से वित्तीय ºÉ½ÉªÉiÉÉ BÊ¶ÉªÉÉ {ÉèÊºÉÉ¡ÉEò xÉä] वर्क फोर ग्लोबल चेन्ज रसिर्च (B {ÉÒ BxÉ) +É® ¨É½ºÉÉMÉ®Ò अनुसंधान पर वैज्ञानिक समिति द्वारा की गयी। आइ एम बी ई आर भौगोलिक परिवर्तन से +ÉvÉEòÉÆÉvÉEò |É¦ÉÉÊ´ÉiÉ ½ÉxÉ ´ÉÉ±É ºÉ¨Ép +ÉËºÉ ´ªÉ´ÉºlÉÉ+É EòÒ पूर्वानुमान क्षमता बढ़ाए जाने के उद्देश्य से जैवरासायनिक चक्र और JÉÉt¸ÉÆJÉ±ÉÉ, ¨ÉÉxÉ´É ºÉ¨ÉÉ½iÉ, Eò बीच के आदान प्रदान और संबंध {É® vªÉÉxÉ niÉÉ ½*

¶ÉÆMÉÉ<Ç ¨É +É<ÇÉ¨ÉÊ´ÉiÉ +É< B´É ¤ÉÒ < +ÉैÉ ग्रीष्मकालीन ºÉEÚò±É EòÒ ¨ÉÆजन EòÉ दृश्य

- bÉì.प्रतिभा रोहित, प्रधान वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष (प्रभारी) वेलापवर्ती मात्स्यिकी प्रभाग ने थायलान्ड के फुकेत में 29 जून से 2 जुलाई, 2014 को आयोजित नेरिटिक ट्यूनाओं पर आइ ओ टी सी वर्किंग पार्टी (डब्लियु पी एन टी 04) के चौथे सत्र में भाग लिया।

- bÉì.B.ºÉÒ.Ênक्षि¶ÉÎ{É, प्रधान वैज्ञानिक ने बैंकोक में 11-13 सितंबर, 2014 को "nÊIÉhÉ और दक्षिण पूर्व एशिया (एस एस ए) में आनाय मत्स्यन परिचालन के विकास और प्रचार में बेहत्तर विज्ञान का उपयोग" विषय पर आयोजित कार्यशाला में देश के विशेषज्ञ के रूप ¨É ¦ÉÉMÉ ÊãÉªÉÉ*

अनुसंधान केन्द्र में आयोजित क्यू आर टी बैठक में भाग लिया।

- bÉ.´ÉÒ.EÞÒ¹ÉÉ +É® bÉ.bÒ.}ÉÉ¨ÉÉ, |ÉvÉÉxÉ वैज्ञानिकों ने आइ एन सी ओ आइ एस, सी एम एल आर ई एवं एन ओ ए ए (यु एस ए) द्वारा संयुक्त रूप से अवन्यू रीजेन्ट, कोच्ची में 22-26 सितंबर, 2014 को ¦ÉÉ®iÉÒªÉ ºÉ¨ÉpÉ ¨Éä ºÉ¨ÉpÒ ¨ÉÉÎiºªÉEÒ +É® ½ÉÉxÉEÉ®EÒ ¶É´ÉÉ±É ¡ÒÌ±É±ÉEÉ+É {É® |ÉʶÉIÉhÉ ºÉSÉÉEÒ IÉ¨ÉiÉÉ+É EÉ ÉʴÉEÉºÉ ÉÊ´É¹ÉªÉ {É® आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।
- bÉ.EÒ.BºÉ.¨ÉÉä½¨¨Énä, +vªÉIÉ, B¨É Bj Ò bÒ ने निम्नलिखित बैठकों में भाग लिया

  bÉ.=¹ÉÉ ´ÉÉ®hÉɺÉÒ, भूतपूर्व निदेशक, उत्तर पश्चिम मात्स्यिकी विज्ञान केन्द्र (एन डब्लियु एफ एस सी) और डॉ.नेड सिर, ÉxÉn¶ÉEÉ, ®É¹]ÅÒªÉ ºÉ¨ÉpÒ ¨ÉÉÎiºªÉEÒ ºÉ´ÉÉ एन ओ ए ए, यु एस ए के साथ 8 अगस्त, 2014 को सी एम एफ आर आइ, कोच्ची में बैठक।

  कोल्लम जिलाधीश कार्यालय, कोल्लम में 12 अगस्त, 2014 को आयोजित अष्टमुडी झील सीपी परिषद बैठक।

  के यु एफ ओ एस, पनंगाड में 14 अगस्त, 2014 को डब्लियु ओ एस सी, जैवविविधता विषय पर आयोजित बैठक।

  एफ आर ए डी द्वारा 27 सितंबर 2014 EÉ "मछली स्टॉक निर्धारण एवं प्रबंधन" पर आयोजित कार्यक्रम में 'VÉ±ÉÒªÉ +É´ÉÉºÉ iÉjÉÉ EÉ]ÉÉ¡ÒEÒ ¨ÉÉb±ÉÉÆ É´ÉɹÉªÉEÒ ±ÉJÉ |ɺiÉÖiÉEÒ®hÉ*

  नई दिल्ली में 25 सितंबर 2014 को जी आइ इज़ेड इंडिया द्वारा "+¹]¨ÉbÒ ZÉÒ±É {É® EÒºÉ +vªÉªÉxÉ +É® ¨ÉÉʺÉEÉ ¨ÉiºªÉxÉ रोध पर गाइडिंग केस अध्ययन के निष्कर्षों" पर आयोजित बैठक।
- bÉ.VÉÒ.¨ÉÉä½¨¨Énä, +vªÉIÉ, ºÉÒ Bj Ò bÒ xÉ ºÉÒ B¨É Bj Ò +É® +É<, EÒSSÉÒxÉ ¨É 04 सितंबर, 2014 को "अष्टमुडी शोर्ट xÉEÒ ºÉÒ{ÉÒ ¨ÉÉÎiºªÉEÒ EÒ B¨É BºÉ ºÉÒ |É¨ÉÉhÉÒEÒ®hÉ EÒ ½iÉ" {É® +É®ÉÉʦÉEÉ परामर्श कार्यशाला में भाग लिया।
- bÉ.EÒ.EÒ.ÉÊ¡ÉÊ±É{ÉÉäºÉ, प्रभारी वैज्ञानिक, EÉÉ®´ÉÉ® +xÉÖºÉvÉÉxÉ EÒxp xÉ ÉxÉ¨xÉÉÉÊ±ÉÉJÉiÉ कार्यक्रमों में भाग लिया

  ¦ÉÉ EÒ +xÉ {É ¨ÉÉ´ÉÉ +xÉÖºÉvÉÉxÉ ºÉ¨ÉÉÉÊSɪÉÉ EÒ दिनांक 1 जुलाई 2014 को आयोजित संस्थान प्रबंधन समिति बैठक।

  विज्ञान केन्द्र, कारवार में 20 सितंबर 2014 को क्षेत्रीय निदेशक (पर्यावरण), कारवार द्वारा 'कर्नाटक राज्य के तटीय पर्यावरण की गुणता का संरक्षण और सुधार के लिए तथा पर्यावरण प्रदूषण के ®ÉEÉ, EÉ¨É EÒ®xÉÉ +É® ÉxÉªÉjÉhÉ EÉ ÉʱÉB EÒ BºÉ ºÉÒ <VÉb B¨É B EÉ ¶ÉÉÎHÉªÉÉ EÒ अंदर की जाने वाली कार्यविधियाँ' ÉÊ´É¹ÉªÉ पर आयोजित बैठक।

  परियोजना निदेशक, टिकाऊ तटीय संरक्षण एवं प्रबंधन निवेश कार्यक्रम का कार्यालय, मांगलूर द्वारा उप आयुक्त, कारवार के कार्यालय में 27 सितंबर, 2014 को उत्तरकन्नड की तटरेखा प्रबंधन की योजनाएं विषय पर आयोजित बैठक।
- bÉ.EÒ.EÒ.ÉÊ¡ÉÊ±É{ÉÉäºÉ, प्रधान वैज्ञानिक, bÉ.EÞÒ¹hÉ¸ÉÒ ¶ÉÉ´ÉÉ, वरिष्ठ वैज्ञानिक और bÉ.]Ò.ºÉÉÊxiÉ±É ¨ÉÖ¯ûMÉxÉ, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने सी B¨É Bj Ò +É® +É< EÉÉ®´ÉÉ® +xÉÖºÉvÉÉxÉ EÒxp में 19 सितंबर, 2014 को टिकाऊ तटीय प्रबंधन का राष्ट्रीय केन्द्र (एन सी एस सी एम) द्वारा सी आर इज़ेड और गंभीर °üÉ ºÉ ºÉÆÉIÉ iÉ]ÒªÉ IÉjÉ {É® +ÉªÉÉÉÊVÉiÉ स्टेकहोल्डरों होल्डरों की परामर्श बैठक ¨É ¦ÉÉMÉ ÉʱɪÉÉ*
- bÉ.EÒ.É´ÉVɪÉEÖ¨ÉÉ®xÉ, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी वैज्ञानिक, मद्रास अनुसंधान केन्द्र ने निम्नलिखित बैठकों में भाग लिया

  ¨ÉÉ½® ºÉÉ¨ÉÉ® VÉÉxÉ ´ÉÉ±É ¨ÉÉUÖ+É®É ºÉPÉ (B डी एस जी एफ), तुत्तुर द्वारा 25 जुलाई 2014 को चेन्नई में आयोजित एक दिवसीय पणधारी बैठक।

  जी ई एफ के वित्त पोषण से बी ओ बी एल एम ई परियोजना के अंदर 11 अगस्त 2014 को मात्स्यिकी प्रबंधन में आवास व्यवस्था पहुंच पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय |ÉÉ¶ÉIÉhÉ ¨É 'मात्स्यिकी प्रबंधन में आवास व्यवस्था पहुंच के लिए क्या हम तैयार है' ÉÊ´É¹ÉªÉ {É® =nPÉ]xÉ ¦ÉÉ¹ÉhÉ ÉnªÉÉ*

  बी ओ बी पी-आइ जी ओ द्वारा 20 सितंबर 2014 को आयोजित 6वीं क्षेत्रीय सी सी आर एफ प्रशिक्षण कार्यक्रम में सहभाजित एवं सामान्य संपदाओं के प्रबंधन में IÉjÉÒªÉ {ɽ±É-´ÉÉºiÉÉ´ÉEÉiÉÉ EÒ VÉÉSÉ +É® ºÉÉvªÉiÉÉ+É {É® +x´ÉÉ¹ÉhÉ ÉÊ´É¹ÉªÉEÒ ¨ÉJªÉ ¦ÉÉ¹ÉhÉ ÉnªÉÉ*

  सी ई एस एस, हैदराबाद में 21 सितंबर 2014 को जैवविविधता नष्ट के परियोजना आर्थिकीः आंध्रा प्रदेश समुद्री मात्स्यिकी से उप पकड़ों पर अध्ययन पर आयोजित परियोजना टीम की बैठक।
- bÉ.{ÉÉÊ®ÉʨÉiÉÉ ¶ÉÉÊÂiÉ, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी वैज्ञानिक, मांगलूर अनुसंधान केन्द्र ने निम्नलिखित बैठकों में भाग लिया

  एन ए ए आर एम, हैदराबाद में 15-26 जुलाई 2014 के दौरान नेतृत्व विकास पर आयोजित प्रबंध विकास कार्यक्रम

  आइ एन सी ओ आइ एस, हैदराबाद में 7-9 अगस्त 2014 के दौरान एस ए टी]Ò ªÉ BxÉ B {ÉÉ®ªÉÉVÉxÉÉ EÒ ÉÊ´ÉB ºÉÉÒ]±ÉÉ<]¡]ÉMÉ EÒ +ÉiÉ¨É °üÉ nxÉ EÒ ÉÊ´ÉB आयोजित तकनीकी एवं वित्तीय मूल्यांकन (टी ई ई) बैठक।
- bÉ.{ÉÉÊ®ÉʨÉiÉÉ ¶ÉÉÊÂiÉ +É® bÉ.ÉÊnxÉ¶É¤ÉɤÉÚ, प्रधान वैज्ञानिकों ने उप आयुक्त, दक्षिण कन्नड़ जिला द्वारा 26 अगस्त 2014 को मांगलूर में मांगलूर तट के लिए बृहद {ɱÉ´ÉEÉxÉ {ÉÉiÉÉ¸ÉªÉ EÒ +´É¶ªÉEiÉÉ {É® आयोजित बैठक में भाग लिया।
- bÉ.ÉÊnxÉ¶É¤ÉɤÉÚ, प्रधान वैज्ञानिक ने राष्ट्रीय कृषि कीट संसाधन ब्यूरो (भा कृ अनु प), बांगलूर में 2 अगस्त 2014 को "पशुचिकित्सा और मात्स्यिकी विज्ञान से संबंधित कीट" ÉÊ´É¹ÉªÉ {É® +ɪÉÉÉÊVÉiÉ ÉʴÉSÉÉ® विमर्श सत्र में भाग लिया और "ºÉ¨ÉpÒ ¨ÉUÉ±ÉªÉÉ ¨É +É<ºÉÉ{ÉÉb {É®VÉÒ´ÉÒ ºÉÆGÉ¨ÉiÉÉ" ÉÊ´É¹ÉªÉ {É® |ɺiÉÖiÉÒEÉ®hÉ ÉEªÉÉ*
- bÉ.{ÉÉÊ®ÉʨÉiÉÉ ¶ÉÉÊÂiÉ, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी वैज्ञानिक, मांगलूर अनुसंधान EÒxp, bÉ.B¨É.É¶ÉÉÂÉnªÉ, bÉ.B.¨ÉÉMÉ¶], ¨ÉiÉÉÊ®ÉÎxÉ¨É, bÉ.<.+¤nÖ±É ºÉ¨Énä, |ÉvÉÉxÉ वैज्ञानिक गण, ¸ÉÒ EÒ.¤ÉÒ.ºÉÖ®Ê¤n EÖ¨ÉÉ®, वैज्ञानिक, bÉ.ÉÊ.¨ÉMÉÉ, bÉ.EÒ.B¨É.ÉÊ®VÉ¶É, वरिष्ठ वैज्ञानिक गण, ¸ÉÒ EÒ.¨ÉÉä½¨¨Énä EÖ¨ÉÉÉ® +É® ¸ÉÒ¨ÉiÉÒ +xÉÖ±ÉIÉ¨ÉÒ SÉÉÎÉÊ±ÉÂɪÉxÉ, वैज्ञानिक गण ने सी एम एफ आर आइ वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र में 9 से 11 सितंबर, 2014 के दौरान आयोजित "iÉÉ®±ÉÒ {É® विचार विमर्श सत्र" ¨É ¦ÉÉMÉ ÉʱɪÉÉ*
- bÉ.´ÉÒ.EÒ±ÉÉÉÊvÉ®xÉ, प्रधान वैज्ञानिक ने निम्नलिखित बैठकों में भाग लिया

  ¨ÉJªÉ ´ÉxÉ ºÉ®IÉEÒ B´É xÉÉÊb±É +ÉvÉEÉÉ®Ò EÉ कार्यालय, मैंग्रोव सेल, बान्द्रा, मुम्बई में 10 जुलाई 2014 को आयोजित यु एन डी पी/ जी ई एफ निधिबद्धता की परियोजना की पुनरीक्षण बैठक में भाग लिया और सिंधुदुर्ग क्षेत्रों के मैंग्रोव समतल भागों में केकड़ा पालन पर ई आइ ए विषयक परियोजना |ɺiÉÉ´É |ɺiÉiÉ ÉEªÉÉ*

  कॉलेज ऑफ अग्रिकल्चर एन्ड रिसर्च इन्स्टिट्यूट, मदुरै में 29-30 सितंबर 2014 के दौरान टिकाऊ कृषि उत्पादन EÒ ÉʱÉB ¶ÉÉ´ÉÉ±É ÉÊ´É¹ÉªÉ {É® +ÉªÉÉÉÊVÉiÉ ®É¹]ÅÒªÉ ºÉ¨¨ÉÉ¹`Ò ¨É ¦ÉÉMÉ ÉʱɪÉÉ +É® EÒ{ÉÉ{ÉÉä<EÒºÉ {ÉnÉ´ÉÉ® ÉÊ´É¹ÉªÉEÒ ±ÉJÉ |ɺiÉiÉ ÉEªÉÉ*
- bÉ.¶É¶ÉÒvÉ®ÉÒ PÉÉä¹É, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रभारी वैज्ञानिक विशाखपट्टणम क्षेत्रीय EÒxp +É® bÉ.ÉÊ®iÉä¶É ®VÉxÉ, वैज्ञानिक ने सी आइ एफ आर आइ, बैरकपुर में 8-10 जुलाई, 2014 के दौरान आयोजित एन बी एस एफ ए आर ए की "ɽ±ºÉÉ ¨ÉU±ÉÒ (Jxɱɺɺ <±ÉÒ¶ÉÉ) EÒ º]ÉEÉ ÉÊ´É¶±ÉÉhÉ, |ÉÉÊ´É½hÉ +´ÉºÉIÉ ¨É |ÉVÉxÉxÉ, ºÉiÉÉiÉ =i{ÉÉnxÉ +É® {ÉÉ±ÉxÉ" परियोजना की बैठक में भाग ÉʱɪÉÉ*
- bÉ.EÒ.BºÉ.¶ÉÉä¦ÉxÉÉ, प्रधान वैज्ञानिक ने डी बी टी, नई दिल्ली में 24-25 जुलाई 2014 को जलकृषि एवं समुद्री जैवप्रौद्योगिकी पर डी बी टी कार्य दल बैठक में भाग लिया।
- ºÉÒ.´ÉÒ.ºÉVÉÉ +É® bÉ.ÉÊ¦ÉxnÖ VÉÉäºÉÉ¶ÉEÒ®, वरिष्ठ वैज्ञानिक गण ने राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंधन अकादमी, हैदराबाद में 14-26 जुलाई के दौरान आयोजित "EÞ¹É अनुसंधान प्रबंधन पर पुनश्चर्या पाठ्यक्रम" ¨É ¦ÉÉMÉ ÉʱɪÉÉ*
- bÉ.EÒ.ÉÊ´ÉxÉÉänÂ, प्रधान वैज्ञानिक, सी एम Bj Ò +É® +É< EÉÉÊSSÉ±ÉÒ]Ò +xÉÖºÉvÉÉxÉ EÒxp xÉ इंदिरा पर्यावरण भवन, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, नई दिल्ली में 22 अगस्त, 2014 को मैंग्रोव और प्रवाल झाडियों पर पुनर्गठित राष्ट्रीय समिति की पहली बैठक में भाग लिया।
- ¸ÉÒ EÒ.¨ÉÉä½¨¨Énä EÖ¨ÉÉÉ®, वैज्ञानिक एवं प्रभारी वैज्ञानिक वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र ने आनन्द कृषि विश्वविद्यालय, आनन्द में 12 और 13 सितंबर 2014 को आयोजित भा कृ +xÉ {É IÉjÉÒªÉ ºÉÉ¨ÉÉiÉ ºÉ. VI EÒ XXII क्ष्वीं बैठक में भाग लिया।
- ¸ÉÒ¨ÉiÉÒ +xÉÖ±ÉIÉ¨ÉÒ SÉÉÎÉʱÉÂɪÉxÉ, bÉ.¤ÉÖ¯ûºÉÖ±É¨ÉÉ, ´ÉÒ.BºÉÒ. +É® EÒ¨ÉÉ®Ò EÒiÉÉÌÉiÉbÒ ¶ÉʶÉEÉÆiÉ, वैज्ञानिक गण, मुम्बई अनुसंधान केन्द्र xÉ ºÉiÉ{ÉiÉÒ, {ɱÉPÉ® iÉÉ±ÉEÉ B´É ÉÊVɱÉÉ, महाराष्ट्र में 8 अगस्त 2014 को सतपती ¨ÉUÖ+É®É ºÉ½EÉ®ÉiÉÉ ºÉPÉ ɱÉÉ¨É]bÉ, ºÉiÉ{ÉiÉÒ +É® ºÉiÉ{ÉiÉÒ ¨ÉUÖ±ÉÒ ÉÊ´ÉEÉ

कार्यकारी सहकारी संस्था मर्यादित, ºÉiÉÖ{ÉiÉÉÒ EÒ ºÉ½ªÉÉäMÉ ºÉ ºÉÒ B¨É B¡ò +É® आइ मुम्बई अनुसंधान केन्द्र द्वारा "¦ÉÉ®iÉÒªÉ º¨ÉpÉ ¨É ºÉ®É+É EòÉ {ÉÉ®¨{ÉÊ®EòÉ" Ê´ÉÊ¶ÉC {É® आयोजित अवगाह कार्यक्रम में भाग लिया।

- bÉ.+É<.®ÉVÉÉxÉ, वरिष्ठ वैज्ञानिक और ¸ÉÒ +É®.¶É®´ÉhÉxÉ, वैज्ञानिक ने कृषि EòÉ±ÉäVÉ B´ÉÆ +xÉÖºÉÆvÉÉxÉ ºÉÆºlÉÉxÉ, ¨ÉnÖ®ÉD ¨ÉÆ 29-30 सितंबर 2014 EÒ nÉ®ÉxÉ "टिकाऊ EÞÉÊ¹É =i{ÉÉnxÉ EÒ Ê±ÉB ¶ÉÆ´ÉÉ±É" Ê´ÉÊ¹ÉªÉ {É® +ÉªÉÉÊVÉiÉ ºÉ¨¨Éä±ÉxÉ ¨ÉÆ ¦ÉÉMÉ Ê±ÉªÉÉ*
- ¸ÉÒ BºÉ.®É¨ÉEÞò¹hÉxÉ, वैज्ञानिक, मुम्बई +xÉÖºÉÆvÉÉxÉ EÒxp xÉ ´ÉxÉ Ê´ÉpÉMÉ EÒ +ÉvÉEòÉÊ®ªÉÉÆ +É® {É¶ÉÖ ÊSÉÊEÒiºÉEÉÆ EÒ Ê±ÉB ¨ÉÉ±É´ÉxÉ ¨ÉÆ 24-25 जुलाई 2014 +É® 7-8 +MÉºiÉ 2014 को यू एन डी पी सिंधुदुर्ग सीटेशियन परियोजना के अंदर, सिंधुदुर्ग iÉ]õÉÒªÉ IÉäjÉ ¨ÉÆ iÉ]õ {É® +ÉB ªÉÉ ´ÉºÉxÉ ½B सीटेशियनों का बचाव और शव परीक्षा Ê´É¶ÉäÉ¹hÉ {É® +´ÉMÉÉ½ VÉMÉÉxÉ EÒ Ê±ÉB nÉ दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया +É® ¦ÉÉMÉ Ê±ÉªÉÉ*
- bÉ.BxÉ.+ºÉÉäEòxÉ, वरिष्ठ वैज्ञानिक, एस ई ई टी टी डी ने एन ए ए आर एम, हैदराबाद ¨ÉÆ 17 ºÉ 26 सितंबर 2014 EÒ nÉ®ÉxÉ "समाज विज्ञान के लिए आधुनिक विश्लेषण ={ÉEò®hÉ" Ê´ÉÊ¹ÉªÉ {É® +ÉªÉÉÊVÉiÉ B¨É bÒ {ÉÒ ¨ÉÆ ¦ÉÉMÉ Ê±ÉªÉÉ*
- ¸ÉÒ B±É.®ÉVÉÉiÉ, वैज्ञानिक ने सी एम एफ +É® +É< ¨ÉbÉ{É¨É IÉäjÉÒªÉ EÒxp ¨ÉÆ 14 +MÉºiÉ 2014 को समुद्री ककड़ियों पर आयोजित परामर्श बैठक में भाग लिया।
- bÉ. VÉÒ EÒ. ÊEòºÉÉäEòbxÉ, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने ओयालिकुप्पम तटीय गाँव में टी एस {ÉÒ कार्यक्रम के प्रारंभ के संबंध में 2 जुलाई 2014 को ओयालिकुप्पम गाँव के ¨ÉUÖ+É®É, <¨ÉÒ±ÉÉ VÉäEÉäÉÊiÉ ºÉÉnºªÉÉ +É® वयलूर पंचायत अध्यक्ष के साथ बैठक का +ÉªÉÉäVÉxÉ ÊEòªÉÉ*

तमिल नाडु के तटीय समुद्र में कृत्रिम भित्ति EÒ ºlÉÉ{ÉxÉÉ {É® +É< B¡ò B bÒ-{ÉÒ]õÒ एस एल पी परामर्श परियोजना के संबंध में 3 जुलाई 2014 को आयोजित टी वी डोक्युमेन्टरी में संस्थान के प्रतिनिधि के °ü{É ¨ÉÆ ºÉÉIÉÉiEòÉ® ÊnªÉÉ*

- bÉ.¶ÉÉ¿ÉÉ VÉÉ ÊEòºÉÉäEòbxÉ, वरिष्ठ वैज्ञानिक +É® bÉ.+É®.MÉÒiÉÉ, वैज्ञानिक ने आइ एफ ए डी-पी टी एस एल पी परामर्श {ÉÉ®ªÉÉäVÉxÉÉ EÒ +n® iÉÉ¨É±É xÉÉb EÒ iÉ]õÒªÉ समुद्र में कृत्रिम भित्ति की स्थापना के सिलसिले में रीफ मात्स्यिकी पर प्रतिक्रिया निर्धारण के लिए 15 जुलाई 2014 को ¨ÉpÉºÉ +xÉÖºÉÆvÉÉxÉ EÒxp EÒ Ê´ÉÉ¦ÉxxÉ IÉäjÉÉÒªÉ |ÉÊiÉÊxÉÊvÉªÉÉå ¨ÉÆ EÒ´É±É´ÉÉ¨É EÒ ¨ÉUÖ+É®É EÒ बैठक आयोजित की।
- bÉ.¶ÉÉ¿ÉÉ VÉÉ ÊEòºÉÉäEòbxÉ, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने सी एम एफ आर आइ मुम्बई अनुसंधान केन्द्र द्वारा 8 अगस्त 2014 को महाराष्ट्र के पलघर जिले के सतपती मत्स्यन गाँव ¨ÉÆ "ºÉ®É {ÉÉ®¨{ÉÊ®EòÉ" {É® +ÉªÉÉÊVÉiÉ +´ÉMÉÉ½ कार्यक्रम में विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया।

सी आइ टी ई एस परिशिष्ट II ºÉÚSÉÒ +É® ¨ÉUôÒ ¨ÉUô±ÉÒ VÉÉÊiÉªÉÉå EòÉ ºÉÆ®IÉhÉ पर पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (एम ओ ई एफ एवं सी सी), भारत सरकार द्वारा सी पी आर पर्यावरण Ê¶ÉIÉÉ EÒxp EÒ ºÉ½ªÉÉäMÉ (ºÉÒ {ÉÒ +É® ई ई सी) से चेन्नई में 26 से 28 अगस्त 2014 के दौरान आयोजित क्षमता वर्धन कार्यशाला में भाग लिया।

¦ÉÉ®iÉ ¨É ºÉ®É ¨ÉiºªÉxÉ {É® ®É¹]ÅõÒªÉ ªÉÉäVÉxÉÉ कार्रवाई की तैयारी के बारे में चर्चा करने ½iÉÖ MÉÉ½®É ºÉÉMÉ® VÉxÉ ´ÉÉ±É ¨ÉUÖ+É®É EòÉ संघ (ए डी एस जी एफ), तुतूर द्वारा चेन्नई में 25 जुलाई 2014 को आयोजित एक दिवसीय पणधारी बैठक में भाग लिया।

- bÉ.+É®.VÉªÉ¤ÉÉºEò®xÉ, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने आइ यू सी एन-एम एफ एफ, चेन्नई में 23-25 जुलाई 2014 के दौरान आइ यू सी BxÉ-B¨É B¡ò B¡ò {ÉÉ®ªÉÉäVÉxÉÉ "मन्नार खाड़ी EÒ VÉÉÊ´ÉEò ºÉÆ{ÉnÉB: +´ÉMÉÉ½ VÉMÉÉxÉ +É® {ÉÉ®¨{ÉÊ®EÒ YÉÉxÉ EÒ °ü{ÉªÉÉxÉ EÒ Ê±ÉB |É¨ÉÖJÉ जातियों का निर्धारण" ({ÉÉ®ªÉÉäVÉxÉÉ EÒb सं.5001/1942) के संबंध में आयोजित 'परियोजना योजना बैठक' ¨ÉÆ ¦ÉÉMÉ Ê±ÉªÉÉ*
- bÉ.¶ÉÆEò® ´ÉÉ{ÉÉ®ÉVÉxÉ, वैज्ञानिक ने सेन्टर ¡òÉ® +bÉ´ÉÉºb º]bÒºÉ <xÉ ¨É®É<xÉ बयोलजी, फाकल्टी ऑफ मराइन सयन्स, +hhÉÉ¨É±ÉÉ Ê´É·É´ÉtÉ±ÉªÉ, {É®ÆMÉÒ{ÉäÊ]]õ, तमिल नाडु में 12 और 13 सितंबर 2014 EÒ nÉ®ÉxÉ "|ÉÉiÉÉ®IÉÉ-+ÉÊh´ÉEÒ iÉEòxÉÉÒEÒ +É® <ºÉEÒ |ÉªÉÉäMÉ" पर डी बी टी द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में विशेषज्ञ के °ü{É ¨ÉÆ ¦ÉÉMÉ Ê±ÉªÉÉ*
- bÉ.VÉÉÒºÉÉ±ÉÒxÉ VÉÉìºÉ, प्रधान वैज्ञानिक, bÉ.±ÉÆ¨ÉÒ ÊEò±É±É, bÉ.®ºÉÆ´ÉEÒ ¶ÉÆEò®ÊxÉ, bÉ.EÒ.B¨É.®ÉVÉÒ¶É (वरिष्ठ वैज्ञानिक गण), bÉ.´ÉÒ.¨ÉEÒ]õ¶ÉxÉ, वैज्ञानिक और ¸ÉÒ EÒ.EÒ. ºÉÉVÉEÒ´ÉÉÒ®, iÉEòxÉÒEòÒ ºÉ½ÉªÉEò xÉ ºÉÒ B¨É एफ आर आइ, कोच्ची में 15-27 सितंबर 2014 के दौरान 'मछली स्टॉक निर्धारण एवं प्रबंधन' Ê´ÉÊ¹ÉªÉ {É® +ÉªÉÉÊVÉiÉ |ÉÉÊ¶ÉIÉhÉ कार्यक्रम में भाग लिया।

|ÉEòÉ¶ÉxÉ

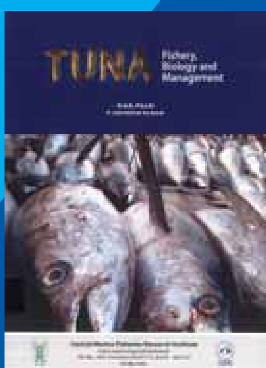

Ê{É±±ÉÉ, BxÉ.VÉÒ.EÒ. +É® ºÉiÉÒ¶É EÖ¨ÉÉ®, पी.2014.]ÚxÉÉ: ¨ÉÉiºªÉEÒ, VÉÒ´ÉÊ´ÉYÉÉxÉ एवं प्रबंधन केन्द्रीय ºÉ¨ÉpÒ ¨ÉÉÎiºªÉEòÒ +xÉÖºÉÆvÉÉxÉ ºÉÆºlÉÉxÉ, कोच्ची. 222पी.

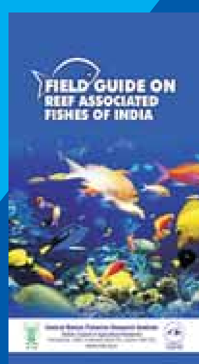

xÉÉªÉÉ®, ®ÉVÉÉ VÉÉ. +É® EòÉä®ªÉÉEòÉäºÉ, ºÉÉ¨ÉÒ 2014. ¡òÒ±b MÉÉ<b +ÉxÉ ®Ò¡ò +ºÉÉäºÉB]õ bÉ Ê¡òÉ¶ÉºÉ +É¡ò <ÎhbªÉÉ ºÉÒ B¨É B¡ò +É® +É< विशेष प्रकाशन (117). EÒxpÒªÉ ºÉ¨ÉpÒ ¨ÉÉÎiºªÉEòÒ +xÉÖºÉÆvÉÉxÉ ºÉÆºlÉÉxÉ, कोच्ची. 152पी.

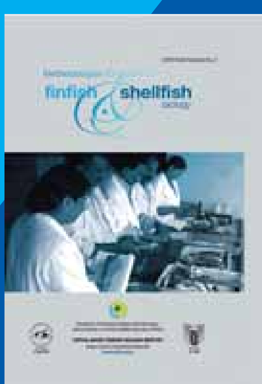

दिनेशबाबु, ए.पी., ¶ÉÉ¶ÉÉEò¨ÉÉ®, MÉÒiÉÉ, ®ÉÉ½iÉ, |ÉÉiÉ¦ÉÉ, iÉÉ¨ÉºÉ, ºÉÉVÉÒiÉÉ, ®ÉVÉÉ¶É, EÒ.B¨É. +É® ज़क्करिया, पी.यु., (ई डी एस). 2014. ¡òÒxÉ¡òÉ¶É +Éè® ¶Éä±É¡òÉ¶É VÉÒ´ÉÊ´ÉYÉÉxÉ +ध्ययन पद्धतियाँ EÒxpÒªÉ ºÉ¨ÉpÒ ¨ÉÉÎiºªÉEòÒ +xÉÖºÉÆvÉÉxÉ संस्थान, कोच्ची. 91पी.

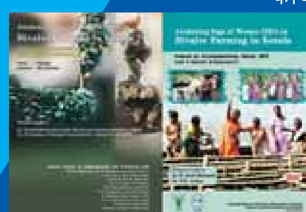

bÒ ´ÉÒ bÒ ¨ÉÉ¡òÒ

´ÉÉ{ÉxÉEò¨ÉÉ®, ´ÉÒ.{ÉÒ., ¨ÉÉ½¨¨ÉnÚ EÒ.BºÉ., +¶ÉÉäEòxÉ {ÉÒ.EÒ. +É® गोपालकृष्णन ए. 2014. Eò®±É ¨ÉÆ ÊuEò´ÉÉ]õÒ ¡òÉ¨ÉÇ EÒ ¨ÉÉÊ½±ÉÉ BºÉ BSÉ VÉÒ EòÒ VÉÉMÉ°üEòiÉÉ. bÒ ´ÉÒ bÒ ¨ÉÉ¡òÒ,ºÉÒ B¨É B¡ò +É® +É<, EòÉäÎSSÉ.

पदभार ग्रहण

1. डॉ.टी.वी.सत्यानन्दन, प्रधान वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ, कोच्ची ने दिनांक 12.09.2014 को अध्यक्ष, मात्स्यिकी संपदा निर्धारण प्रभाग का पदभार ग्रहण किया।
2. डॉ.के.के.जोषी, प्रधान वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ, कोच्ची ने दिनांक 15.09.2014 को अध्यक्ष, समुद्री जैवविविधता प्रभाग का पदभार ग्रहण किया

+दर ºÉºÉÉxÉÉÒªÉ ºlÉÉxÉÉxiÉ®hÉ

xÉÉ¨É´É {ÉnxÉÉ¨É	ºÉä	iÉEò	{ÉnÉ¦ÉÉ® ºÉÆ¦ÉÉ±ÉxÉä EòÉÒ iÉÉ®ÉÒJÉ
1. डॉ.के.के.विजयन, प्रधान वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, एम बी टी डी	सी एम एफ आर आइ मुख्यालय, कोच्ची	सी आइ बी ए, चेन्नई में निदेशक के पद पर	19.08.2014
2. श्रीमती जुलेखा, आशुलिपिक ग्रेड III	सी ए आर आइ, पोर्ट ब्लेयर	ºÉÒ B¨É B¡ò +É® +É< ¨ÉÖJªÉÉ±ÉªÉ	29.07.2014

ºlÉÉxÉÉxiÉ®hÉ

xÉÉ¨É´É {ÉnxÉÉ¨É	ºÉä	iÉEò	{ÉnÉ¦ÉÉ® ºÉÆ¦ÉÉ±ÉxÉä EòÉÒ iÉÉ®ÉÒJÉ
1. डॉ.के.विनोद, प्रधान वैज्ञानिक	मद्रास अनुसंधान केन्द्र	कालिकट अनुसंधान केन्द्र	11.07.2014
2. डी. डॉ.पी.पी.मनोजकुमार, प्रधान वैज्ञानिक	कालिकट अनुसंधान केन्द्र	टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र	11.09.2014
3. डॉ.डी. दिवु, वैज्ञानिक	कारवार अनुसंधान केन्द्र	वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र	14.07.2014
4. श्री सी.कालिदास, वैज्ञानिक	मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र	टूटिकोरिन अनुसंधान केन्द्र	15.09.2014

{ÉÖxÉ: {ÉnxÉÉ¨É

xÉÉ¨É, {ÉnxÉÉ¨É B´É Eòxp	{ÉÖxÉ: {ÉnxÉÉ¨É	{ÉnÉ¦ÉÉ® ºÉÆ¦ÉÉ±ÉxÉä EòÉÒ iÉÉ®ÉÒJÉ
1. डॉ.(श्रीमती) सुजिता तोमस, वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ मांगलूर अनु. केन्द्र	वरिष्ठ वैज्ञानिक	05.12.2007
2. डॉ.(श्रीमती) गीता शशिकुमार, वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ मांगलूर अनु. केन्द्र	वरिष्ठ वैज्ञानिक	09.06.2008
3. डॉ.(श्रीमती) एस.लक्ष्मी पिल्लै, वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ मुख्यालय	वरिष्ठ वैज्ञानिक	27.06.2008
4. डॉ.(श्रीमती) शोभा जो किषकूडन, वैज्ञानिक, सी एम एफ आर आइ मद्रास अनु. केन्द्र	वरिष्ठ वैज्ञानिक	29.08.2011

´ÉÉरष्ठ +ÉvÉEòÉÉरªÉÉå EòÉä ºÉä´ÉÉxÉä´ÉÞÉÊk {É® ºÉ±ÉÉ¨ÉÉÒ

EòÉ¨ÉiÉÉÒ ¶ÉÉÒ±ÉÉ {ÉÉÒ.VÉä.
={ÉÉ ÉxÉn¶ÉEòÉ (®É ¦ÉÉ)
31.07.2014 सी एम एफ आर आइ ¨ÉÖJªÉÉ±ÉªÉ

EòÉ BfbÉ´ÉxÉ VÉÉºÉ¡ò
ºÉ½ÉªÉEò ¨ÉÖJªÉ iÉEòxÉÉÒEòÉÒ +ÉvÉEòÉ®ÉÒ
(पुस्तकालय) 31.08.2014
ºÉÒ B¨É B¡ò +É® +É< ¨ÉÖJªÉÉ±ÉªÉ

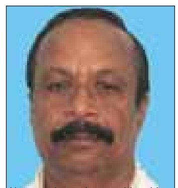
EòÉ B±É.+É®.ºÉÉ ºÉÉbEò®
iÉEòxÉÉÒEòÉÒ +ÉvÉEòÉ®ÉÒ
31.08.2014 सी एम एफ आर आइ ¨ÉÖJªÉÉ±ÉªÉ

EòÉ {ÉÉÒ±ÉxÉÉ ÉÉ´É®ò b
iÉEòxÉÉÒEòÉÒ +ÉvÉEòÉ®ÉÒ
31.08.2014 कोन्टै क्षेत्र केन्द्र

EòÉ ¶É´ÉÉ¶ÉÆEò® ´É¨ÉÉ
iÉEòxÉÉÒEòÉÒ +ÉvÉEòÉ®ÉÒ
31.08.2014 विशाखपट्टणम
IÉäjÉÉÒªÉ Eòxp

EòÉ Eò.ºÉ.¨É´ÉxÉ
iÉEòxÉÉÒEòÉÒ ºÉ½ÉªÉEò (¨ÉÉ]® bÅ<´É®)
31.08.2014 मंडपम क्षेत्रीय केन्द्र

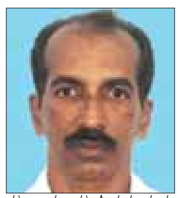
EòÉ B¨É.VÉÒ.ÉÊ¶É´ÉnÉºÉxÉ
तकनीकी अधिकारी (इलक्ट्रिकल)
30.09.2014 सी एम एफ आर आइ ¨ÉÖJªÉÉ±ÉªÉ

EòÉ Eò.Eò.¶ÉÉÊEò®xÉ
तकनीकी अधिकारी (आर्टिस्ट)
30.09.2014 सी एम एफ आर आइ ¨ÉÖJªÉÉ±ÉªÉ

EòÉ¨ÉiÉÉÒ ´ÉÉÒ.Eò.VÉÉxÉEòÉÒ
iÉEòxÉÉÒEòÉÒ +ÉvÉEòÉ®ÉÒ
30.09.2014 कालिकट अनु. केन्द्र

EòÉ ¨ÉÆMÉ±ÉÉÊºÉÆह ºÉÖ®VÉÉÊºÉÆह ºÉÉÉ±ÉÉ
iÉEòxÉÉÒEòÉÒ +ÉvÉEòÉ®ÉÒ
30.09.2014 वेरावल क्षेत्रीय केन्द्र

EòÉ¨ÉiÉÉÒ B¨É.´ÉÉÒ.ÉÊ¡ºÉÉ±ÉÉ
iÉEòxÉÉÒEòÉÒ ºÉ½ÉªÉEò
30.09.2014 कालिकट अनु. केन्द्र

B¨É < ºÉÒ +É BºÉ 2
+ÉÆiÉ®úÉ]ÅÉÒªÉ {ÉÉÊ®ºÉÆवÉÉ
2 ºÉä 5 ÉÊnºÉ¨¤É® 2014 EòÉäSSÉÉÒ, Eò®±É, ¦ÉÉ®iÉ

lÉÉÒ¨É 1	-	ºÉ¨ÉÖpÉÒ ¨ÉÉÉÎiºªÉEòÉÒ B´É {ÉªÉÉÇ´É®hÉ
lÉÉÒ¨É 2	-	VÉè´ÉÉÊ´ÉÉÊ´ÉvÉiÉÉ ´ÉÉ ºÉÆ®IÉhÉ
lÉÉÒ¨É 3	-	ºÉ¨ÉÖpÉÒ VÉÉÒ´ÉÉå EòÉÒ VÉè´É ´ÉèÉÊ´ÉvÉiÉÉ +ÉÉè® {ÉÉÉÊ®ÉκlÉÉÊiÉEòÉÒ iÉÆjÉ
lÉÉÒ¨É 4	-	उत्तरदायी ºÉ¨ÉÖpÉÒ संग्रहण +ÉÉè® संग्रहणोत्तर EòÉªÉÇ
lÉÉÒ¨É 5	-	ºÉ¨ÉÖpÉÒ VÉè´É|ÉètÉÉäÉÊMÉEòÉÒ
lÉÉÒ¨É 6	-	+ÉVÉÉÒ´ÉEòÉ +ÉÉè® +ÉlÉÇÉÊ´ÉYÉÉxÉ
ÉÊ´É¶ÉäÉ lÉÉÒ¨É:		+ÉÆiÉ®úÉ]ÅÉÒªÉ ÉÊ¶ÉIÉÉ ºÉÆMÉ]xÉ ÉÊ´ÉYÉÉxÉ (+É +É< +É <) EòÉ {ÉSÉÉºÉ 50 ´ÉÉÇ - ÉÊ¶ÉIÉÉ ºÉÆMÉÉä¹]ÉÒ +ÉªÉÉäÉÊVÉiÉ EòÉÒ VÉÉ

xÉ嶃É ºÉÉÊiÉ +É®.´ÉÒ.Eòb±É¨ÉÒxÉ I EòÉ Eò¨ÉÒ¶ÉÊxÉÆMÉ

Eò{É´ÉÉ {É1`ö 7 nJÉ

Eòb±É¨ÉÒxÉ

ºÉÒ B¨É B¡ò +É® +É< ºÉ¨ÉÉSÉÉ®

Eòb±É¨ÉÒxÉ, ºÉÒ B¨É B¡ò +É® +É< ºÉ¨ÉÉSÉÉ® Eòxpù´ÉÉ ºÉ¨ÉpÒ ¨ÉÉÎiºªÉEòÒ +xÉÖºÉÆvÉÉxÉ ºÉÆºlÉÉxÉ, EòÉSÉÒxÉ EòÉ ÊiÉ¨ÉÉ½Ò प्रकाशन है। यह प्रकाशन तिमाही के दौरान संस्थान की प्रमुख कार्यविधियों पर विवरण देने के साथ साथ अनुसंधान क्षेत्र की नई गतिविधियों और सफलताओं पर प्रकाश डालता है और प्रौद्योगिकी जानकारियों को मछुआरा समुदाय तक विकीर्णन करता है।